वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

वर्ष 2, अंक 3

जुलाई - 2015



20/-

अन्दर पढ़े...

- सूंघ कर पढ़ने के दावे हुए खोखले
- जादू-टोने के बहाने जुलम
- गैलीलियो
- पारमाणिविक सर्वनाश का विकल्प
- मानव जीवन पर मंडराते खतरे
- एवं अन्य नियमित सतम्भ

चमतकारों की पड़ताल न करने देने वाला धोखेबाज और पड़ताल न करने वाला डरपोक होता है।

Reg. No. HARHIN/2014/60580

संपादक :

आर.पी. गांधी - 93154-46140

संपादक सहयोग :-

बलवन्त सिंह - 94163-24802

गुरमीत अम्बाला - 94160-36023

अनुपम राजपुरा - 94683-89373

बलबीर चन्द लौंगोवाल - 98152-17028

हेम राज स्टेनो - 98769-53561

पत्रिका शुल्क :-

वार्षिक : 200/- रू.

विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण :

गुरमीत अम्बाला

Email:tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:

बलवन्त सिंह (प्रा.)

म.नं. 1062, आदर्श नगर, नजदीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली ।

जिला कुरूक्षेत्र - 136131 (हरियाणा)

e-mail:tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia

पेज को लाईक करें।

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है-

http://tarksheelblog.wordpress.com

पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:

www.tarksheel.org

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग :

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969

E-mail: doabacommunications@gmail.com

संकेतिका

विशेष लेख :	पृष्ठ संख्या

सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक बैठक सैणी धर्मशाला, पूण्डरी (जिला कैथल) में दिनांक 20-09-2015, दिन रविवार को प्रात: 10 बजे से 2 बजे तक होगी।

नोट: तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें।

संपर्क सूत्र:
मान सिंह– 98021 56000
कृष्ण हलवाई –98020 26000

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 30191855465 IFS: SBIN 0002420 में जमा करा सकते है। चैक और कैश शुल्क जमा कराते समय 1000 रूपये तक 50 रूपये अतिरिक्त जमा करवायें। और अपना पता मोबाईल 9416336203 पर एस.एम.एस करें।

नोट: किसी भी तरह की कानूनी कारवाई सिर्फ जगाधरी, यमुनानगर (हरियाणा) की अदालत में ही हो सकेगी।

संपादकीय

मिड-ब्रेन या ब्रेन पीडिया का फरेबी कारोबार

आजकल मिड ब्रेन पीडिया के नाम पर विभिन्न शहरों में कई जगह धडल्ले से एक फरेबी कारोबार चल रहा है। मध्यम वर्ग अपने बच्चों के आई.क्यू को लेकर कुछ ज्यादा ही चिंतित रहता है। अंधविश्वासी समाज से ग्रस्त कुछ परिवार तो विभिन्न टोने-टोटकों का सहारा लेकर बच्चों की स्मरण शक्ति को बढ़ाने की कोशिश करते रहते हैं, जबकि थोड़ा विज्ञान सम्मत परिवार ब्रेन पीडिया जैसे आधुनिक प्रपंचों में वैसे ही फंस रहा है, जैसे वह वास्तु शास्त्र, फेंगसुई जैसे कल्पित कुचक्रों में अपना शोषण कराता है।

वास्तव में वैज्ञानिक नज़रिये के अुनसार मस्तिष्क का मध्यम भाग आंखों से संबन्धित विभिन्न गतिविधियों को नियंत्रित करता है। बस, इसी का नाम लेकर ही उक्त धंधा चलाया जा रहा है, जिसमें दावा किया जाता है कि 6 साल से 15 साल तक के बच्चों को विशेष प्रशिक्षण से मानसिक तौर पर इतना चेतन कर दिया जाता है कि वे आंखों पर पट्टी बांधकर मात्र सूंघ कर ही पढ़ सकने की सामर्थ्य विकसित कर सकते हैं। उनके अनुसार बच्चा सूंघ कर पढ़ ही नहीं सकता बल्कि आंखों पर पट्टी बांधकर विभिन्न कार्डो का रंग तक भी बतला सकता है। यहां तक कि साईकल भी चला सकता है। इस तरह ब्रेन पीडिया या मिड ब्रेन दिमागी शक्ति को जागृत करने के नाम पर यह कारोबार चला रहा है जिसमें पांच हज़ार से बीस हज़ार तक की फीस वसूली जा रही है। इसकी चर्चा भारत में पिछले एक साल से होने लगी है।

इस बारे में फेडरेशन ऑफ इंण्डियन रैशनलिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष डा. नरेंद्र नायक देश भर में कार्यशालाएं लगाकर लोगों को जागरूक करने में लगे हुए हैं, जिसे निरमुक्ता, यू ट्यूब, फेस बुक पर देखा जा सकता है।

तर्कशील सोसायटी पंजाब को भी जब इस बारे में एक सूचना मिली कि इस प्रकार के प्रपंच रच कर लोगों को लूटा जा रहा है तो जांच पड़ताल आरंभ हुई। जीरा, पंजाब में इस संस्था द्वारा एक सेमिनार रखा गया, जिसमें तर्कशील साथियों ने शिरकत की और इसे अवैज्ञानिक कह कर चुनौती दी। गर्मागर्म बहस के पश्चात् 17 जून को जालंधर में ब्रेन पीडिया की वैज्ञानिक पड़ताल करने का निर्णय हुआ जिसे ब्रेन पीडिया संस्था ने स्वीकार कर लिया।तदानुसार दर्शकों की भारी उपस्थिति में इसका पर्दाफाश किया गया।संस्था के लोग अपने दावे के अनुसार प्रदर्शन करने में बुरी तरह असफल रहे।

एक व्यापारिक कारोबार से जुड़े होने के कारण और विज्ञापनों से पैसा मिलने के कारण प्रिंट मीडिया के कुछ हिस्से ने इसे नजरअंदाज करने की कोशिश की । परन्तु संचार के विभिन्न साधनों से इस कहानी को प्रचारित कर लोगों को इस फरेबी कारोबार से बचने की अपील की।

ब्रेन पीडिया असल में है क्या ?इसे बच्चों के उस खेल से भी समझा जा सकता है जिसमें आंखों पर पट्टी बांध कर किसी बच्चे को दौड़ाया जाता है। जिसे अनेक बच्चे चारों तरफ से घेर कर छेड़ते हैं। आंखों पर बंधी पट्टी को अगर कस कर बांध दिया जाये तो नाक के साथ-साथ नीचे से सब कुछ दिखता रहता है जिसे कोई भी प्रैक्टिस से देख-पढ़ सकता है, जिसे ब्रेन पीडिया वाले तीसरे नेत्र की भ्रमपूर्ण स्थिति बतलाते हैं।

तर्कशील सोसायटी के जादूगर अक्सर आंखों पर पट्टी बांधकर मोटरसाईकल चलाने का प्रर्दशन करते हैं जो कि एक प्रकार का अभ्यास ही होता है।

तर्कशील सोसायटी लोगों से अपील करती है कि इस प्रकार के फरेबी कारोबार में अपनी मेहनत की कमाई न लुटायें। यह सब लूटने का एक कारपोरेटी तरीका है। इससे बचें और वैज्ञानिक चिंतन को अपनाएं।

विशेष रिपोर्ट

सूंघ कर पढ़ने के दावे हुए खोखले :

ब्रेन पीडिया की ज़मानत ज़ब्त

राम स्वर्ण लखेवाली 095010-06626

देश विदेश में गदरी शूरवीरों एवं देशभक्तों के आदर्शोंको संभाल कर क्रांतिकारी चेतना का प्रसार देश भक्त यादगार हाल जालंध्र में 17 जून वाले दिन सुबह से ही चहल-पहल थी। हाल में प्रवेश करते ही तर्कशील साहित्य वैन एवं अन्य पुस्तक प्रदर्शनियां आने वालों का स्वागत कर रही थीं। हाल के अंदर लगा फलैक्स 'ब्रेन पीडिया द्वारा सूंघने की शक्ति के द्वारा पढ़ने के दावों का सत्य' प्रत्येक के मन में जिज्ञासा उत्पन्न कर रहा था। दावों की परख-पड़ताल का समय दोपहर एक बजे निश्चित किया गया था, परन्तु तर्कशील कार्यकर्ताओं, प्रशंसको एवं उत्साही नवयुवकों का आगमन प्रातःकाल से ही हो रहा था। सभी के मनों में होने वाली परख-पड़ताल को जानने की उत्सुकता के साथ-साथ तथा वैज्ञानिक चेतना के प्रचार-प्रसार में पिछले कई दशकों से जुटी तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि.) द्वारा आज वाले परख-पड़ताल मुकाबले में से विजयी होकर निकलने की इच्छा भी छिपी हुई थी। पिछले दो हफतों से मीडिया में आ रही खबरों द्वारा पंजाब एवं आसपस के राज्यों के लोगों मे सच एवं झूठ के सामने आने की आशा बंधी हुई थी।

चुनौती का प्रारंभ : मई के अंतिम सप्ताह में ज़ीरा में एक रेस्टोरेंट के ए.सी. हाल में ब्रेन पीडिया नाम की एक संस्था द्वारा शिक्षा की नई तकनीक के नाम पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया था, जिसमें उस इलाके के अध्यापकों एवं अन्य गणमान्य लोगों को निमंत्रण दिया गया था। सेमिनार के आरंभ में मानव के मस्तिष्क के विषय पर एक लैक्चर दिया गया तथा फिर प्रबंधकों ने अपने वास्तविक उद्देश्य की ओर आते हुए बच्चों की दिमागी शक्ति के विकास हेतु उनके द्वारा दिए जाने वाले प्रशिक्षण के बारे में बात चलाई। उन्होंने दावा किया कि संस्था द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त बच्चों का दिमागी सामर्थ्य दुगना-चौगुना हो जाता है एवं वे आंखों के बजाए नाक द्वारा सूंघ कर पढ़ने के योग्य हो जाते हैं। उनके द्वारा उसी अवसर पर अपने प्रशिक्षित बच्चों को लोगों के सामने लाया गया, जोकि आंखों पर पट्टी बांध कर पेनों के रंग, मोबाईलों के माडलों के बारे में बता रहे थे तथा लोगों द्वारा दिए गए विजिटिंग कार्ड भी पढ़ कर सुना रहे थे। इसी दौरान प्रबंधकों ने मंच पर गुरचरण नूरपुर को अपनी बात रखने के लिए आमंत्रित किया तो उनके द्वारा मौके पर की गई परख में बच्चे सफल नहीं हुए और पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर देने में असफल रहे। उन्होंने सोसायटी की जीरा इकाई की तरफ से इस समस्त घटनाक्रम को गैर वैज्ञानिक बताया तथा एवं लोगों को गुमराह करके लूटने का ढंग कहा। इसके साथ ही उन्होंने सूंघ कर पढ़ सकने के दावे को चुनौती देते हुए सोसायटी द्वारा रखे गए पांच लाख के ईनाम की पेशकश भी की। बाजी उल्ट पड़ती देखकर प्रबंधकों ने सेमिनार तुरंत प्रभाव से बंद कर दिया। एकत्र हुए लोग चर्चा करते हुए हाल में से निकल कर घरों को लौट गए। तुरंत ही सोसायटी के हाजिर सदस्यों ने ब्रेन पीडिया के हाजिर प्रबंधकों को सोसायटी का इनाम प्राप्त करने हेतु 10 हजार रुपए जमानत के रूप में जमा करवाने के लिए कहा। प्रबंधकों ने जमानत देने एवं परख के लिए तीन जून का समय

तय कर लिया।

चुनौती का प्रथम दिन– तीन जून को जीरा इकाई द्वारा ब्रेन पीडिया प्रबंधकों द्वारा प्रशिक्षित बच्चों की परख के लिए सेमिनार का प्रबंध किया गया, जिसमें इलाके के लोग एवं सोसायटी के सदस्य हाजिर हुए, परन्तु चुनौती को स्वीकार करने के लिए ब्रेन पीडिया संस्था वाले नहीं पहुंचे। इस सेमिनार में सोसायटी के प्रांतीय अध्यक्ष राजिन्द भदौड़ एवं बरनाला जोन के अध्यक्ष गुरप्रीत छहना भी हाजिर थे। पीडिया प्रबंधकों के साथ बार-बार फोन द्वारा सम्पर्क करने पर उन्होंने जीरा शहर के बाहर की तरफ एक होटल में आने के लिए कहा, क्योंकि वे जनसमूह में नहीं आना चाहते थे। तुरंत मीटिंग करके जीरा इकाई के कुछ सदस्य वहां पर पहुंचे। सेमिनार की समाप्ति के उपरांत राजिन्द्र भदौड़ की हाजिरी में ब्रेन पीडिया वालों के साथ सूंघने की शक्ति द्वारा पढ़ने के दावे की परख हेतु 17 जून का दिन निश्चित किया गया। इसके लिए लिखित अनुबंध (इकरारनामे) पर तय हुई शर्तों के अनुसार पीडिया द्वारा प्रशिक्षित बच्चों की नज़र बंद करने के उपरांत उन्होंने सूंघ कर पढ़ने का प्रदर्शन करना था। इसमें जजों की भूमिका के तौर पर देशभक्त यादगार हाल के ट्रस्टी मैंबरों पर सहमति बन गई। मौके पर पीडिया के अध्यक्ष गुरदेव सिंह सैनी निवासी होशियारपुर ने जमानत की राशि में से 5 हजार रुपए मौके पर दे दिए एवं शेष एक-दो दिन में जीरा इकाई तक पहुंचाने का लिखित में आश्वासन दिया। मीडिया की मौजूदगी में ब्रेन पीडिया एवं तर्कशील सोसायटी की चुनौती की प्रारंभिक कार्रवाई सम्पन्न हुई।

जांच-पड़ताल वाला दिन– 17 जून को दोपहर तक पंजाब एवं आसपास से तर्कशील कार्यकर्त्ता देशभक्त यादगार हाल जालंधर में पहुंच गए। परख के समय का दिन था। सभी के मन में उत्साह था। तर्कशील पुस्तक प्रदर्शनियों का अवलोकन करते हुए स्नेही लोग ऊपर वाले लैक्चर हाल में पहुंच रहे थे। हाल में सोसायटी की प्रांतीय कार्यकारिणी की आपात् बैठक में समारोह की रूपरेखा तैयार की गई। कार्यक्रम दोपहर 12:30 बजे से आरंभ करने का फैसला हुआ। निश्चित समय पर बाबा ज्वाला सिंह हाल में कार्यक्रम की शुरूआत हुई। मंच पर जजों की भूमिका के तौर पर देशभक्त यादगार कमेटी के सचिव डा. रघुबीर कौर, ट्रस्टी का. गुरमीत, का. अजमेर सिंह एवं बलबीर कौर बुंडाला विराजमान थे। खचाखच भरे हुए हाल में मीडिया कर्मी भी हाजिर थे। शुरूआत में हाल की प्रथम पंक्ति में ब्रेन पीडिया के सदस्यों के लिए आरक्षित कुर्सियां खाली दिखाई दे रही थी। मंच की कार्रवाई चलाने के लिए राजिन्द्र भदौड़ ने कार्यक्रम प्रारंभ किया। उन्होंने ब्रेन पीडिया वालों के साथ हुआ लिखित इकरारनामा सभा में उपस्थित दर्शकों को पढ़कर सुनाया एवं पूरे प्रदेश में बच्चों के दिमागी विकास के नाम पर किए व्यापार की चर्चा की। उन्होनें दर्शकों को पंजाब की जालंधर स्थित प्राईवेट यूनिवर्सिटी के पम्फलेट पर पिछली ओर ब्रेन पीडिया जैसी किसी संस्था का छपा हुआ मिथ्या प्रचार भी दर्शकों के साथ सांझा किया। एक दिन पूर्व मंडी डबवाली में घटित एक सुखद घटना, जिसमें कथित दिमागी विकास के एक सेमिनार के दौरान तर्कशील नेताओं द्वारा दखल देकर की गई पेशकदमी से प्रबंधकों को बच्चों के अभिभावकों से एकत्र किए गए एक लाख ८० हजार रुपए मौके पर ही वापिस लौटाने पड़े तथा पुलिस स्टेशन में जाकर लिखित में क्षमा प्रार्थना भी करनी पड़ी थी। इस जानकारी ने वहां उपस्थित दर्शकों में और अधिक उत्साह भर दिया। परख पड़ताल का समय हो चुका था, परन्तु ब्रेन पीडिया के प्रबंधक एवं बच्चे गैर हाजिर थे। उपस्थित दर्शको में उनके आने की उत्सुकता बनी हुई थी। मीडिया के कैमरे परख के समय की प्रतीक्षा में थे। पीडिया प्रबंधकों ने आने की सूचना दी, परन्तु वे पहले एक मीटिंग करना चाहते थें। अनुबंध (इकरारनामे) के अनुसार मंच से जजों की सहमति से उनको परख के लिए बच्चों समेत आने का समय निश्चित किए जाने पर ब्रेन पीडिया के प्रशिक्षण प्राप्त तीन बच्चे मंच पर आ पहुंचे।

उनके साथ पीडिया के प्रबंधक भी थे। उन्होंने प्रथम बालक मंच पर भेजा। तनाव, तल्खी एवं उत्साह के चलते मंच पर जजों के सम्मुख उपस्थित बच्चे की नज़र को बंद करने के लिए आंखों पर पट्टी बांधने की जिम्मेदारी वेद प्रकाश जीरा एवं राजेंद्र भदौड़ ने निभाई। हाल में उपस्थित दर्शकों के मन में बच्चे को किसी तरफ से दिखाई दे सकने की शंका बरकरार थी। जजों द्वारा बच्चे को परख के लिए हुई सहमति के उपरांत उसे पढ़ने के लिए पठन सामग्री दी गई। उसने उसे नाक द्वारा सूंघ कर पढ़ने का प्रयत्न किया। उस पठन सामग्री को नाक से लगाते हुए बच्चा बोला, 'व्हाईट कलर' (क्योंकि कागज प्रायः सफेद रंग का होता है, परंतु उस बच्चे को पढ़ने के लिए दी गई पठन सामग्री हल्के गुलाबी रंग की थी।) फिर उसने सूंघने के द्वारा पढ़ने का प्रयत्न आरंभ किया।....एक दो बार परंतु वह पढ़ न सका। जजों की उपस्थिति में उस द्वारा माईक द्वारा यह बोलने पर कि मैं नहीं पढ़ सकता....मुझे पंजाबी पढ़नी नहीं आती, सुनते ही हाल में तालियों की गूंज सुनाई दी। जज की भूमिका के तौर पर का. गुरमीत ने दर्शकों से संबोधित होते हुए बताया कि बच्चे को उसके बताने के अनुसार यद्यपि पंजाबी पढ़नी नहीं आती, परन्तु उसे दी गई पठन सामग्री अंग्रेजी में थी जिसे वह पढ़ सकने में असफल रहा है। पीडिया प्रबंधक हताशा की हालत में बच्चे को मंच से ले गए। वे यह भी कह रहे थे कि बच्चा नर्वस हो गया था, परन्तु जजों ने बच्चे द्वारा सूंघ कर पढ़ सकने के दावे को सत्य प्रमाणित न होने पर पीडिया के प्रथम प्रयत्न को असफल होने का निर्णय सुनाया। मीडिया के कैमरों ने परख में सूंघ कर पढ़ने के प्रथम प्रयत्न की असफलता को अपने कैमरों में कैद कर लिया। पीडिया प्रबंधक फिर एक बच्ची को मंच पर लेकर आए। जजों ने उस बच्ची को अपने पास कुर्सी पर बिठाया। जब तर्कशील नेताओ ने पट्टी एवं ऐनक के साथ उसकी नज़र बंद की तो जजों ने बच्ची से उसे पेश आ रही किसी परेशानी के बारे में पूछा तो उसने बिल्कुल सामान्य होने की बात कही। परख का द्वितीय अवसर था। बच्ची को बंद लिफाफे में से निकाल कर एक कागज पढ़ने के लिए दिया गया, जिसकी एक प्रति जजों के पास भी थी। बच्ची उसे सूंघ कर पढ़ने का प्रयत्न करने लगी। जब समीप खड़े हुए पीडिया प्रबंधको ने बच्ची के लिए बड़े अक्षरों वाले लेखन की मांग की तो तर्कशील नेताओं ने वह भी तुरंत उपलब्ध करवा दी। बच्ची लेखन को नाक द्वारा सूंघती रही और फिर नहीं में सिर फेर गई। जब बच्ची द्वारा पढ़ न सकने की बात माईक द्वारा हाल में गूंजी तो ब्रेन पीडिया की हार निश्चित हो गई, क्योंकि उन द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त तीसरा बच्चा परख में शामिल होने से जवाब दे गया था। बच्चों के असफल रहने पर मीडिया कर्मियों एवं हाल में से आई आवाजों ने बच्चों के साथ आए हुए प्रबंधकों को स्वयं ही आंखों पर पट्टी बांध कर सूंघने की शक्ति के द्वारा पढ़ने के लिए कहा गया, परन्तु वे सहमत नहीं हुए। उन द्वारा सूंघ कर पढ़ने का दावा खोखला साबित हो गया था। जज साहिबान की कमेटी ने दोनों बच्चों द्वारा सूंघ कर पढ़ने में असफल रहने पर ब्रेन पीडिया को मिली हार का फैसला सुनाया। इसके साथ ही दावा सच साबित न कर सकने के कारण ब्रेन पीडिया की जमानत राशि भी जब्त हो गई। मीडिया के कैमरो की कार्यशीलता के चलते उपस्थित तर्कशील स्नेहियों का उत्साह देखते ही बनता था, जबकि ब्रेन पीडिया के प्रबंधक लज्जित खड़े थे।

इसी उत्साहवर्धक माहौल में मंच पर जीरा इकाई के आगू वेद प्रकाश अपने साथ नए प्रशिक्षित किए गए बच्चों को लेकर आए, जिन्होंने आंखों पर काली पट्टी बांध कर पूछे गए प्रश्नों के तुरंत उत्तर दिए एवं कागज के रंग एवं उन पर लिखे अक्षरों को पढ़ने में तनिक भी देरी नहीं की। यह वैज्ञानिक प्रशिक्षण का कमाल था। यह दृश्य मीडिया कर्मियों एवं उपस्थित दर्शकों के मनों को भा गया। मंच से कानून विभाग के अध्यक्ष एडवोकेट हरिन्दर लाली ने जादुई विज्ञापनों से संबंधित कानूनी धाराओं पर चर्चा की, जबकि सुरजीत दौधर ने ज्योतिष की

धोखाधड़ी का सारतत्व दर्शकों के साथ सांझा किया। इस अवसर पर बोलते हुए हेमराज स्टेनो ने देशभर में फैली हुई ब्रेन पीडिया जैसी संस्थाओं के पीछे कार्य कर रही साजिशों एवं छिपे हुए कारणों को पहचानने की जरूरत पर जोर दिया ताकि उनके द्वारा की जा रही लूट को रोका जा सके। कार्यक्रम की समाप्ति पर देशभक्त यादगार कमेटी के सचिव डा. रघुबीर कौर ने वैज्ञानिक चेतना के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पर जोर देते हुए लोगों का शोषण करने में लगी संस्थाओं की असलियत उजागर करने का आह्वान किया एवं तर्कशील लहर के कार्यकर्त्ताओं को जुटाए जा रहे इस प्रकार के प्रयत्नों के लिए मुबारकवाद दी। इस परख समारोह में सोसायटी की राज्य कार्यकारिणी के सदस्यों सुखविन्द्र बागपुर, चनन वांदर, भूरा सिंह महमा सरजा के अतिरिक्त समस्त प्रांत से पहुंचे नेताओ में कुलजीत अबोहर, मुखविन्द्र चोहला, सुरजीत मोहाली, राम सिंह निर्माण, दलबीर कटानी, राजवंत बागड़िया, सुरिन्द्र गंजुआना, राम कुमार पटियाला, अजीत प्रदेशी, सरबजीत ओखला, बलराज मौड़, जस्स फरीदकोट इत्यादि तर्कशील आगू उपस्थित थे। समस्त प्रबंधों की देखरेख की जिम्मेवारी सुखदेव फगवाड़ा, जालंधर जोन एवं शाहकोट इकाई ने बखूबी निभाई।

तर्कशील कार्यकर्त्ता उत्साहवर्धक सरूर के साथ हाल से बाहर आ रहे थे, जबकि ब्रेन पीडिया के प्रबंधक अपने प्रशिक्षणार्थियों के साथ लज्जा में सिर झुकाए हुए वापिस लौट रहे थे। परख के अवसर पर वैज्ञानिक चेतना एवं तर्कशीलता की जीत एवं झूठे दावों की हार आज के समारोह का हिस्सा थी, जिस पर प्रतिक्रम जानने के लिए मीडिया के कैमरे प्रांतीय अध्यक्ष राजिन्द्र भदौड़ के इर्द-गिर्द कार्यशील थे।

चर्चा देश-विदेश में - ब्रेन पीडिया की हार एवं तर्कशील विचारों की जीत की खबर कुछ क्षणों में ही सोशल मीडिया के द्वारा देश-विदेश में फैल गई। समारोह में बने वीडियो क्लिप सात समुन्द्र पार रह रहे स्नेहियों के मोबाइलों में खुलने लगे। अगले दिन मीडिया ने इस सरगर्मी को महत्वपूर्ण पन्नों पर स्थान दिया। यह खबर दूरदर्शन पर भी अहम् खबरों में चर्चा का विषय बनी। विदेशों मे रेडियो पर हुई बहसों में तर्कशील आगुओं ने शमूलियत की। टोरांटों में चल रहे तहलका रेडियो के होस्ट बलतेज पन्नू, कैलिफोर्निया में रेडियो पंजाब के होस्ट जसकरण सिंह एवं टोरांटो से ही नगारा रेडियो के होस्ट चरणजीत बराड़ ने राजिन्द्र भदौड़ के साथ इस मुद्दे पर चर्चा की, जिसमें प्रवासी पंजाबियों ने भरपूर समर्थन दिया। रेडियो चन्न प्रदेशी में परमिन्द्र टिवाणा ने यादगार कमेटी के सचिव डा. रघुबीर कौर, तर्कशील आगू सुखदेव फगवाड़ा के साथ ब्रेन पीडिया के प्रबंधक गुरदेव सैनी को साथ लेकर चर्चा चलाई। रेडियो पंजाब टूडे के होस्ट हरमेल प्रीत ने राम स्वर्ण लक्खेवाली एवं गुरदेव सैनी के साथ इस मुद्दे पर चर्चा की। इस चर्चा में एक श्रोता ने ब्रेन पीडिया प्रबंधकों को नेत्रहीन व्यक्तियों के लिए सूंघने की शक्ति के द्वारा पढ़ने का प्रशिक्षण देने की मांग की, जिसका जवाब पीडिया प्रबंधक एक दिन पहले ही नहीं में दे चुके थे। देश-विदेश में चली इस चर्चा ने तर्कशील लहर के कार्यो एवं प्रयत्नों का सकारात्मक प्रभाव जनता के समक्ष रखा।

जगतार जौहल मनीला से- इस स्नेही श्रोता ने पंजाब टूडे की चर्चा मनीला में सुनी एवं एक संदेश के द्वारा यह टिप्पणी की, 'ब्रेन पीडिया वालों का पर्दाफश करके तर्कशीलों ने बहुत सराहनीय कार्य किया है। आजकल अनेक प्रकार के डाकू मार्किट में आ गए हैं।' ब्रेन पीडिया की चुनौती से आरंभ हुई यह सरगर्मी वैज्ञानिक दृष्टिकोण, योग्य नेतृत्व एवं समयानुसार लिए गए सही फैसलों के साथ जीत में तबदील हुई। इस विजयी अंदाज को अंधविश्वासों के विरुद्ध संघर्ष में आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा के तौर पर लेना समय की ज़रूरत है।

-हिन्दी अनुवाद
बलवंत सिंह लैक्चरार

22 अगस्त जन्म दिवस पर विशेषः

रामस्वरूप वर्मा

-भगवान स्वरूप कटियार

प्रखर एवं प्रतिबद्ध समाजवादी रामस्वरूप वर्मा आजादी के बाद भारतीय राजनीति में सक्रिय उस पीढ़ी के राजनेता थे जिन्होंने विचारधारा और व्यापकजनहितों की राजनीति के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया। बेशक वे अपने समय की राजनीति के एक फिनॉमिना (परिघटना) थे। लगभग पच्चास साल तक राजनीति में सक्रिय रहे रामस्वरूप वर्मा को राजनीति का कबीरकहा जाता है। डॉ. राममनोहर लोहिया के निकट सहयोगी और उनके वैचारिक मित्र तथा 1967 में उत्तर प्रदेश सरकार के चर्चित वित्तमंत्री रामस्वरूप वर्मा जिन्होंने उस समय 20 करोड़ लाभ का बजट बना कर पूरे आर्थिक जगत को अचम्भित किया। उनका सार्वजनिक जीवन सदैव निष्कलंक, निडर, निष्पक्ष और व्यापक जनहितों को समर्पित रहा। राजनीति में जो मर्यादा और मानदण्ड उन्होंने स्थापित किये और जिन्हें उन्होंने स्वयं भी जिया उनके लिए वे सदैव आदरणीय और स्मरणीय रहेंगे। वेशक उत्तर प्रदेश विधान सभा के इतिहास में रामस्वरूप वर्मा मूल्यों, सिद्धांतों, जनसरोकारों की राजनीति की एक मिसाल के रूप में सदैव प्रेरणास्रोत रहेंगे।

22 अगस्त,1923 को कानपुर (वर्तमान कानपुर देहात) के ग्राम गौरीकरन के एक किसान परिवार में जन्मे रामसवरूप ने राजनीति को अपने कर्मक्षेत्र के रूप में छात्र जीवन में ही चुन लिया था। बावजूद इसके उन्होंने छात्र राजनीति में कभी हिस्सा नहीं लिया। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा कालपी और पुखरायां में हुई जहां से उन्होंने हाई स्कूल और इंटर की परीक्षाएं उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण कीं। वर्मा जी सदैव मेधावी छात्र रहे और स्वभाव से अत्यन्त सौम्य विनम्र मिलनसार, पर आत्मसम्मान उनके व्यक्तित्व में कूट-कूट कर भरा था। उन्होंने 1949 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. और इसके बाद एल.एल.बी. डिग्री हासिल की।उन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा भी उत्तीर्ण की और इतिहास में सर्वोच्च अंक पाये जबकि इतिहास उनका विषय नहीं था। पर नौकरी न करने के निश्चय के कारण साक्षात्कार में शामिल नहीं हुए। इनके पिता का नाम वंशगोपाल था। वर्मा जी अपने चार भाइयों में सबसे छोटे थे। अन्य तीन भाई गांव में खेती-किसानी करते थे पर उनके सभी बड़े भाइयों ने वर्मा जी की पढ़ाई-लिखाई पर न सिर्फ विशेष ध्यान दिया बल्कि अपनी रुचि के अनुसार कर्मक्षेत्र चुनने के लिए भी प्रोत्साहित किया। पढ़ाई के बाद सीधे राजनीति में आने पर परिवार ने कभी आपत्ति नहीं की बल्कि उन्हें प्रोत्साहन और सहयोग दिया। सर्वप्रथम वे 1957 में सोशलिस्ट पार्टी से भोगनीपुर विधानसभा क्षेत्र उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य चुने गये। उस समय उनकी उम्र मात्र 34 वर्ष की थी। 1967 में संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी से, 1969 में निर्दलीय, 1980, 1989 में शोषित समाजदल से उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य चुने गये। 1991 मे छठी बार शोषित समाजदल से विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। जनान्दोलनों में भाग लेते हुए वर्मा जी ने 1955, 1957, 1958, 1960, 1964, 1969, और 1976 में आई.पी.सी. की धारा 3, स्पेशल एक्ट धारा 144 डी.आई.आर. आदि के अन्तर्गत जिला जेल कानपुर बांदा, उन्नाव, लखनऊ तथा तिहाड़ जेल दिल्ली में राजनैतिक बन्दी के रूप में सजाएं भोगीं। वर्मा जी ने 1967-68 में उत्तर प्रदेश की संविद सरकार में वित्तमंत्री के रूप में 20 करोड़ के लाभ का बजट पेश कर पूरे

आर्थिक जगत् को अचम्भे में डाल दिया। वेशक संविद सरकार की यह बहुत बड़ी उपलब्धि थी। कहा जाता है कि एक बार सरकार घाटे में आने के बाद उसे फायदे में नहीं लाया जा सकता है अधिक से अधिक घाटा कम किया जा सकता है। दुनिया के आर्थिक इतिहास में यह एक अजूबी घटना थी जिसके लिए विश्व मीडिया ने वर्मा जी से साक्षात्कार कर इसका रहस्य जानना चाहा। संक्षिप्त जवाब में तो उन्होंने यही कहा कि किसान से अच्छा अर्थशास्त्री और कुशल प्रशासक कोई नहीं हो सकता क्योंकि लाभ-हानि के नाम पर लोग अपना व्यवसाय बदलते रहते हैं पर किसान सूखा-बाढ़ झेलते हुए भी किसानी करना नहीं छोड़ता । वर्मा जी ने कृषि सिंचाई, शिक्षा, चिकित्सा, सार्वजनिक निर्माण जैसे तमाम महत्त्वपूर्ण विभागों को गत वर्ष से डेढ़ गुना बजट देते हुए तथा कर्मचारियों के मंहगाई भत्ते में वृद्धि करते हुए फायदे का बजट पेश किया।

अपनी पढ़ाई-लिखाई पूरी करते करते वर्मा जी समाजवादी विचारधारा के प्रभाव में आ गये थे और डॉ. राम मनोहर लोहिया को अपनी पार्टी के लिए एक युवा विचारशील नेतृत्व मिल गया जिसकी तलाश उन्हें थी। डॉ. लोहिया को वर्मा जी के व्यक्तित्व की सबसे महत्त्पूर्ण बात यह लगी कि उनके पास एक विचारशील मन है। वे संवेदनशील हैं, उनके विचारों में मौलिकता है। इन सबसे बड़ी बात यह थी कि किसान परिवार का यह नौजवान प्रोफैसरी और प्रशासनिक रुतबे की नौकरी से मुंह मोड़ कर राजनीति को सामाजिक कर्म के रूप में स्वीकार कर रहा है। डॉ.लोहिया वर्मा जी को अपना सबसे विश्वसनीय वैचारिक मित्र मानते थे क्योंकि वर्मा जी भी डॉ. लोहिया की तरह देश और समाज के लिए कबीर की तरह अपना घर फूंकने वाले थे। वर्मा जी अपने छात्र जीवन में आजादी की लड़ाई के चश्मदीद गवाह रहे पर उसमें हिस्सेदारी न कर पाने का मलाल उनके मन में था। इसीलिए भारतीय प्रशासनिक सेवा की रुतबेदार नौकरी को लात मार कर राजनीति को देश सेवा का माध्यम चुना और राजनीति भी सिद्धांतों और मूल्यों की। उन्होंने उत्तर प्रदेश विधान सभा के लिए पहला चुनाव 1953 में भोगनी पुर चुनाव क्षेत्र से एक वरिष्ठ कांग्रेसी नेता रामस्वरूप गुप्ता के विरूद्ध लड़ा और महज चार हजार मतों से वे हारे पर 1957 के चुनाव में उन्होंने रामस्वरूप गुप्ता को पराजित किया । उनके प्रतिद्वन्दी रामस्वरूप गुप्ता जो उम्र उनके पिता तुल्य थे और कांग्रेस के धनाढ्य वरिष्ठ नेता थे। गुप्ता जी ने वर्मा जी से कहा कि रामस्वरूप अभी तुम नौजवान हो और किसान परिवार से हो, राजनीति में बहुत पैसा खर्च होता है और तमाम दांव-पेच अजमाये जाते हैं। तुम्हारे जैसे भले और गरीब लोगों के लिए यह कर्म उपयुक्त नहीं हैं चाहो तो प्रोफेसरी वगैरह तुम्हें मिल सकती है और इसमें मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूँ। पर वर्मा जी नहीं डिगे और आगामी 1957 में रामस्वरूप गुप्ता को हरा कर विधान सभा में पहुंचे और सिद्ध कर दिया कि राजनीति सिर्फ धनवानों का खेल नहीं है बल्कि किसानों और मजदूरों के बेटे भी वहां पहुंच कर अपने वर्ग के हितों को रख सकते हैं।

उनका ध्येय एक ऐसे समाज की संरचना करना था जिसमें हर कोई पूरी मानवीय गरिमा के साथ जीवन जी सके। वे सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक बराबरी के प्रबल योद्धा थे और इसके लिए वे चतुर्दिक क्रांति अर्थात् सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक क्रांति की लड़ाई एक साथ लड़े जाने पर जोर देते थे। वर्मा जी ने 1968 में अर्जक संघ का गठन किया और अर्जक साप्ताहिक का सम्पादन और प्रकाशन प्रारम्भ किया। अर्जक संघ अपने समय का सामाजिक क्रांति का एक ऐसा मंच था जिसने अंधविश्वासों पर न सिर्फ हमला किया बल्कि उत्तर भारत में महाराष्ट्र और दक्षिण भारत की तरह सामाजिक न्याय के आन्दोलन की शुरुआत की। उन्हें उत्तर भारत का अम्बेडकर भी कहा गया। मंगलदेव विशारद और

चौ. महाराज सिंह भारती जैसे तमाम समाजवादी वर्मा जी के इस सामाजिक न्याय के आन्दोलन से जुड़े और अर्जक साप्ताहिक में क्रांतिकारी वैचारिक लेख प्रकाशित हुए । उस समय का अर्जक साप्ताहिक का संग्रह विचारों का महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं उत्तर प्रदेश में सामाजिक बदलाव की जिस जमीन पर मायावती और मुलायम सिंह सत्ता की राजनीति कर रहे हैं और अपनी अपनी सरकारें उसी ब्राह्मणवादी ढर्रे पर चला रहे हैं। इस सामाजिक और राजनैतिक चेतना की पृष्ठभूमि वर्मा जी ने अर्जकसंघ के आन्दोलन के जरिये तैयार की थी पर उन्हें दुःख था सपा और बसपा ने ब्राह्मणवाद और कार्पोरेट ताकतों से गठजोड़ कर जनता को धोखा दिया और सामाजिक न्याय के आन्दोलन को नुकसान पहुंचाया। वी.पी. सिंह ने भले ही सामाजिक न्याय के लिए अपनी सरकार कुर्बान की हो पर मायावती और मुलायम सिंह सत्ता के लिए ब्राह्मणवाद से गठजोड़ ही करते रहे।

वर्मा जी ने 'क्रांति क्यों और कैसे' ब्राह्मणवाद की शव परीक्षा, अछूत समस्या और समाधान ब्राह्मण महिमा क्यों और कैसे? मनुस्मृति राष्ट्र का कलंक, निरादर कैसे मिटे, अम्बेडकर साहित्य की जब्ती और बहाली, भंडाफोड़ मानववादी प्रश्नोत्तरी जैसी महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं जो अर्जक प्रकाशन से प्रकाशित हुई। महाराज सिंह भारती और रामस्वरूप वर्मा की जोड़ी 'मार्क्स और ऐंजिल' जैसे वैचारिक मित्रों की जोड़ी थी और दोनों का अन्दाज बेबाक और फकीराना था। दोनों किसान परिवार के थे और दोनों के दिलों में गरीबी, अपमान अन्याय और शोषण की गहरी पीड़ा थी। चौ. महाराज सिंह भारती ने सांसद के रूप में पूरे विश्व का भ्रमण कर दुनिया के किसानों और उनकी जीवन पद्धति का गहरा अध्ययन किया और उन्होंने महत्त्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं। 'सृष्टि और प्रलय' उनकी पुस्तक डार्विन की 'ऑरजिन ऑफ स्पेसीज़' की टक्कर की सरल हिन्दी में लिखी गयी पुस्तक है जो आम आदमी को यह बताती है कि यह दुनिया कैसी बनी ?और यह भी बताती है कि इसे ईश्वर ने नहीं बनाया है बल्कि यह स्वतः कुदरती नियमों से बनी है और इसके विकास में मनुष्य के श्रम की अहम भूमिका है। उनकी 'ईश्वर की खोज' और भारत का नियोजित दिवाला जैसी अनेक विचार परक पुस्तकें हैं जो अर्जक प्रकाशन से प्रकाशित हुई हैं। इन दोनों महापुरुषों का साहित्य आज के दौर में हमारी महत्त्वपूर्ण चेतना शक्ति हो सकती है जब हम कार्पोरेट पूंजी और ब्राह्मणवाद के शिकंजे में फँसे हुए हैं।

बिहार के लेनिन कहे जाने वाले जगदेव बाबू ने वर्मा जी के विचारों और उनके संघर्षशील व्यक्तित्व से प्रभावित होकर शोषित समाज दल का गठन किया। जगदेव बाबू के राजनैतिक संघर्ष से आतंकित हो कर उनके राजनैतिक प्रतिद्वन्दियों ने उनकी हत्या करा दी। जगदेव बाबू की शहादत से शोषित समाज दल को गहरा आघात लगा, पर सामाजिक क्रांति की आग और तेज हुई। जगदेव बाबू बिहार के पिछड़े वर्ग के किसान परिवार से थे और वर्मा जी की तरह वे भी अपने संघर्ष के बूते बिहार सरकार में मंत्री रहे वर्मा जी का संपूर्ण जीवन देश और समाज को समर्पित था। उन्होंने 'जिसमें समता की चाह नहीं/ वह बढ़िया इंसान नहीं, समता बिना समाज नहीं/बिन समाज जनराज नही' जैसे कालजयी नारे गढ़े। राजनीति और राजनेता के बारे में एक साक्षात्कार में दिया गया उनका बयान गौरतलब हैं राजनीति के बारे में उनका मानना है कि यह शुद्ध रूप से अत्यन्त संवेदनशील सामाजिक कर्म है और एक अच्छे राजनेता के लिए सबसे ज्यादा जरूरी है कि उसे देश और स्थानीय समाज की समस्याओं की गहरी जमीनी समझ हो और उनको हल करने की प्रतिबद्धता हो । जनता अपने नेता को अपना आदर्श मानती है। इसलिए सादगी, ईमानदारी, सिद्धांतवादिता के साथ-साथ कर्तव्यनिष्ठा निहायत ज़रूरी है । वर्मा जी ने विधायकों के वेतन बढ़ाये जाने का विधान सभा में हमेशा विरोध किया

शेष पृष्ठ 34 पर...

जादू-टोने के बहाने जुल्म

(बिसाहिन, श्यामा और तीरथ : अपमान और अत्याचार)

दिनेश अकुला

कुछ-कुछ देर पर बिसाहिन बाई थूकती रहती है। वह बार-बार थूक कर अपना मुंह साफ रखना चाहती है। उसे जबरदस्ती पेशाब पिलाया गया। पेशाब का कड़वा स्वाद उसके जुबान से अभी भी उतरा नहीं है। उसे पेशाब पीने को मज़बूर किया गया। दहशत और भय पैदा कर उसे इसके लिए मज़बूर किया गया। सरेआम गांव में नंगा घुमाया गया और 14 साल से उसे जादू टोना के नाम पर सताया जाता रहा।

गरियाबंद जिले से छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर 90 कि.मी. है। बिसाहिन गरियाबंद के लक्षखेरा इलाके में रहती है। वह अपने माटी से बने घर में अपने से जुड़ी भयंकर यादों को भुलाने की कोशिश कर रही है। करीब दशक भर से वह इसके लिए पूरी कोशिश में है। बिसाहिन अपने अपमान और पीड़ा को भुलाना चाहती है। इस अपमान में उसके साथ दो और महिलाएं भी रहीं। इन्हें भी बिसाहिन की तरह उनके जुल्म का शिकार होना पड़ा। इन्हें गांव वाले टोनही (जादू-टोना करने वाली महिलाएं) कह कर बुलाते रहे। बिसाहिन बाई के संग श्यामा और तीरथ बाई भी इंसाफ की बाट जोह रही हैं। तीनों को नंगा घुमाया गया। सिर मुंडवा दिया गया। जबरदस्ती पेशाब पिलाया गया। इन पर जादू-टोना करने का आरोप लगाया गया। पूरा लक्षखेरा इन्हें टोनही नाम से बुलाने लगा।

टोनही मामले में बीस दोषियों में से 17 दोषियों को साल भर के कारावास की सजा मिली, लेकिन मामला हाईकोर्ट में जाने के बाद वह फिर छोड़ दिए गए। निचली अदालत ने सभी दोषियों को पीड़ितों को एक लाख रुपए देने के आदेश दिए, लेकिन अब तक उन्हें कोई रकम नहीं मिली है। मामले में पीड़ितों की चूड़ियां और दूसरे गहने भी अभी तक अदालती निगरानी में हैं। जादू-टोना जैसे मामलों को लेकर छत्तीसगढ़ में महिलाओं पर जुल्म और अत्याचार पहले भी होते रहे हैं। पिछले एक दशक में राज्य में करीब 1500 मामले सामने आए। इनमें 210 मौतें भी हुई। आपबीती को याद कर बिसाहिन की आंखों में आंसू बहने लगते हैं। बिसाहिन कहती है कि उन लोगों ने मेरा सर मुंडवा दिया। मुझे गांव वालों के सामने नंगा घुमाया। उस दिन को सोच मुझे बुखार चढ़ जाता है। यह बताते हुए बिसाहिन की आंखों के आंसू कुछ देर थम जाते हैं। अपनी हरी साड़ी के पल्लू से बिसाहिन अपना चेहरा पोंछते हुए कहती है कि इस घटना को 14 साल हो गए। लेकिन अब भी वह इस घटना को याद कर अंदर से हिल जाती है। मामले की दूसरी भुक्तभोगी तीरथ बाई बताती है कि सुबह के 10 बजे थे। कुछ लोगों ने हमारे बाल घसीटते हुए हमें घरों से बाहर निकाला। हम छटपटा रहे थे। वह हम तीनों पर टोनही होने और गांव के एक आदमी को बीमार करने का आरोप लगा रहे थे। बकौल तीरथ लोगों ने हमें लातों से मारा। हम चिल्लाते रहे, लेकिन हमारे चिल्लाने का उन पर कोई असर नहीं था। गांव का कोई भी हमें बचाने नहीं आया। वह हम पर बिजली का तार पकड़ने को जोर दे रहे थे। उनका कहना था कि यदि तुम सब जादूगरनी (चुड़ैल) नहीं होगी, तो तुम्हे कुछ नहीं होगा।

मामले में तीसरी पीड़ित श्यामा बताती है कि उन लोगों ने मेरे बाल बुरी तरह से खींचे। हमने कपड़े निकालने से इन्कार करने पर हमें पूरे गांव में नंगा कर घुमाया गया। वह हमारे लिए लज्जाजनक हालात थे। लोग हम तीनो को टोनही (चुड़ैल जादूगरनी) कह रहे थे। हमें आग में कुदाया गया। हम प्यास से तड़प रहे थे। हमारा मुंह सूख रहा था। पीने को पानी मांगा तो उन्होंने हमारे मुंह में पेशाब कर दिया। हमारा खून बुरी तरह से बह रहा था।

गांव के चौराहे पर बेहोशी की हालत में हमें मरने के लिए छोड़ दिया गया। वे हमारे ऊपर पानी फेंक रहेथे। लोग हम तीनों को जादूगरनी(चुड़ैल) बुला रहे थे। श्यामा आगे बताती है कि उन लोगों ने हमें छड़ी से मारा। हम तीनों के बाल एक में बांधने की कोशिश भी की। हमारे सिर मुंडवा दिए गए। तीरथ बताती है कि कैसे पानी मांगने पर एक आदमी ने उसके मुंह में पेशाब कर दिया।

तीनो में सबसे संकोची बिसाहिन श्यामा को रोकते हुए कहती है उस दौरान मुझे मासिक था। बुरी तरह से खून बह रहा था। मैं गांव के लोगों के सामने पूरी तरह से नंगी थी। उन लोगों ने हमें पूरा गांव घुमाया। बाद में मंदिर के पास मरे हालत में छोड़ कर चले गए। यह बताते हुए बिसाहिन कांप जाती है। किसी तरह हम दूर के अस्पताल में गए। गांव के बूढ़ों ने हमें इनके खिलाफ हमें रिपोर्ट नहीं लिखाने दी। हम अस्पताल के बहाने पहले पुलिस स्टेशन गए। बिसाहिन आज 50 पार है। इनका जीवन अकेलेपन में गुजर गया। लेकिन आज वह विश्वास और उत्साह से भरी है। खेतों मे काम करती है, लेकिन उसके मन में संदेह अब भी है कि क्या उस पर टोनही (जादूगरनी, चुड़ैल) होने का जो ठप्पा लगा है, वह समाज से मिट जाएगा।

जनजातीय इलाकों में जादू-टोना की बातें आम हैं। यदि गांव, परिवार में कोई काम सही से नहीं हो रहा हो, कोई बीमार हो, किसी की मौत, फसल ठीक नहीं हो या कोई दुर्घटना हो जाए तो अक्सर अनपढ़ समुदाय के लोग अपने में से ही किसी कमजोर को दोष देने लगते हैं। इसके लिए गांव वाले आसानी से एकजुट भी हो जाते हैं। तीरथ कहती है कि हम भाग्यशाली रहे कि मारे नहीं गए। कभी-कभी इस तरह के इल्जाम जान ले लेते हैं। बीते साल पुलिस ने करीब 200 मामले जादू-टोने आदि को लेकर दर्ज किए। इनमें से अधिकांश मामले छत्तीसगढ़ के जनजातीय इलाकों से हैं। बिसाहिन बाई की मां इस हादसे के बाद गुजर गई। वह यह अपमान बर्दाश्त नहीं कर सकी। बिसाहिन का भाई इस मामले की वजह से आशाहीन हो गया है। उसे बहन की मदद नहीं कर पाने का मलाल है। मामले की तीनों पीड़ित बिसाहिन, तीरथ और श्यामा फिर से अपना जीवन शुरू कर चुकी हैं। लेकिन इनके पीछे रायपुर से आए एक नेत्र चिकित्सक डा. दिनेश मिश्र का साथ है। मिश्र काला जादू और विश्वास के खिलाफ जंग लड़ रहे हैं। मिश्र ने बिसाहिन बाई को अपराधिक मामला दर्ज करने के लिए प्रेरित किया। इतना ही नहीं बिसाहिन गांव के वार्ड नं. 13 से पंचायत चुनाव भी लड़ी। हालांकि जनवरी में हुए इन चुनावों में वह हार गई।

डा. दिनेश कहते हैं कि मेरी यह कोशिश होगी कि इन मामलों को फास्ट ट्रैक अदालतों में चलाया जाए। इससे पीड़ितों को इंसाफ मिल सकें छत्तीसगढ़ राज्य में जादू-टोना निरोधक अधिनियम 2005 इसके लिए लाया गया था, लेकिन यह कानून इसे रोकने में सक्षम नहीं हो सके। डा. मिश्र का संस्थान अंधश्रद्धा निर्मूल समिति इसके खिलाफ साल 1995 में बगैर सरकारी मदद के काम कर रहा है। मिश्र कहते हैं हालांकि हमें कोई सरकारी मदद नहीं मिलती। लेकिन फिर भी हमारा मिशन नहीं रुकेगा। डा. मिश्र बताते हैं कि जादू टोने के मामले अधिकतर बीमारियों और रोग की वजह से पैदा हो जाते हैं। लोग यदि इन बीमारियों के बारे में जागरूक हो जाएंगे तो वह अपने पड़ौसियों को इसका जिम्मेदार नहीं मानेंगे। इसके लिए मैं उन्हें बैक्टिरिया और वायरस के चित्र भी दिखाता हूं, जिससे वह बीमारियों की असल वजह जान सकें। टोनही जैसे मामले को कवर करने वाली पत्रकार रश्मि बताती है कि इस तरह के मामलों में समुदाय के लोगों को अपना ही कोई आदमी बहकाता है। इसलिए उसके खिलाफ सबूत और गवाह जुटाना मुश्किल हो जाता है। इस तरह के मामलों में पुलिस को प्रशिक्षित करने की जरूरत है।

रायपुर में प्रोफेसर और मामले की जानकार राधिका सक्सेना कहती हैं कि इस तरह की घटनाएं दुर्भाग्यवश भी हो सकती है, लेकिन ऐसे बहुत सारे

मामले भी सामने आए हैं जहां जादू-टोना को निजी स्वार्थ के लिए बढ़ावा दिया जा रहा है। घोर दरिद्रता और तनाव से जूझते हुए इन समुदायों में लोगों को किसी महिला को निशाना बनाकर उसके बारे में कानाफूसी शुरू करने में ज्यादा समय नहीं लगता। चुड़ैल का शिकार उनके लिए तनाव से मुक्ति पाने के लिए एक तरह की नुमाइश बन जाता है। किसी औरत को पीटने, जान से मार देने भर से ही शायद उन्हें तनाव से कुछ राहत मिलती है।

पिछले छह महीनों में छत्तीसगढ़ में दो दर्जन से ज्यादा मामले महिलाओं पर इस तरह के अत्याचार के सामने आए। इसमें आठ महिलाओं की जान भी चली गई। राज्य महिला आयोग के आंकड़ों पर गौर करें तो रायपुर दस मामलों के साथ बीते साल सबसे ऊपर रहा। बलरामपुर, राजनंदगांव, रायगढ़, जंजगीर-चम्पा और कोरिया जिले इसके ताजा शिकार हैं। हालांकि छत्तीसगढ़ सरकार का इन मामलों के लिए कड़े कानून होने का दावा करती है और मामला दर्ज होने के बाद बख्शे नहीं जाने की बात करती है। राज्य की महिला और बाल विकास मंत्री रामशील साहू भाजपा सरकार से महिलाओं के लिए अधिक सुरक्षा का दावा करती है। सरकार भी कानून और व्यवस्था को लागू करने को लेकर गंभीर है, लेकिन वह गांवों में टोनही जैसे मामलों को रोकने में असफल साबित हो रही है। रायपुर के एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी इसके पीछे कई वजहों को जिम्मेदार मानते हैं। इनमें लैंगिक असमानता, जायदाद के झगड़ों के वजह से उन्हें चुड़ैल बनाने की भूमिका ज्यादा होती है। एक औरत को चुड़ैल ठहराने के पीछे जमीन हथियाने, उसे दंडित करने और अपने यौन हित साधने जैसी वजहें भी हैं। इन हालात में पीड़ित महिला की मदद कर पाना मुश्किल हो जाता है। उसे अपना परिवार, घर छोड़ने पर मज़बूर किया जाता है या हत्या भी कर दी जाती है।

गरीब, निम्न जाति की महिलाएं, विधवा, बांझ, कुरूप या फिर बूढ़ी, बेसहारा और सामाजिक रूप से बहिष्कृत महिलाएं इन अंधविश्वासों का आसान शिकार हो जाती हैं। महिलाओं के मुद्दों को सामने लाने वाले वुमेन न्यूज नेटवर्क के मुताबिक जो महिलाएं ताकतवर होकर उभरती हैं और पुरुष समाज के नेतृत्व को खतरा पैदा करती हैं। वे भी इसका शिकार हो जाती हैं। डब्ल्यूएनएन के मुताबिक इसमें हिन्दू धर्म की रीतियां भी जिम्मेदार हैं, जिसमें जादू टोने के सहारे कई मान्यताओं की गलत व्याख्या की गई है। अत्याचार की शिकार यह महिलाएं देश के आधुनिकता को मुंह चिढ़ाती नज़र आती हैं। भले ही छत्तीसगढ़ का ही कोई इलाका हो, लेकिन इन पर हुए जुल्म सितम कहीं न कहीं हमारे समाज व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह लगा रहा है।

बिना कुदाल उठाए

-डा.रणजीत

इस शैतानों की बस्ती में इन्सान का रहना मुश्किल हैं !

इक जुल्म तो सह भी लें, लेकिन हर जुल्म को सहना मुश्किल हैं !

सब ओर फ़रेबों की उलझन, सब ओर भ्रमों के जाल बिछे

इस मज़हब के घनचक्कर में ईमान का रहना मुश्किल हैं !

होठों पे लगे हैं ताले औ' आवाज बेचारी कैदी है

पूरा अफ़साना दूर यहां इक लफ़्ज भी कहना मुश्किल हैं !

विश्वास कलम पर काफी है, हथियार कारगर यह भी !

पर बिना कुदाल उठाए ये दीवारें ढहना मुश्किल हैं !

★★

गैलीलियो

–ब्रेख़्त

(कोरस का गीत गाते हुए प्रवेश)

कोरसः सुनो रे सुनो रे.......
विज्ञान का सितारा गैलीलियो हमारा
इटली के इक शहर में
उसका मुकाम था
घर का बड़ा वो बेटा
गैलीलियो नाम था।
1610 की बात है
जब वो गजब हुआ।
कैसा गजब हुआ अजी कैसा गजब हुआ
चारों ही सिम्त फैली थी
बस एक ही खबर
चर्चा थी टेलिस्कोप की
हल्ला था दर बदर
ले आया एक टेलिस्कोप वो खरीदकर
जिससे वो आसमान को तकता था रात भर
देखा जो आसमान को तो रह गया वो दंग
कुछ और ही फिजां थी कुछ और ही था ढंग
ना कोई जहन्नुम था नहीं जन्नत का था पता
कोपरनिकस की बात पर वो हो गया फिदा
बोला वो झूमकर यह बात जोर, जोर
धरती ही घूमती है सूरज के चारों ओर।

(*गैलीलियो के काम करने का कमरा। गैलीलियो और सेग्रेडो मोटे लबादों में लिपटे, टेलिस्कोप पर झुके हुए हैं। कोरस गीत गाते हुए स्टेज पर से गुज़र जाता है। कोरस के जाने के बाद गैलीलियो और सेग्रेडो दिखाई पड़ते हैं।)*

सेग्रेडोः *(टेलिस्कोप में देखते हुए उत्तेजित-सा)* चंद्रमा की सतह बहुत ऊबड़-खाबड़ दिखाई दे रही है, उसके अंधेरे वाले हिस्से में चमकदार किनारे के पास कुछ चमकदार धब्बे हैं। वे एक-दूसरे से सटे हुए हैं। उन पर से रोशनी बिखरकर चारों ओर फैल रही है और....और .....फिर वह पूरे चमकदार हिस्से से जाकर मिल जाती है।

गैलीलियोः उन चमकदार धब्बों के बारे में तुम्हारा क्या कहना है?

सेक्रेडो : एक तारे पर पहाड़?

गैलीलियोः हां, भीमकाय पहाड़। पर्वत के शिखर उगते सूरज की रोशनी से नहाए हुए हैं, जबकि उनकी तलहटी में अब भी रात का अंधेरा बिखरा हुआ है। तुम्हें जो रोशनी बिखरती दिखाई देती है। वह उनके शिखरों से टकराकर बिखर रही है...

सेग्रेडोः लेकिन ये सब पिछले दो हजार साल से पढ़ाई जा रही एस्ट्रोनॉमी के खिलाफ है!

गैलीलियोः हां, है। मगर उससे क्या! जो तुम आज देख रहे हो वह दुनिया मे मेरे सिवा आज तक किसी ने नहीं देखा, तुम दूसरे आदमी हो...

सेग्रेडो : लेकिन चंद्रमा एक दूसरी पृथ्वी की तरह नहीं हो सकता जिस पर बड़े-बड़े पर्वत हैं। उसी तरह जैसे पृथ्वी तारा नहीं हो सकती.

गैलीलियोः हो सकता है, चंद्रमा पृथ्वी हो सकता है; उसी तरह जैसे पृथ्वी चंद्रमा हो सकती है। एक सामान्य ब्रह्मांडीय पिंड, हजारों में से एक। देख, फिर देखो, क्या तुम्हें चंद्रमा के अंधेरे भाग में पूरा अंधेरा दिखता है?

सेग्रडोः नहीं, जब मैं बारीकी से देखता हूं तो उस

पर एक हल्की पीली रोशनी दिखाई पड़ती है।

गैलीलियोः यह किस तरह की रोशनी हो सकती है?

(सेग्रेडो प्रश्नवाचक निगाह से देखता है।)

गैलीलियोः यह धरती से आती रोशनी है।

सेग्रेडोः बकवास है । धरती चमक कैसे सकती है? अपने ढेरों पर्वतों, समुद्रों, जंगलों के साथ यह चमक कैसे हो सकती है?

गैलीलियोः उसी तरह जैसे चंद्रमा चमकता है।दोनों ही सूरज की रोशनी से चमकते हैं। जैसे धरती चंद्रमा के लिए है, वैसे ही चंद्रमा धरती के लिए। वहां से हम कभी सिर्फ एक चमकदार फांक की तरह दिखते हैं। कभी पूरे चमकते गोले की तरह और कभी बिल्कुल ही नहीं। पूरे अंधकार में डूबे हुए...

सेग्रेडोः तो चंद्रमा और धरती के बीच कोई फर्क नहीं?

गैलीलियोः लगता तो नहीं..

सेग्रेडोः (*कांपते हुए*) आज से दस साल पहले यही बात कहने पर रोम में एक आदमी को जिंदा जला दिया गया था। उसका नाम था ब्रूनो...

गैलीलियोः उसने सिर्फ कहा था, अब हम देख सकते हैं सेग्रेडो। आज का दिन याद रखना। आज है दस जनवरी सोलह सौ दस.. मानवता इस दिन को याद रखेगी...आज स्वर्ग और नरक का खात्मा हुआ..

सेग्रेडेः गैलीलियो ये सब बहुत भयानक है..

गैलीलियोः(*आनसुना करते हुए*) सेग्रेडो, मैंने एक तथ्य और ढूंढा है..

सेग्रेडोः (*टेलिस्कोप के पास जाते हुए डरता है*)

गैलीलियोः मुझे डर सा लग रहा है।

गैलीलियोः(*फिर अनसुना करते हुए*) अब मैं तुम्हें चमकदार दूधिया गैलेक्सी दिखाऊंगा, देखकर बताओ वह किन चीजों से बनी है?

सेग्रेडोः (*फिर टेलिस्कोप में झांकते हुए*) तारे.. असंख्य तारे..

गैलीलियोः हां, सिर्फ ओरियन के तारापुंज में ही करीब पांच सौ तारे हैं।समझो कि वे उतने सारे विश्व हैं..और उनके अलावा भी हैं ढेर सारे...जिनके बारे में ब्रूनो ने हमें बताया था.. उसने उन्हें देखा नहीं था, पर भविष्यवाणी की थी।

सेग्रेडोः(*टेलिस्कोप से अलग होते हुए*) अगर यह मान भी लिया जाए कि धरती एक ग्रह है तो भी कोपरनिकस की यह बात कैसे सिद्ध होती है कि वह सूर्य के चारों और घूमती है। पूरे ब्रह्मांड में कोई भी ग्रह उसके आसपास नहीं घूमता सिवाय चंद्रमा के। जो धरती के चारों ओर घूमता है।

गैलीलियोः सेग्रेडो, मैं खुद परसों से इसके बारे में सोच रहा हूं। अब उस गुरु ग्रह को देखो। (*कहते-कहते टेलिस्कोप और सेग्रेडो के साथ स्टेज के एक कोने में चला जाता हैं गुरु का प्रवेश, उसके आसपास चार उपग्रह घूम रहे हैं।*) गुरु के आसपास चार छोटे ग्रह और हैं, उन्हें तुम सिर्फ टेलिस्कोप से देख सकते हो। मैंने परसों उन्हें देखा था, पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। कल फिर देखा मैं, कसम खा-कर कहता हूं। उन्होंने अपनी जगह बदल ली थी। अरे-अरे! यह क्या...मैंने पहले चार देखे थे, आज सिर्फ तीन ही दिखाई पड़ रहे हैं?.. देखो, देखो..

सेग्रेडोः मैं भी कुल तीन देख पा रहा हूं। तो फिर चौथा कहां गया? आओ, गणना करके देखें..

(*वे जल्दी-जल्दी गणना करते हैं। गुरु और उसके उपग्रह स्टेज पर दिखाई पड़ते*

रहते हैं।)

गैलीलियोः(*विजेता मुद्रा में*) सिद्ध हुआ। चौथा गुरु के पीछे चला गया है। यह तभी हो सकता है, जब चारों गुरु के आसपास घूम रहे हों। सिद्ध हुआ कि एक ग्रह के आसपास दूसरा घूम सकता है।

सेग्रेडोः और स्फटिक का वह गोला कहां है जिससे गुरु जुड़ा हुआ है?

गैलीलियोःऐसा कोई गोला नहीं है। अगर गुरु के आसपास चारों ग्रह घूम सकते हैं तो वह किसी चीज से जुड़ा हुआ कैसे हो सकता है? स्वर्ग में ऐसा कोई जुड़ाव नहीं है..वहां एक से ज्यादा, कई-कई सूर्य हैं..

सेग्रेडोः गैलीलियो, गेलीलियो, शांत हो जाओ..तुम बहुत तेजी से सोच रहे हो।

गैलीलियोःसेग्रेडो, चुप बैठने का वक्त नहीं..जो तुमने अभी देखा है किसी ने पहले नहीं देखा... वे लोग ठीक कहते थे।

सेग्रेडोः कौन? कोपरनिकस और उनके साथी?

गैलीलियोःहां, कोपरनिकस और वे सभी लोग..

(पूरे स्टेज पर तेज-तेज कदमों से चहलकदमी करता है। गुरु और उसके उपग्रह चले गए हैं।)

सेग्रेडोः शांत हो जाओ गैलीलियो, शांत हो जाओ.

गैलीलियोःउत्तेजित हो जाओ सेग्रेडो, उत्तेजित हो जाओ...सच आज खोज लिया गया है।

सेग्रेडोः (गेलीलियो) तुम ये पागलों की तरह चिल्लाना बंद करोगे या नहीं ?

गैलीलियोः(उतनी ही जोर से) और क्या तुम अपनी जगह पर मछली की तरह खड़े हिलते रहोगे...तब जबकि अभी-अभी सच खोजा गया है...

सेग्रेडोः मैं मछली की तरह नहीं हिल रहा हूं । मैं डर के मारे कांप रहा हूं।

गैलीलियोः क्यों?

सेग्रेडोः गेलीलियो, तम्हारी बुद्धि क्या पूरी तरह नष्ट हो गई है? क्या तुम बिल्कुल नहीं समझते कि तुम क्या कर रहे हो अगर जो तुम कह रहे हो वह सच है तो इसका अर्थ है धरती अन्य तारों की तरह सिर्फ एक तारा है, ब्रह्मांड में सिर्फ ग्रह और तारे हैं? तो ईश्वर कहां है?

गैलीलियोः क्या मतलब?

सेग्रेडोः ईश्वर! ईश्वर कहां है?

गेलीलियोःमुझे क्या पता? मैं कोई दार्शनिक थोड़े ही हूं! मैं तो गणितज्ञ हूं।

सेगेडोः सबसे पहले तुम एक आदमी हो, और एक आदमी के नाते मैं तुमसे पूछता हूं.....ईश्वर कहां है?

गैलीलियोःया तो वह हम सब में है..या कहीं नहीं है।

सेग्रेडोः और यही कहने पर ब्रूनों को जिंदा जला दिया गया था।

गैलीलियोःउसने सिर्फ कहा था, मैं सिद्ध करके दिखा सकता हूं ।

(स्टेज पर शांति छा जाती है। कोरस का गीत गाते हुए प्रवेश इस गीत में गैलीलियो की खोज और पादरियों के विरोध का जिक्र है)

कोरसः ना बदलेंगे हम,
कहते हैं विश्वास पुराने
जैसे थे वैसे ही रहेंगे
ना बदलेंगे हम
कहती है हर बात नई
तुम दूर हटो
अब आते हैं हम
ना बदलेंगे हम
अड़े रहे विश्वास पुराने
ना बदलेंगे हम
ना हटेंगे हम,
ना बदलेंगे हम।

(*काला चोंगा पहने पादरियों के एक झुण्ड का जोर-जोर से हंसते हुए प्रवेश। गैलीलियो एक कोने*

में खड़ा है।)

मोटा पादरीः (*पेट पकड़कर*) क्या मूर्खता है/ कितनी बड़ी मूर्खता है। लोग हर बात पर यकीन कर रहे हैं। अब कल को कहेंगे मुझे...यानी प्रीलेट को..खाना अच्छा नहीं लगता..हा, हा, हा,.

प्रोफेसरःअब तो इससे भी ज्यादा हैरत की बात हो रही है महाशय..

मोटा पादरीःमुझे पता है, लोग दानवों और देवताओं पर यकीन नहीं करते पर इस बात पर कर रहे हैं कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है. जैसे धरती न हुई किसी नाली में पड़ा पत्थर का टुकड़ा हुई..हा, हा, हा।

एक साधूः मुझे चक्कर आ रहे हैं, कोई मुझे सम्हाले। मुझे चक्कर आ रहे हैं, धरती कुछ ज्यादा ही तेजी से घूम रही है। मुझे थामो प्रोफेसर, कहीं मैं गिर न पडूं।..

(वह बहकने का नाटक करता है और पास खड़े प्रोफेसर पर झुक जाता है)

प्रोफेसरः (*नाटक में भाग लेता हुआ*) आह! लगता है आज हमारी धरती माता ने कुछ ज्यादा ही पी ली है। वह आज कुछ ज्यादा ही बहक रही है।

(*खुद भी बहकता है और तीसरे साधू पर लटक जाता है)*

दूसरा साधूःरोको, कोई रोको... हम फिसल रहे हैं। रोको..मैं कहता हूं कोई रोको..

(साधुओं का एक झुंड इकट्ठा हो जाता हैं वे आपस में कुछ इस तरह इकट्ठा होते हैं और एक-दूसरे को पकड़ते हैं जैसे भयंकर तूफान में जहाज समुद्र में घिर गया हो..बीच-बीच में जोर-जोर से हंसते भी जाते हे। फिर तीन-चार साधू एक कोने में जाते हैं ऊपर आकाश की ओर देखते हुए कहते हैं।)

साधू 3-4ः वह देखो...शुक्रतारा..वह कैसे आड़ा-टेढ़ा दिखाई देरहा है और वह है वीनस देवी.. हमें सिर्फ उसके पृष्ठ भाग दिखाई दे रहा है...वह भी कुछ आड़ा-टेढ़ा..

(*फिर जोर-जोर से हंसते हैं)*

एक साधूःदेखना कहीं, हम चंद्रमा पर न जा फिकाएं। सुनते हैं, वहां बड़े-बड़े पहाड़ हैं जिनके बड़े नुकीले शिखर हैं..

प्रोफेसरः देखो, अपने पैर सम्हालो...

मोटा पादरीः(गैलीलियों की ओर देखकर जोर से) आज हमारा पूरा कॉलेज चक्कर खा रहा हैं सबको चक्कर आ रहे हैं। धरती घूम रही है..

(सब जोर से हंसते हैं। गैलीलियो बाहर निकल जाता है। कोरस का प्रवेश! कोरस गीत गाता है।)

कोरसः हाय रे कैसा ये अंधेर दुःख के बादल छाए
कहानी कैसे कही जाए
झूठी दलीलें दे दे के मुकदमा चलाया
धर्म के खिलाफ उसके काम को बताया
गैलीलियो को कैद किया उसपे जुल्म ढाया
पाखंडियों ने मिलके गला सत्य का दबाया
ज्ञान का पंछी कसमसाए-फड़फड़ाए
हाय कहानी कैसे कही जाए
कहानी कैसे कही जाए।

(माइम में दृश्यःजिसमें पादरियों का विरोध तेज होने की बात है। गीत के चलते ही दंडाधिकारी बड़े पादरी के पास जाता है और उससे माइम में गैलीलियों को दंड देने का अनुरोध करता है। माइम में बहस। फिर गैलीलियो पर मुकदमा और उसे कैद करने का निर्णय। गैलीलियों को कैद करके ले जाया जाता है। गीत में 1633-1642 के बीच उसकी कैद का वर्णन। इसी बीच 1637 का एक दिन...गैलीलियो नजरबंद है...एक पादरी पहरा दे रहा है.. .एंड्रिया मिलने आता है...।)

वर्जीनियाः पिताजी, एंड्रिया आपसे मिलने आए हैं।

गैलीलियोः कौन..एंड्रिया ?

वर्जीनियाः हां, उन्हें बुला लूं या वापस भेज दूं?

गैलीलियोः नहीं नहीं, उसे बुलाओ।

(एंड्रिया प्रवेश करता है। पहरे पर बैठा पादरी पूछता है)

पादरीः यह कौन है? किस लिए आया है?

वर्जीनियाः वो उनका छात्र है...उसे कोई खतरा नहीं है। अब वह उनका दुश्मन है।

(*वर्जीनिया एंड्रिया को लेकर अंदर आती है।*)

गैलीलियोः वर्जीनिया, एंड्रिया को यहीं छोड़ दो। तुम जाओ। क्या खबर लाए हैं?

वर्जीनियाः मैं भी सुनना चाहती हूं कि एंड्रिया क्या खबर लाये हैं।

(बैठ जाती है)

एंड्रियाः (ठंडेपन से) आप कैसे हैं?

गैलीलियोः जरा पास आओ! तुम आज कल क्या कर रहे हो? मैंने सुना है, तुम जीव-विज्ञान पर कुछ काम कर रहे हो।

एंड्रियाः (अनसुना करते हुए) एम्सटरडम से फेब्रीशियास ने पुछवाया है कि आपका स्वास्थ्य कैसा है?

गैलीलियोः मेरा स्वास्थ्य ठीक है। (व्यंग्य से) यहां ये लोग मेरा काफी ध्यान रखते हैं।

एंड्रिया :ठीक है, मैं फेब्रीशियास को ऐसा ही बता दूंगा।

गैलीलियोः तो क्या तुम हॉलैंड जा रहो?

एंड्रिया : हां, अब इटली में विज्ञान का भविष्य नहीं है।जबसे आपको कैद किया गया है, इटली में कोई नया विचार सामने नहीं आया।

गैलीलियोः और बाहर?

एंड्रिया : फ्रांस में डेकार्टे ने प्रकाश पर अपना काम रोक दिया हैं एक अजब निराशा का वातावरण है।

गैलीलियोःऔर हमारे दोस्त?

एंड्रिया : फेडरजोनी ने फिर से कांच घिसना शुरू कर दिया है। फलगांजियो वापस चर्च की शरण में चला गया है। सब तरफ निराशा है.. (*कुछ रुककर*) तो अब मैं जाऊँ?

गैलीलियोः थोड़ी देर रुको एंड्रिया (*फिर गुस्से से वर्जीनिया की ओर देखकर*) वर्जीनिया, मैंने तुमसे कहा ना-जाओ, जाकर देखो, खाना बना या नहीं ?

(वर्जीनिया चली जाती है)

(पुनः एंड्रिया से) एंड्रिया, जरा पास आओ। *(एंड्रिया के पास आता है गैलीलियो। धीरे से चतुराई के साथ..)*

एंड्रिया :, मैने इस बीच अपनी पुस्तक 'डिस्कोर्सी' का लेखन पूरा कर लिया है।

एंड्रिया : (*बहुत आश्चर्य से*) क्या? आपने यहां बैठकर डिस्कोर्सी लिख ली? विज्ञान की दो शाखाओं-मेकेनिक्स और गुरुत्वाकर्षण के नियमों-के बीच का संवाद आपने यहां पूरा किया?

गैलीलियोः हां, पादरियों ने मुझे कागज और कलम की सुविधा दे रखी थी। पर जो में रोज़ लिखता था वे मुझ से रोज ले भी लेते थे।

एंड्रिया : (निराशा से) तो, तो क्या पंडुलिपि पादरियों के पास है? वह महान वैज्ञानिक पुस्तक पादरियों के कब्जे में है?

गैलीलियोः नहीं एंड्रिया, नहीं। चांदनी रातों में जब चंद्रमा का थोड़ा-प्रकाश मेरे कमरे को रोशन करता था, तभी बहुत मेहनत से, किसी तरह छुपते-छुपाते, मैंने हर पन्ने की प्रतिलिपि तैयार की। इस कोशिश में मेरी आंखें चली गईं। पर ऐंड्रिया, एक प्रतिलिपि मैंने तैयार कर ली है।

एंड्रिया : *(उत्तेजित होकर*) कहां, कहां है वह प्रतिलिपि..

गैलीलियोः धीरे बोल एंड्रिया ..वह देखो (*एक गुलदस्ते की ओर इशारा करते हुए*).. प्रतिलिपि उस गुलदस्ते में है तुम उसे ले

लो और छुपाकर हॉलैंड ले जाओ..

(एंड्रिया प्रतिलिपि निकालता है फिर बहुत सम्मान के साथ गैलीलियो से...)

एंड्रिया : आप बहुत महान हैं।

गैललियो:नहीं, मैं बहुत महान आदमी नहीं। मैं एक ऐसा सामान्य आदमी हूं जो जिंदा भी रहना चाहता है और अपना काम भी करना चाहता है। मैंने वही किया। *(कुछ रुककर)* तुम अब जाओ एंड्रिया।

(एंड्रिया प्रतिलिपि को अपने लबादे में छुपा लेता है और फिर बहुत सम्मान के साथ जाने को प्रस्तुत होता है।)

गैलीलियो: ठहरो एंड्रिया, जाने से पहले मेरी एक-दो बातें और सुनते जाओ..इस बीच मेरे पास बहुत वक्त रहा है और मैंने विज्ञान के बारे में...अपने बारे में बहुत कुछ सोचा है..मुझे लगता है, विज्ञान के क्षेत्र में काम करना बहुत हिम्मत का काम हैं उसका संबंध ज्ञान से है और जो शंका करने से, प्रश्न उठाने से ही प्राप्त हो सकता है...विज्ञान जब चीजों के बारे में जानकारी प्राप्त करता है और उन्हें लोगों तक पहुंचाता है तो वह एक काम और करता है..लोगों को प्रश्न उठाने के लिए तैयार करता है। आज जनता का एक बहुत बड़ा हिस्सा राजाओं, राजकुमारों, जमींदारों और साधुओं द्वारा अंधविश्वासों तथा अज्ञान में जकड़ दिया गया है और वे उन चालाक लोगों की चालाकियां समझ नहीं पाते..लोगों के दुख पहाड़ों की तरह भारी हैं और कहा जाता है कि वे पहाड़ों की तरह स्थायी रहेंगे..प्रश्न खड़ा कर सकने वाले हमारे नए उपकरण टेलिस्कोप ने जनता के हाथ में एक नया औजार दिया जिसने उसे अपने शोषकों की ओर मोड़ दिया..और ये स्वार्थी, क्रूर तथा हिंसक लोग, जो विज्ञान की तमाम उपलब्धियों का प्रयोग अपने फायदे के लिए करते हैं, विज्ञान की इस उपलब्धि से डर गये..उन्हें लगा कि जनता अब शायद देख ले कि उसके दुःख के स्रोत कहां हैं और फिर उन्हें समाप्त करने के लिए आगे बढ़े...वे डर गए थे और तब उन्होंने हमें धमकियों से, रिश्वत से झुकाने की कोशिश की...पर क्या हम वैज्ञानिक जनता से अलग हटकर, उससे कटकर भी वैज्ञानिक बने रह सकते हैं? आज ग्रहों और तारों के रास्तों का तो हमने पता लगा लिया है पर, जनता के लिए अपने शोषकों के रास्तों का पता लगाना अब भी मुश्किल है... ब्राह्मांड की दूरियां जानने की लड़ाई हमने प्रश्न खड़े करके जीत ली, पर एक घरेलू रोमन महिला अपना खाना और दूध प्राप्त करने की लड़ाई अपने विश्वासों के कारण हार जाती है..विज्ञान को इन दोनों मोर्चों पर लड़ना होगा. एंड्रिया ...मानव सभ्यता जो अंधविश्वासों से घिरी हुई है, वह विज्ञान का फायदा उठाने से वंचित रह जाएगी...तब तुम्हारे काम का फायदा क्या एंड्रिया ? मेरा मानना है कि विज्ञान का एकमात्र उद्देश्य मानव जीवन को और बेहतर बनाना है....अगर वैज्ञानिक यह नहीं कर सके और सिर्फ ज्ञान का भंडारण करते रहे तो उनके और जनता के बीच एक गहरी खाई बन जाएगी...विज्ञान तब शोषण का एक नया हथियार होगा, एंड्रिया ...तुम ऐसा मत होने देना, एंड्रिया :...तुम ऐसा मत होने देना..

(विज्ञान के लक्ष्य को लेकर कोरस एक गीत गाता है)

--------0--------

(रूपातंरण-संतोष चौबे, राजेश जोशी)

उदासी चेहरा

डा०. उपेन्द्र कुमार

पिछले अंक का शेष...

भारत में समय-समय पर महिलाओं के हितों की रक्षा के लिए कानून और अधिनियम बनते रहे हैं। पर क्या ये कानून अपना पूर्ण औचित्य कायम कर पाए हैं? 1994 में प्रसव पूर्व भ्रूण हत्या निदान अधिनियम लागू किया गया। समान कार्य के लिए समान पारिश्रमिक अधिनियम 1976 में बनाया गया। महिलाओं को घरेलू हिंसा से निजात दिलाने के लिए भारतीय दंड संहिता की धारा 498 'ए' प्रमुख कानूनी यंत्र है। निवारण अधिनियम भी बनाया गया। दहेज की कुप्रथा को रोकने लिए के लिए दहेज निशेध अधिनियम बनाया गया। कार्यरत महिलाओं की प्रसूति से पूर्व और बाद में स्वास्थ्य लाभ हेतू विशेष सुविधा प्रसूति प्रसुविधा अधिनियम बनाया गया। महिलाओं को घरेलू हिंसा से रक्षा के लिए सुरक्षा अधिनियम 2005 के रूप में नया कानून बना एवं लागू हुआ। परन्तु इस सख्त कानून के लागू होने के इतने वर्ष बाद भी इसका खास असर अब तक दिख नहीं पा रहा है।

महिलाएं निरन्तर विभिन्न माध्यमों से प्रताड़ित हो रही हैं। महिला चाहे किसी वर्ग की हो अगर वह अपनी जिन्दगी का कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेती है तो उसके परिवार के पुरुष वर्ग का रवैया कभी भी उसके प्रति सौहार्दपूर्ण नहीं रहता। आज इस 21वीं सदी में भी समाज लड़कियों की भावनाओं को मान्यता नहीं देता। आज औरतों को अपने स्वाभिमान की पहचान होनी चाहिए तथा उन्हें अपने को बाजार की वस्तु नहीं बनने देना चाहिए। मीडिया, मॉडलिंग और फिल्म के चकाचौंध ने स्त्री को बिकाऊ बना दिया है। कोई भी विज्ञापन औरत के अर्धनग्न तस्वीर के बिना पूर्ण नहीं होती। मीडिया ने औरतों में यह मानसिकता पैदा कर दी है कि औरत का शरीर ही उसकी शक्ति है।

देश की राजधानी में हर माह नौ महिलाएँ दहेज की भेंट चढ़ रही है। दहेज का दानव हर साल सौ से अधिक दुल्हनों के सुनहरे सपनों को साकार होने से पहले ही चकनाचूर कर रहा है। वर्ष 2005 में भी पूरे वर्ष दहेज के मौत के मामले सुर्खियों में छाये रहे। पिछले एक दशक में दहेज के कारण हुई मौत के मामले पर नजर डाले तो यह आंकड़ा डेढ़ सो पार भी कर चुका है।

सरकार व पुलिस की लाख कोशिशों व प्रचार के बावजूद राजधानी में जब दहेज का घिनौना खेल धड़ल्ले से चल रहा है तो देश के अन्य राज्यों की हालत का अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है। गत दिनों नरेला इलाके में एक महिला विनोद देवी (25) ने अपने लड़के आर्यन (3) बेटी आरजू (5) के साथ ट्रेन के नीचे कटकर जान दे दी। दो मासूमों के साथ एक महिला की आत्महत्या करने के मामले में पुलिस को हिलाकर रख दिया है। मामले की जाँच में पता लगा कि पति दहेज मांगता था। इसी माह पुलिस ने मुखर्जी नगर इलाके में एक स्कूल के शिक्षक को गिरफ्तार किया। इस शिक्षक की पत्नी ने फाँसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। जांच करने पर पता चला कि मामला दहेज का है।

आने वाले 50 वर्षो में बहुओं का मुँह देखने के लिए तरस जाएंगे लोग क्योंकि पुत्र की कामना में कन्या भ्रूणों की हत्या बढ़ रही है और बाल-बालिकाओं के अनुपात में तेजी से गिरावट आ रही है। 1991 की जनगणना में बालिकाएँ प्रति हजार में 945 के

मुकाबले 2001 तक यह आंकड़ा घटकर 927 रह गया है। इसका एक अन्य कारण पुत्र की चाहत में कन्या भ्रूणों का गर्भपात कराना है। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के अनुसार देश में प्रति वर्ष लगभग 50 लाख कन्या भ्रूणों का गर्भपात कराया जा रहा है जो महिलाओं के प्रति एक प्रकार की क्रूरता है क्योंकि जिस भ्रूण का गर्भपात कराया जाता है वह न तो चीख सकता है और न ही अपनी रक्षा करने में सक्षम है। यह एक विडम्बना ही है कि महिलाएँ ही महिलाओं की दुश्मन साबित हो रही हैं। शहरों में पढ़ा-लिखा तबका गर्भ में पल रहे बच्चों का जन्म से पहले परीक्षण कराकर जान लेता है कि होनेवाला शिशु लड़का है या लड़की। इस काम को मानवता के रक्षक तथाकथित डाक्टर ही अंजाम दे रहे हैं। इस तस्वीर का दूसरा पहलू यह भी है कि दूर दराज के क्षेत्रों में लोग गर्भ पूर्व मंहगे परीक्षण तो नहीं करा पाते लेकिन अगर जन्म लेने वाली कन्या हुई तो उसे उसी वक्त दाई मौत की नींद सुला देती है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, के कई ग्रामणी क्षेत्रों में कन्या शिशु के जन्म लेते ही उसका गला घोंट देना, मुंह में नमक भर कर मार देना आम बात है। आई० एम० ए० के अनुसार देश के समृद्ध राज्यों पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और गुजरात में भी स्त्री-पुरूष अनुपात प्रति हजार पुरुषों की तुलना में 900 से भी कम रह गया है। विशेषज्ञों के अनुसार 'प्री बर्थ एलिमिनेशन ऑफ फिमेल्स' पी०बी०एफ० समाज में महिलाओं के प्रति बढ़ रहे हिंसक अत्याचारों में से एक है। चिकित्सा जगत् की प्रगति का लाभ उठाकर अक्सर लोग गर्भपात करना पसंद करते हैं। चिकित्सा पेशे से जुड़े लोग इसे बढ़ावा दे रहे हैं क्योंकि देश में इसे निपटने के लिए सख्त कानून नही है।

आज भी हमारे समाज में दुष्कर्म, दहेज-हत्या या डायन बताकर मारने की घटनाएँ जारी है। पटना जिले में 2013 की पहली छमाही में 32 लड़कियों के साथ एकल या सामूहिक दुष्कर्म की घटनाएँ हो चुकी हैं। बेगूसराय जिला के मैखार गाँव में 27 अगस्त की रात 70 वर्षीय महिला को डायन बताकर उसकी नृशंस हत्या की गई। ईंट पत्थर से कुचलकर मारा गया। इससे पहले कई बार पंचायत भी बैठी थी, लेकिन पुलिस प्रशासन उस वृद्धा की सुरक्षा नहीं कर पाया।

भारत में हर वर्ष एक लाख छत्तीस हजार (1,36,000) माताओं की मौत होती है। अमेरिका स्थित गैर सरकारी संगठन 'सेव द चिल्ड्रेन' द्वारा विश्व में माँ की स्थिति के बारे में जारी रिपोर्ट 2007 में यह जानकारी दी गयी है। रिपोर्ट के अनुसार इथियोपिया, कांगो और नाईजीरिया जैसे कम विकसित क्षेत्रों में भी हालात भारत से बेहतर है। 66 देशों में माताओं के स्तर का आकलन शैक्षिक, आर्थिक, राजनीतिक और स्वास्थ्य क्षेत्र की पृष्ठभूमि में किया गया और भारत को इस मामले में 61 वाँ स्थान मिला। रिपोर्ट में कहा गया कि भारत में माँ ही नहीं बल्कि बच्चों की हालात भी दयनीय है। भारत में कुल एक करोड़ बच्चों में से 19 लाख बच्चों की हर वर्ा मौत हो जाती है। वर्ष 2006 में गोपालगंज में एक महिला को नग्न अवस्था में गाँव में घुमाया गया। ऐसा समाचार आये दिन राज्य के विभिन्न स्थानों से मिलते रहते हैं। यही नहीं, डायन या चुड़ैल कहकर महिलाओं को बुरी तरह पीटने और कभी-कभी तो जान मार देने की घटनाएँ भी अक्सर होती रहती है। महिलाओं के प्रति सामाजिक सोच ये कड़वी हकीकत इस बात का प्रमाण है कि अधिकांश लोग मानसिक तौर पर आज भी मध्य युग में जी रहे हैं, जिसमें औरत को पैर की जूती, दासी या मात्र भोग्या समझा जाता था। बिहार की धरती पर नारी के वस्त्र सरेआम उतार लिये जाते हैं और समाज के तथाकथित सुधारक, महिला आयोग व अन्य महिला संगठन लाचार होकर सब कुछ देखते रहते हैं। बलात्कार पीड़ित महिला का जितना जनाजा आबरू लुटवाते समय नहीं निकलता उससे ज्यादा अदालत

में निकल जाता है। इन्हीं वजहों से अधिकांश महिलाएं मुँह नहीं खोलती और दोषी साफ बरी हो जाते हैं। 12 अप्रैल 2014 को एक दिल दहला देने वाली घटना घटी। अपने पिता के साथ यात्रा कर रही 17 साल की एक युवती को छपरा में चार युवकों ने सरे आम ट्रेन से खींच लिया और पास ही एक दवा की दुकान में ले जाकर उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म किया। कोई भी उस लड़की और उसके पिता की वेदना का सहज अनुमान नहीं लगा सकता।

वर्ष 2013 के फरवरी माह में वैशाली जिला के दयालपुर गढ़ गाँव में गुरूवार को छेड़खानी का विरोध करने पर मनचले ने सोई अवस्था में 15 वर्षीय किशोरी के चेहरे पर तेजाब फेंक कर जख्मी कर दिया। हमले में किशोरी के चेहरे का ऊपरी हिस्सा, सीना व दोनों कलाईयां झुलस गई। वर्ष 2012 में समस्तीपुर में मनचलों की छेड़-छाड़ और यौन उत्पीड़न से तंग आकर स्नातक विज्ञान की एक होनहार छात्रा कंचन बाला ने आत्महत्या कर ली थी। उसने अपने दारूण दुख से भरे निर्णय से पहले जो सूसाइड नोट जीवित दुनियां के लिए छोड़ा, उससे पता चला कि पुलिस ऐसे मामले में कितनी संवेदनहीन, निष्क्रय और महिला विरोधी है। कुछ ही महीने बाद पटना के पत्रकार नगर थानान्तर्गत गोपीपुर में रहने वाली 11वीं की छात्रा आभा रानी को भी वहीं सब झेलना पड़ा। फिर 19 फरवरी 2012 को उसने आत्म हत्या कर ली थी।

देश की 42 विज्ञान प्रयोगशालाओं में एक भी महिला डायरेक्टर नहीं है। भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के एक अध्ययन में यह तथ्य उजागर हुआ है कि विज्ञान के क्षेत्र में कार्यरत महिलाएं लैगिंक भेदभाव और शोषण के शिकार हैं। इसी तरह उत्तर प्रदेश में विधि विज्ञान प्रयोगशाला में कार्यरत एक महिला वैज्ञानिक ने राज्य महिला आयोग से शिकायत की कि उसका एक वरिष्ठ पुरूष सहकर्मी उसे गंदी व अश्लील गालियां एस०एम०एस० करता है और जिंदगी बर्बाद करने की धमकी देता है। 16 दिसम्बर, 2012 को दिल्ली में हुए गैंग रेप के बाद भड़के जनाक्रोश और उसके बाद सरकार द्वारा महिला सुरक्षा के लिए उठाए गए कानूनी प्रशासनिक कदमों का प्रभाव मापने की दृष्टि से देखा जाय तो महिलाओं के हालत बिल्कुल नहीं बदले हैं। दिल्ली में एक जनवरी 2013 से 15 फरवरी के बीच रेप के 181 मामले दर्ज किए गए। यानी राजधानी में औसतन प्रत्येक दिन बलात्कार की घटना घटती है। राज्य सभा में साल दर साल बढ़ते अपराधों का आंकड़े पेश करते वक्त आर० पी० एन० सिंह ने सफाई दी कि चूँकि कानून-व्यवस्था और पुलिस राज्यों का विषय है, इसलिए जिम्मेदारी राज्यों की है। ऐसे में उनसे पूछना वाजिब है कि राजधानी दिल्ली की पुलिस और कानून व्यवस्था पर तो केन्द्र सरकार का नियंत्रण है, फिर यहाँ महिलाओं का इज्जत लगातार तार-तार क्यों हो रही है। पंजाब के तरनतारण में पंजाब पुलिस द्वारा एक युवती और उसके पिता की बर्बर ढंग से पिटाई तथा बिहार के पटना में संविदा पर नियुक्त शिक्षकों पर जिनमें महिलाएं भी शामिल थी, पुलिसिया लाठीचार्ज ने देश की शीर्ष अदालत तक को झकझोर दिया। इन घटनाओं से संबंधित खबरों पर स्वतः संज्ञान लेते हुए सुप्रीम कोर्ट ने दोनों संबंधित राज्यों से स्पष्टीकरण भी माँगा। दूसरी ओर 4 मार्च 2013 को राजधानी में पूर्वोत्तर राज्यों से आर्म्ड फोर्सेस स्पेशल पॉवर एक्ट (सशस्त्र बल विशेष अधिकार कानून) हटाने की माँग को लेकर बारह वर्षो से भी अधिक समय से अनशन पर चल रही इरोम शर्मिला चानु ने न्यायिक सुनवाई के दौरान अदालत में कहा कि मैं जीना चाहती हूँ और अपनी जिंदगी से प्यार करती हूँ लेकिन पहले मैं न्याय और शांति चाहती हूँ। अहिंसा की समर्थक इस महिला ने नयायधीष को साफ कह दिया कि अगर सरकार अफस्पा हटाएगी, मैं तब ही मुख से भोजन ग्रहण करूँगी। इन राज्यों में अफस्पा कानून के बेजा इस्तेमाल पर

मानवाधिकारवादी व महिला संगठन बराबर सवाल उठाते रहे हैं। सेनाकर्मियों पर आरोप लगाते रहे हैं कि वे इस कानून का इस्तेमाल आम जनता के खिलाफ लूटपाट, बलात्कार, मारपीट व हत्या के मामले में कर रहे हैं। इस कानून की आड़ में सेना एक साल तक किसी को भी जेल में रख सकती है। आज राज्यों की प्राथमिकताएँ बर्ल्ड बैंक, आई०एम०एफ०, एम० एन० सी०, विश्व व्यापार संगठन तय करता है। खाद्य, शिक्षा, स्वास्थ्य क्षेत्रों जेसी सेवाओं में सब्सिडी में कटौती का दबाव ऐसी ही अंतर्राष्ट्रीय कर्जदाता एजेंसियों की शर्तों का हिस्सा है।

आज विश्व में अनिवार्य रूप से संवैतनिक मातृत्व अवकाश प्रावधान वाले देशों की संख्या 173 है। जबकि घरेलू हिंसा को गैर कानूनी घोषित करने वाले देशों की संख्या 125 है। कार्य स्थल पर यौन उत्पीड़न को गैर कानूनी घोषित करने वाले देशों की संख्या 117 है। ऐसे देश जहाँ पुरूष और महिला को समान कार्य के लिए समान वेतन दिए जाने का कानून है, उनकी संख्या 117 है। संपत्ति में महिलाओं को बराबर अधिकार देने वाले देशों की संख्या 115 है। सरकार की जनविरोधी आर्थिक और औद्योगिक नीतियों के कारणं पतनशीलता, अश्लीलता, शराबखोरी, अनैतिकता तेजी से बढ़ रही है। टी०वी०, पत्र-पत्रिकाओं, फिल्मों व सौन्दर्य प्रतियोगिताओं के माध्यम से अश्लीलता परोसी जा रही है, जिसमें नारी के जिस्म को उपभोग की वस्तु के रूप में पेश किया जा रहा है। महिलाओं और बच्चों को तस्करी के जरिये विदेशों में बेचा जा रहा है और देह व्यापार में लगाया जा रहा है। सामंतवादी और साम्राज्यवादी गिरगिट की तरह अपना रंग बदल-बदलकर महिलाओं का शोषण कर रहे हैं। हमारे समाज में मृतप्राय सामंतवाद अपनी रक्षा के लिए हर किस्म के हथियारों का उपयोग कर रहे हैं। ढहते हुए सामंतवाद की विकृतियां धर्म और सम्प्रदाय जैसी आस्थाओं के सहारे जीवित रहती हैं। इसलिए हिन्दी के प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त ने ठीक ही लिखा है,

''अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी''
आँचल में है दूध और आँखों में पानी''।

कवि धूमिल ने भी लिखा है-

एक आदमी रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है,
जो न रोटी बेलता है,
न रोटी खाता है,
वह सिर्फ रोटी से खेलता है,
मैं पूछता हूँ, यह तीसरा आदमी कौन है?
मेरे देश की संसद मौन है।

अतः उदासी चेहरा को खुशहाल बनाने के लिए सड़ी-गली व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष कर समाजवादी समाजका निर्माण आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ स्रोत :

1.महालक्ष्मी सम्राट अंक 14 फरवरी 1999
2.हिन्दुस्तान दिनांक 08.03.2010 पृष्ठ संख्या 11
3.हिन्दुस्तान दिनांक 18.05.2005 पृष्ठ संख्या
4.राष्ट्रीय सहारा दिनांक08.3.2008 पृष्ठ संख्या 9
5.दैनिक जागरण दिनांक 15.03.2013 पृष्ठ संख्या 10
6 दैनिक जागरण दिनांक 16.03.2013 पृष्ठ संख्या 12
7.रा० सहारा दिनांक 09.03.2013 पृष्ठ संख्या 8
8.हिन्दुस्तान दिनांक 17.10.2006 पृष्ठ संख्या 6

★★

पारमाणिविक सर्वनाश का विकल्पः विश्व सरकार

–डा. रणजीत

साढ़े चार अरब साल पहले यह पृथ्वी बनी थी, संभवतः उसके निर्माण के पचास करोड़ साल बाद सौर मंडल के इस ग्रह पर जीवन का उद्भव हुआ। अगले चार अरब सालों में यह जीवन निरंतर अधिक विविध, अधिक विकसित और अधिक संश्लिस्ट होता गया, जिसकी अंतिम परिणिति के रूप में कुछ लाख साल पहले मानव जाति का विकास हुआ। सिर्फ छह या सात हजार साल पहले यह मानव सभ्यता विकसित हुई, जिसका इतिहास पृथ्वी के या पृथ्वी पर जीवन के इतिहास की विशाल समयावधि के सामने उतना ही छोटा है, जितना एक साल के सामने एक मिनट का होता है। इसी मानव सभ्यता ने मानवीय संसार की रचना करते हुए प्रकृति के चमत्कारों में कला, विज्ञान, दर्शन, सामाजिक संगठन और आत्मिक उपब्धियों के चमत्कार जोड़े। पर ज्यों-ज्यों हम ऊपर उठते गए, हमारे पैरों के नीचे की वह विकास संबंधी नींव खिसकती गई, जिस पर हम खड़े थे और आज हमारी वैज्ञानिक खोजों और उनसे उपलब्ध ज्ञान का परिणाम है कि हमारी यह पृथ्वी और इस पर बसा हुआ हमारा यह पूरा संसार नाभिकीय सर्वनाश का बंधक बन गया है और नाभिकीय सर्वनाश का यह खतरा, अपनी प्रजाति के सम्पूर्ण विलोप और पृथ्वी को तहस-नहस कर जीवों के रहने योग्य ही न रहने देने का यह खतरा, कोई सुदूर भविष्य का अनिश्चित खतरा नहीं, एक ऐसा सुनिश्चित खतरा है जो इसी क्षण हमारे सिर पर मंडरा रहा है। सर्वनाश की यह परिपूर्ण मशीन सिर्फ बटन दबाए जाने भर का इंतजार कर रही है, फिर चाहे यह काम किसी नाभिकीय का गुस्से में पगलाया हुआ या भयाक्रांत राष्ट्राध्यक्ष करे या कोई त्रुटिपूर्ण कम्पयूटर। पृथ्वी का और उसके पर्यावरण का अब तक का सारा निर्माण, जीव-जगत का अब तक सम्पूर्ण विकास, मानव जाति की अब तक की सम्पूर्ण भौतिक और आत्मिक उपलब्धियां, इस संसार का सर्वस्वः इतने कच्चे धागे पर टिका हुआ है कि लापरवाही के एक ही क्षण में सब कुछ समाप्त हो सकता है। यह एक ऐसा भयंकर तथ्य है जिस पर विश्वास करने को जी नहीं करता। इस सर्वनाश की भयावहता का एक दूसरा ही आयाम उभर कर सामने आता है। जब हम सोचते हैं कि यदि इस सर्वनाश से बच जाएं तो मनुष्य जाति को जीवित रहने और अपनी सभ्यता और संस्कृति का विकास करने के लिए अरबों साल और मिल सकते हैं। जब हम यह सोचते हैं कि परमाणु विनाश केवल पृथ्वी, जीव-जगत और मानव जाति के वर्तमान की ही नहीं, उसके सम्पूर्ण भविष्य की भी भ्रूण हत्या कर देगा, आने वाली पीढ़ियों को भी अजन्मा ही समाप्त कर देगा। वास्तव में भावी विकास के लिए प्राप्य लंबी समयावधि को देखते हुए हमारी सभ्यता का कुल इतिहास इतना छोटा सा है कि यदि परमाणु युद्ध से हमारी प्रजाति ने अपने-आपको समाप्त कर लिया तो यह इसकी पालने में मौत ही अकाल बालमृत्यु कही जाएगी। नाभिकीय सर्वनाश का यह खतरा हमारे इतना सन्निकट, इतना आसन्न, इतना वास्तविक और किसी भी क्षण संभव है कि यह सोच कर आश्चर्य होता है कि इस तथ्य से परिचित होने के बावजूद हम लोग कैसे सामान्य दैनिक जीवन में व्यस्त रह लेते हैं। वास्तव में हमारा दैनिक जीवन ही जीवन के विनाश के इस अभूतपूर्व खतरे से हमारा ध्यान खींचे

हुए है। हमारी स्थिति उस बकरे से बेहतर नहीं है जो बलि पर चढ़ाए जाने के एक क्षण पहले तक मजे से हरी-हरी घास चर रहा होता है।

एक समय था, जब हमारे पास समय था, सोचने और कुछ करने का समय। अगस्त 1945 में हीरोशिमा पर पहले अणुबम के प्रयोग के बाद से कई दशकों का अंतराल मिला कि हम इस भावी खतरे पर शांतिपूर्वक विचार कर सकें और अपने संसार को इस तरह से ढालें कि वह नाभिकीय सर्वनाश के खतरे से मुक्त हो । कुछ दूरदर्शी लोगों ने मानवजाति का ध्यान इस बात की ओर दिलाया भी, पर हमने, हमारी संपूर्ण प्रजाति ने इस संबंध में कुछ न किया। परिणाम सवरूप सर्वनाश के भयानक साधनों की एक से एक नयी पीढ़ियां विकसित होती गयीं और महाशक्तियों के अस्त्रागारों में नये-नये संहारक यंत्रों के ढेर लगते गये। हीरोशिमा में अणुबम के विस्फोट के तीन ही महीने 24 नवम्बर, 1945 को इंगलैंड के हाउस ऑफ लार्ड्स में दार्शिनिक बर्ट्रेंड रसल खड़े हुए और बोलेः हम इस चीज पर मानवता के भविष्य की दृष्टि से नज़र डालना चाहते हैं। एक सीधा सवाल हमारे सामने हैः क्या एक वैज्ञानिक समाज के लिये जीवित बने रहना संभव है या यह अवश्यंभावी है कि इस प्रकार का समाज आत्मविनाश करे ?

रसल और आइन्स्टीन ने, अन्य अनेक विचारकों के साथ, सम्पूर्ण और वैश्विक निस्त्रीकरण की मांग की, पर उनके परामर्श पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। परिणाम स्वरूप कृपा की वह छोटी सी अवधि (पीरियड ऑफ ग्रेस), पहले अणुबम के निर्माण और मानवजाति के सम्पूर्ण विनाश की इस परिपूर्ण मशीनरी के निर्माण के बीच का सारा समय, बिना किसी उपलब्धि के ही निकल गया।

ईमानदारी से सोचा जाये तो वस्तुस्थिति यह है कि जब तक मानव जाति अपने वर्तमान नाभिकीय अस्त्र-भंडार से मुक्ति नहीं पा लेती, एक अग्नि प्रलय न केवल संभव है, वह निश्चित है; अगर आज नहीं तो कल, इस वर्ष नहीं तो अगले वर्ष। इस संसार को कई बार नष्ट करने योग्य, अस्त्र भंडार जमा कर लेने के बाद, अब हम जितने भी क्षण जी रहे हैं, उधार के वक्त पर जी रहे हैं, मानव जाति के जीवन का प्रत्येक दिन एक उधार का दिन है, प्रत्येक महीना उधार का महीना है।

यह कितनी विडम्बनापूर्ण स्थिति है कि वह मानव जाति जो ऊंचे-ऊंचे मानवीय आदर्शों के लिए त्याग और बलिदान करती आई है, पशुओं, पक्षियों, जीव-जंतुओं और यहां तक कि वनस्पतियों की विलुप्त होती हुई प्रजातियों के लिए चिंतित होती रही है, आज ऐसी निम्नतर बुनियादी स्थिति में आ गई है कि उसके लिए अपने जीवित बचे रहने की आशा करना भी एक बहुत बड़ी बात हो गई है। धरती को स्वर्ग बनाने की, सबको समान, स्वतंत्र और सुखी बनाने की आकांक्षा करने वाले मानव के लिए अपने केवल बचने रहने की आशा निश्चय ही एक लघुतम, विनम्रतम आशा है, क्योंकि यह आशा हमारे व्यक्तिगत जीवन की रक्षा की आशा भी नहीं है, केवल इतना ही चाहती है कि मानव जाति बची रहे, उसकी निरंतरता बनी रहे, यह धरती इस लायक बनी रहे कि हमारी आगामी अजन्मी पीढ़ियां उस पर जन्म ले सकें, जीवित रह सकें। पर यही आशा आज मनुष्य की सभी उच्चतर आशाओं-आकांक्षाओं की देहरी बन चुकी है। इसकी पूर्ति के बिना, न स्वतंत्रता के लिए हमारा संघर्ष आगे बढ़ सकता है, न समानता और न्याय के लिए, क्योंकि अगर यह पूरी नहीं होती तो सब कुछ अंधकार के गहरे गर्त में समा जाएगा। धरती कुछ विशेष किस्म की घासों और कीड़ों-मकौड़ों के अलावा किसी जीव के जीवित रहने लायक नहीं रह जाएगी। मनुष्य की तो बात ही अलग है।

यह आशा आज मानव प्रजाति की मूलभूत बुनियादी आकांक्षा बन चुकी है, जिस पर उसकी

सभ्यता और संस्कृति का सम्पूर्ण प्रसाद चढ़ा है और जिसके खिसकते ही यह सम्पूर्ण ताम-झाम, मनुष्य की महानता और गौरव की सारी कहानियां, ताश के महल की तरह भरभराकर ढह जाएंगी और भविष्य के अजैव अंधकारपूर्ण युग में कोई ऐसा प्राणी भी नहीं बचेगा जो यह याद भी कर सके कि किसी समय मानव नाम का एक जीवन इस धरती पर निवास किया करता था, और अपने-आपको पता नहीं क्या-क्या समझता था।

इस विषय की एक श्रेष्ठ पुस्तक 'द फेट आफ द अर्थ' के लेखक जोनाथल शैल के शब्दों में – अपनी प्रजाति को मिटा देने का यह काम ऐसा नहीं है, जिसे हममें से कोई भी सचेत रूप में करने की वकालत कर सकता हो, बल्कि एक ऐसा काम है, जिसे अपने सामने भी स्वीकार किए बिना, हम किन्हीं परिस्थितियों में सम्पन्न करने की योजना बना रहे हैं क्योंकि इस काम को पूरी तरह से इरादा करके करना असंभव है। इसलिए यह केवल इरादे के साथ किए गए हमारे किसी अन्य कर्म के गौण प्रभाव के रूप में ही आ सकता है, जैसे अपने देश की या स्वाधीनता की या समाजवाद या और ऐसी ही किसी चीज की, जिसमें हम विश्वास करते हों, रक्षा के कर्म के। वैसी स्थिति में खतरे के पूरे खतरे को समझ लें, यह जान और मान लें कि परमाणु अस्त्रों का कोई भी प्रयोग एक व्यापक अग्नि-प्रलय में परिवर्तित हो सकता है और मानव प्रजाति को समाप्त कर सकता है। तो हम कभी इसे नहीं कर सकेंगे। दुर्भाग्य से हमारी राजनीतिक और सैनिक परम्पराएं अपने पूरे ऐतिहासिक अनुभव के बल से, में इस तरह से सोचना सिखाती हैं कि धरती का अलग-अलग प्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्रों में बंटा होना और उन राष्ट्रों का आपसी झगड़े सुलझाने के लिए युद्ध का प्रयोग करना, दुनिया का एक सामान्य स्वाभाविक ढंग है, जबकि वास्तुस्थिति यह है कि दुनिया के प्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्रों में इस तरह के विभाजन की व्यवस्था कभी मानव जाति ने तय करके नहीं की। किसी कमेटी ने इसका प्रस्ताव नहीं किया, किसी संसद ने इसे पारित नहीं किया। यह केवल थी लिखित इतिहास के प्रारम्भिक दिनों से ही और आज भी मौजूद है। स्वतंत्र प्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्रों की इस व्यवस्था की सबसे बड़ी चारित्रिक विशेषता है इसका युद्ध के साथ अविच्छेद सम्बंध। बिना प्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्र के लोग दूसरे लोगों के विरुद्ध युद्ध संगठित नहीं कर सकते थे और बिना युद्ध के प्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्रों की अन्य सैन्य राष्ट्रों से रक्षा करना कठिन था।

प्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्रों की इसी व्यवस्था में परमाणु-अस्त्र युद्ध के हथियारों के रूप में जन्मे, पर दिनों-दिन यह बात स्पष्ट होती जा रही है कि इनका युद्ध से कोई लेना-देना ही नहीं है। वे उसकी सीमाओं को अतिक्रांत कर चुके हैं। आइंस्टीन के शब्दों में परमाणु की मुक्त शक्ति ने हमारी चिंतन प्रणाली के अलावा सभी कुछ बदल दिया है और इसीलिए हम एक अभूतपूर्व संकट में पड़ गए हैं। इस अर्थ में इन अस्त्रों का निर्माण सचमुच क्रांतिकारी है या तो वे अब पूरे संसार को नष्ट करेंगे और या हमें संसार की पूरी परम्परागत राजनीतिक व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन लाना होगा। या तो वे मानव जाति को नष्ट कर देंगे या हमें सोच-समझ कर उन्हें नष्ट करना होगा। उनके विकास के बाद अब यह दोहरा जीवन नहीं चल सकता कि वैज्ञानिकों के रूप में हम उनकी मानव मात्र को समाप्त कर देने की क्षमता को स्वीकार करें और नागरिकों के रूप में उस पूर्व नाभिकीय युग में जीते हुए यह सोचते रहें कि प्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्र युद्ध का प्रयोग अपनी राजनीति के एक अङ्ग के रूप में भी अब कर सकते हैं। यह आइंस्टीन के युग में न्यूटन युग की राजनीति को स्वीकार करना होगा। विज्ञान में तो

हम आइंस्टीन युग में पहुंच गए पर राजनीति में हम पिछड़े ही रह गए। नए युग की आवश्यकताओं के अनुरूप राजनीति परिवर्तन हम नहीं कर सके, हमारे आसन्न संकट का मुख्य कारण यही है। हमारी वर्तमान सरकारें सार्वभौम विनाश के इन उपकरणों से अपने तुच्छ राष्ट्रीय हितों की रक्षा की कोशिश कर रही हैं। जाति की रक्षा के नाम पर पूरी मानव प्रजाति को और देश की रक्षा के नाम पर पूरी पृथ्वी को नष्ट करने की तैयारियां कर रही हैं।

युद्ध का मूल उद्देश्य रहा है कि अपनी ताकत के बल पर शत्रु को झुका कर अपनी बात मनवा लेना और यह स्थिति तभी आ सकती है जब एक या दूसरे पक्ष की शक्ति चूर-चूर हो जाए या इतनी थक जाए कि वह दूसरे की शर्तें मानने के लिए विवश हो जाए। पर परमाणु युद्ध में किसी की शक्ति चूर-चूर होने से पहले ही दोनों पक्ष ही पूरी तरह समाप्त हो जाएंगे। युद्ध में एक पराजित हुए बिना दूसरा विजयी नहीं हो सकता, क्योंकि दोनों पक्षों के प्रक्षेपास्त्र दोनों की पूरी आबादी की समाप्ति के बाद भी लड़ते रह सकते हैं। ऐसे युद्ध में कौन जीतेगा और कौन हारेगा? वास्तव में सारी मानव जाति हारेगी और केवल परमाणु अस्त्र जीतेंगे। वस्तुस्थिति यह है कि इस अभूतपूर्व आविष्कार का पहला शिकार स्वयं युद्ध ही है। इन हथियारों की खोज के बाद अब वह कभी भी संभव नहीं है, केवल सर्वनाश ही संभव है और सर्वनाश को युद्ध कोई पागल ही कहेगा। इसीलिए परमाणु युद्ध की बात करना बेमानी है। युद्ध उन पुराने अच्छे दिनों की कहानी है, जब सर्वनाश के ये साधन नहीं खोजे गए थे। अब तो केवल प्रमाणिक सर्वनाश की ही बात की जा सकती है।

यह बात जोर देकर कही जानी चाहिए कि नाभिकीय अस्त्रों ने न केवल परमाणु युद्ध को असंभव बना दिया है, बल्कि परमाणु शक्ति से सम्पन्न देशों के बीच के सभी युद्धों को असंभव बना दिया है। क्योंकि जब तक अपने परमाणु अस्त्रों को सुरक्षित रखते हुए ये देश पारम्परिक अस्त्रों से लड़ते रहेंगे तब तक युद्ध उस निर्णायक स्थिति में पहुंच ही नहीं सकेगा, जिसमें कोई पक्ष झुके, क्योकि उस स्थिति पर पहुंचते ही झुकने वाला पक्ष अपने सिर पर मंडराती हुई हार से बचने के लिए परमाणु अस्त्रों का प्रयोग करना चाहेगा और उनके पहले प्रयोग के बाद पारमाणविक अग्नि प्रलय से संसार का बचना मुश्किल है।

नाभिकीय अस्त्रों ने युद्ध को ही नहीं, उसके साथ जुड़ी हुई राष्ट्रीय प्रभुसत्ता की व्यवस्था को भी असंगत और अप्रासंगिक बना दिया है। संसार को अब यह तय करना है कि क्या वह युद्ध और राष्ट्रीय प्रभुसत्ता की विगतकालीन व्यवस्था को छोड़ कर अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के लिए कोई नई व्यवस्था बनाता है या नाभिकीय हथियारों से पुरावशिष्ट राष्ट्रीय हितों की रक्षा के प्रयत्न में नाभिकीय सर्वनाश के गर्त में गिरता है।

इस दुविधा में दोहरा जीवन, वैज्ञानिक क्षेत्र में परमाणु युग में और राजनीतिक क्षेत्र में पूर्व परमाणु युग में, जीने की कोशिश का वैचारिक परिणाम है। यह सिद्धांत कि नाभिकीय सर्वनाश के भय के कारण नाभिकीय युद्ध नहीं होगा। इस सिद्धांत के अनुसार संसार को भावी नाभिकीय सर्वनाश से तभी बचाया जा सकता है जब प्रत्येक परमाणु शक्ति सम्पन्न देश या गुट अपनी नाभिकीय शक्ति को इतना विकसित कर लें कि उससे आक्रामक देश या गुट की पूरी मानव आबादी को (उसके प्रथम आक्रमण को झेलने के बाद भी नष्ट किया जा सके। राष्ट्रपति कैनेडी और जानसन के शासन के दिनों के रक्षा सचिव राबर्ट मैक्नमारा के शब्दों में-'सुनिश्चित बरबादी नाभिकीय निवारण सिद्धांत का सारतत्व है। हमारे पास शत्रु को सुनिश्चित रूप से नष्ट करने

की वास्तविक क्षमता होनी चाहिए और इस क्षमता को शत्रु की दृष्टि में विश्वसनीय होना चाहिए, तभी संभावित आक्रमणकारी, आक्रमण से विरत होगा।' इस सिद्धांत के रचयिताओं के अनुसार नाभिकीय सर्वनाश से मुक्ति, नाभिकीय अस्त्रों में ही निहित है। सर्वनाश से बचने का यही तरीका है कि दुश्मन के और उसके साथ अपने सर्वनाश की पूरी तैयारी करते रहो, सुनिश्चित सर्वनाश की पूर्ण मशीनरी बनाओ और उसे निरंतर विकसित करते रहो। चर्चिल के विदग्ध शब्दों में 'सुरक्षा आतंक की संतान है और बचाव सर्वनाश का जुड़वां भाई।'

यह सिद्धांत वास्तव में इस बात का प्रमाण है कि हम लोग परमाणु युग के लायक राजनीतिक व्यवस्था तैयार नहीं कर पाए हैं। इसमें दो विरोधी उद्‌देश्य संघर्षरत हैं। पहला है मानव प्रजाति बची रहे और दूसरा यह कि राष्ट्रीय हितों की रक्षा हो। पहला इस स्थापना में व्यक्त होता है कि प्रत्येक पक्ष डरा रहे और दूसरे पर आक्रमण न करे, दूसरा इसमें कि अपने राष्ट्रीय हितों के लिए प्रत्येक पक्ष दूसरे को नाभिकीय आक्रमण की धमकी दे सके। पर यह एक विरोधाभास नहीं, एक वास्तविक अंतरविरोध है। युद्ध की धमकी से युद्ध को रोके रखना ज्यादा समय तक संभव नहीं होगा। परिणामस्वरूप महाशक्तियों की नीतियों में कभी तो सुरक्षा पर जोर दिया जाता है और कभी आतंक पर। एक क्षण मानव प्रजाति के बचाव की चिंता की जाती है तो दूसरे क्षण उसके सर्वनाश की धमकी दी जाती है, क्योंकि कोई भी धमकी तब तक प्रभाव नहीं डालती, जब तक कि विश्वसनीय न हो और उसकी विश्वसनीयता उसके कार्यरूप में परिणित किए जाने की वास्तविकता पर निर्भर करती है, इसलिए इस सबके बीच निश्चित केवल यही है कि किसी भी क्षण यह संसार एक अग्नि प्रलय में भस्मीभूत हो सकता है।

जब एक महाशक्ति किसी सामरिक कल्पना को स्वीकार करती है तो उसे एक सिद्धांत कहा जा सकता है, जब दोनों विरोधी महाशक्तियां उसे मानती हैं तो उसे एक व्यवस्था कहा जा सकता है और जब दोनों उस व्यवस्था के नियमों का पालन करने के लिए साल्ट जैसे समझौते करती हैं और चाहती हैं कि अन्य राष्ट्र उन समझौतों में शामिल हों, तब कहना चाहिए कि वह व्यवस्था पूरी तरह से संस्थापित हो चुकी हैं। आज नाभिकीय निवारण का सिद्धांत इसी स्थिति तक पहुंच गया है और सार रूप में संसार की वर्तमान स्थिति यह है कि सभी देशों की नाभिकीय शक्ति जैसे एक ही जगह एकत्र हो गई है-एक ऐसी मशीनरी के रूप में जो जब कोई देश नियम तोड़ कर पहले परमाणु बम का प्रयोग करेगा, पूरे संसार को समाप्त करके उसे और शेष सभी को दंडित कर सकेगी और इस तरह हर परमाणु शक्ति सम्पन्न देश को पूरे संसार को समाप्त करने का वीटो अधिकार प्राप्त हो गया है। इस तरह दुनिया ने जाने-अनजाने अपनी संहारक शक्ति को तो एक कर लिया है, पर उसके संबंध में अंतिम निर्णय कर सकने की अधिकारी किसी केंद्रीय व्यवस्था की रचना नहीं की है, निर्णय का अधिकार हर एक सदस्य को दे दिया है। इनमें से कोई भी अपने राष्ट्रीय हितों को सबके जीवित रहने के अधिकार से अधिक महत्वपूर्ण मान सकता है और सबके सामूहिक विनाश की पहल कर सकता है। प्रत्येक सदस्य को सबको मार देने का अधिकार वाली इस पागल व्यवस्था से हम यह आशा कर रहे हैं कि वह इस संसार को नाभिकीय प्रलय से बचाए रखेगी।

वास्तव में नाभिकीय निवारण का यह सिद्धांत एक ऐसा बौद्धिक पर्दा है, जिसके पीछे छिपाकर सर्वनाश की मशीनरी का निर्माण किया जा रहा है और ऐसे तर्क पेश किए जा रहे हैं, जिनसे लगे कि संसार को बचाए रखने के पवित्र उद्‌देश्य से

ही विभिन्न देश दिन-रात अपने अस्त्रागारों को नाभिकीय हथियारों से सम्पन्न कर रहे हैं।

यह पूछा जा सकता है कि आखिर विनाश का यह सारा तामझाम किसके लिए खड़ा किया गया है। यह सारे सिद्धांत किस मूल वस्तु की रक्षा के लिए गढ़े गए हैं? वह वस्तु है तथाकथित राष्ट्रीय हित प्रभुत्व क्षेत्र की रक्षा या स्वतंत्र राष्ट्रों की प्रभुसत्ता, जिसकी रक्षा के नाम पर सर्वनाश का विराट तंत्र रचा गया है। आज हमारे सामने एक तरफ मानव जीवन और सम्पूर्ण पार्थिव सृष्टि है और दूसरी तरफ स्वतंत्र प्रभुसत्ता सम्पन्न राष्ट्रों की व्यवस्था। हमें इनमें से एक को चुनना होगा। यदि हम इस बात को स्वीकार करते हैं कि विश्व में परमाणु की वर्तमान स्थिति मानव प्रजाति को सदा सदा के लिए समाप्त करने के लिए पर्याप्त है कि एक परमाणु युद्ध से उत्पन्न अग्नि प्रलय में सभी मनुष्यों के साथ सभी मानवीय उद्देश्य भी भस्मीभूत हो जाएंगे और सृष्टि का यह खेल हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगा और ऐसा अग्निप्रलय किसी के पागल निर्णय, कम्पयूटर की किसी गलती या केवल किसी दुर्घटना से किसी भी क्षण मच सकता है। तो हमें चाहे हम किसी भी राजनीतिक दृष्टिकोण के क्यों न हों, विश्व को नाभिकीय अस्त्रों से मुक्त करने के कर्म में संलग्न हो जाना चाहिए। जैसे हमने नाभिकीय हथियारों को बनाने का निश्चय किया, हम उन्हें समाप्त करने का भी निश्चय कर सकते हैं। जैसे हमने प्रभुसत्ता सम्पन्न राष्ट्रों की व्यवस्था में रहना चुना, वैसे हम किसी वैकल्पिक राजनीतिक व्यवस्था को भी चुन सकते हैं। हमें यह मानना होगा कि नाभिकीय अस्त्रों के निर्माण ने हमारी वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था को, स्वतंत्र प्रभुसत्ता सम्पन्न राष्ट्रों की व्यवस्था हो, असंगत बना दिया है। कालातीत कर दिया है, पुरावशेष बना दिया है। यह व्यवस्था और इसकी निर्मात्र संस्थाएं इतिहास का कूड़ा हो गई हैं और इस कूड़े को साफ किए बगैर हमारा बचे रहना मुश्किल होगा। वे हमारे गले का फंदा बन गई हैं और इस फंदे को काटे बगैर हमारा जिंदा रहना असंभव होगा। भौतिक विज्ञान के बुनियादी ज्ञान के बाद हम इस जानकारी के साथ जीने के लिए नियतिबद्ध हैं कि मानव जाति को समाप्त कैसे किया जा सकता है, पर इस कारण हम अपने-आपको समाप्त करने के लिए नियतिबद्ध नहीं हैं, हम जीना चुन सकते हैं।

पारमाणविक अग्निप्रलय का जो संकट हमारे सिर पर मण्डरा रहा है, उसके मूल में यह अंतर्विरोध निहित है कि मनुष्य ने परमाणु शक्ति की खोज से जैसा क्रांतिकारी परिवर्तन विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कर दिया है। उसके अनुरूप परिवर्तन वह समाज और राजनीति के क्षेत्र में नही कर सका है। नाभिकीय अस्त्रों ने अपनी संहारकता में देशों और महाद्वीपों की सीमाएं लांघ कर सम्पूर्ण पृथ्वी को एक ही इकाई बना दिया है, पर मनुष्य की रचनात्मकता अभी तक छोटे-छोटे राष्ट्रों और उनके तथाकथित राष्ट्रीय हितों से बाहर नहीं निकल पाई है। जब तक स्वतंत्र प्रभुसता सम्पन्न राष्ट्रों की वर्तमान व्यवस्था बनी रहेगी, वह युद्धों के द्वारा अपने आपसी झगड़े सुलझाने की इतिहास व्यापी परम्परा से छुटकारा नहीं पा सकती और जब तक परमाणु अस्त्र बने रहेंगे, उनमें से किसी भी युद्ध के पारमाणविक सर्वनाश से परिणत हो जाने का खतरा मौजूद रहेगा।

पहले कहा जा चुका है कि परमाणु अस्त्रों के आविष्कार ने युद्ध को नकारा और असंभव बना दिया है, क्योंकि युद्ध राजनीतिक समस्याओं के सुलझाव का वह उपयोगी तंत्र था जिसमें हिंसा को ढाला जाता था, इसलिए युद्ध को नकारा करके परमाणु अस्त्रों ने राजनीति और हिंसा का युगों पुराना संबंध तोड़ दिया है, क्योंकि यह विलगाव

वैज्ञानिक ज्ञान की अनिवार्य प्रगति पर आधारित है, इसलिए स्थायी और अंतिम है।

यदि हम अपनी प्रजाति को बचाए रखना चाहते हैं, यदि हम चाहते हैं कि यह पृथ्वी इस योग्य बनी रहे कि हमारी संतानें और उनकी संतानें इस पर फूलती-फलती रह सकें तो हमें दो काम करने होंगे। सार्वभौम निरस्त्रीकरण और ऐसे राजनीतिक तंत्र का आविष्कार जिसके माध्यम से उन सब सवालों को शांतिपूर्वक हल किया जा सके, जिन्हें अब तक के इतिहास में युद्ध के द्वारा हल किया गया है। सबसे पहले तो हमें सभी नाभिकीय अस्त्रों से संसार को मुक्त करना होगा, उन्हें नष्ट करना होगा। पर इतने से काम नहीं होगा, जब तक उनके साथ ही परम्परागत अस्त्रों को भी नष्ट नहीं किया जाता। क्योंकि तब तक राष्ट्र अपनी रक्षा किसी भी प्रकार के हथियारों से करते रहेंगे, वे पूर्ण प्रभुता सम्पन्न बने रहेंगे और जब तक वे प्रभुता सम्पन्न हैं, वे फिर कभी भी अपने आपको परमाणु हथियारों से लैस कर लेंगे। उन्हें कौन इससे रोकेगा। यदि हम गंभीरता से पारमाणविक निरस्त्रीकरण चाहते हैं तो हमें परम्परागत निरस्त्रीकरण की भी मांग करनी ही होगी और इसका मतलब होगा केवल परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों का ही निरस्त्रीकरण नहीं, सार्वभौम निरस्त्रीकरण। सार्वभौम निरस्त्रीकरण ऐसे वैकल्पिक राजनीतिक तंत्र की खोज के बिना संभव नहीं है, जो अंतर्राष्ट्रीय विवादों को शांतिपूर्वक सुलझा सके, प्रभुता सम्पन्न राष्ट्रों की वर्तमान व्यवस्था का स्थान ले सके। निरस्त्र प्रभुताहीन राष्ट्रों की एक विश्व पंचायत जैसी किसी चीज, एक विश्व सरकार जैसी किसी राजनीतिक व्यवस्था के बिना परमाण सर्वनाश से हमारा बचना अब असंभव है।

एक नाभिकीय अग्निप्रलय में मानव जाति के सम्पूर्ण विनाश की प्रबलतम संभावना आज हमारे जीवन का सबसे बड़ा सत्य है। आज हमारी दुनिया का सबसे बड़ा अंतर्विरोध पूंजीवादी और समाजवादी शिविरों के बीच में नहीं, दो महाशक्तियों और तीसरी दुनिया के बीच में नहीं, शोषकों और शोषितों के बीच में नहीं, सम्पूर्ण मानव जाति के अस्तित्व और उसके सम्पूर्ण विनाश की प्रबलतम संभावना के बीच में है, मनुष्यमात्र और नाभिकीय अस्त्रों के बीच में है, शेष सब अंतर्विरोध गौण है, अपनी ही प्रजाति के भीतर के हैं। वह बुनियादी अंतर्विरोध जिसे किसी एक पक्ष के सम्पूर्ण विनाश के बिना सुलझाया नहीं जा सकता है, मानव जाति और नाभिकीय हथियारों के बीच का अंतर्विरोध है।

विकल्प 1985-86

जवाहर लाल नेहरू महाविद्यालय बांदा की वार्षिक रिपोर्ट

लघु-कथा

सत्संग

-सुशील डावर 'साथी'

सत्संग में स्वामी जी क्या उपदेश देते हैं?

''-सदा सच बोलो, आपस में मिलजुल कर रहो, मांस, अण्डे और मदिरा से सदा दूर रहो, इत्यादि, इत्यादि।''

-फिर तो में भी सत्संग जाऊंगी। इस बार अपनी बेटी निनी को भी अपने साथ ले जाऊंगी।

-उसकी तो पूरी टिकट लगेगी रेल में?

-ले लूंगी।

-आप आधी टिकट ही ले लेना। फिर तुम्हारी बेटी लगती भी नहीं बारह वर्ष से अधिक। टी.टी.ई. ज्यादा बोले तो कह देना बेटी मेरी है या तुम्हारी। फिर हम तो सत्संग जा रहे हैं, कहीं ऐसी वैसी जगह नहीं।

★★

अनमोल वचन

''आवरण के धोखे में कभी न आओ। खोल कर देखो कि भीतर क्या माल है।''

– डेल कार्नेमी

ब्रह्मांड यात्रा

यूरेनस - सातवां घर

डा. अवतार सिंह ढींढसा
094634-89789

साथियो, गैसों द्वारा निर्मित एवं पानी से भी हल्के शनि ग्रह की रोचक यात्रा के पश्चात् आओ आगे बढ़ते हैं.......वो नीला दिखाई देने वाले तारे की ओर। साथियो, इस नीली रोशनी वाले तारे को शनि ग्रह से तो केवल आंखों द्वारा भी देखा जा सकता है। परन्तु पृथ्वी से इसे दूरबीन के बगैर नहीं देखा जा सकता। परन्तु शनि को छोड़ना इतना आसान नहीं..... तुम्हारी क्यों (?) वाली जिज्ञासा की मुझे बहुत चिंता रहती है। लो नोट करो...शनि ग्रह के गुरुत्वाकर्षण से बच कर जाने के लिए हमारे यान को एक सैकिण्ड में 37 कि.मी. तय करने पड़ेंगे जबकि पृथ्वी के गुरुवाकर्षण से निकलने के लिए एक सैकिण्ड में 11.2 कि.मी. तय करने पड़े थे। यूरेनस की शनि से दूरी लगभग 144 करोड़ कि.मी. है तथा यदि हम एक ऐसे यान में सवार हो जाएं जो कि एक सैकिण्ड में 12 कि.कमी. की गति से चलता हो तो भी हमें शनि से चल कर यूरेनस तक पहुंचने के लिए 2.5 वर्ष लग जाएंगे!!!

साथियो, यह तो आप जानते ही हैं कि सूर्य से पृथ्वी की दूरी को 'सौर इकाई' माना गया है तथा इस प्रकार बुध की सूर्य से दूरी है 0.39 सौर इकाईयां। ....शुक्र ग्रह की दूरी 0.72, पृथ्वी की एक सौर इकाई....मंगल 1.52, ...शनि 9.5,... यूरेनस की दूरी 19.18 सौर इकाईयां। यूरेनस एकदम से ठण्डी गैस एवं बर्फ के कणों द्वारा निर्मित है । जितने समय तक हम यह रास्ता तय करेंगे, उस दौरान पहले यूरेनस की खोज के बारे में एक वैज्ञानिक कथा सुन लो-

जर्मनी देश का विलियम हर्शेल नाम का एक संगीतकार इंग्लैंड में रहता था। संगीत के साथ-साथ उसे 'तारा विज्ञान' में भी अत्यन्त रूचि थी। उसकी बहन केरोलिन (caroline) भी अच्छी गायिका थी। परन्तु अपने भाई हर्शेल के साथ वह प्रायः अपने घर की छत पर से तारों की पड़ताल करती रहती। मार्च 13, 1781 की ठण्डी रात्रि को वह अपनी दूरबीन से 'मिथुन राशि' (Gemini) के तारों की जांच-पड़ताल कर रहा था। उसे इस राशि के तारों में चतुर्थ स्थान पर एक विशेष 'तारा' दृष्टिगोचर हुआ। परेशानी इस बात की थी कि वह शेष तारों की भांति नज़र नहीं आता था। उस ने अपनी बहन को भी यह तारा दिखाया। परन्तु यह तारा केवल दूरबीन द्वारा ही दिखाई देता था। यह अन्य तारों की भांति केवल एक 'पवांयट' की भांति नहीं दिखाई देता, बल्कि यह तो एक छोटी सी प्लेट की भांति गोल दिखाई देता था। बहन ने चौंक कर पूछा कि कहीं यह 'धूमकेतू' तो नहीं?

हर्शेल ने सोचा कि नियमों के अनुसार गणना करनी पड़ेगीं परन्तु उसे अद्भुत किस्म की खुशी भी अनुभव हो रही थी कि दूरबीन के बगैर ही आंखों द्वारा दृष्टिगोचर होते 'शनि' ग्रह से पार शायद एक अन्य नया ग्रह मिल गया, जिसे केवल दूरबीन के द्वारा ही देखा जा सकता था।

साथियो, तारों में से कौन सा ग्रह है एवं कौन सा तारा....यह पता लगाने हे‍ु भी कुछ नियम हैं जैसे यह निश्चित करना होता है कि क्या यह नया ग्रह शेष ग्रहों की भांति तारों की पृष्ठभूमि में अपनी स्थिति भी बदलता है अथवा नहीं? इस प्रकार कई दिनों के पश्चात् जब 'प्लेटनुमा तारे' ने शेष तारों की पृष्ठभूमि में अपना स्थान बदला तो हर्शेल ने इसे नया ग्रह कहा तथा समकालीन तारा-वैज्ञानिकों ने

भी इसे नया ग्रह मान लिया। दूसरा नियम यह है कि यदि इस का पथ अत्याधिक 'अण्डाकार' हुआ तो 'धूमकेतु', और यदि कम आकार हुआ तो नया ग्रह।

यह जो नया ग्रह 'विलिययम हर्शेल' ने 13 मार्च, 1781 को खोजा था....यही है बर्फीली गैस का बहुत बड़ा गोला-यूरेनस। वास्तव में यूरेनस को देखा तो पहले भी गया था परन्तु इस को एक तारा ही माना गया था। वास्तव में यदि 'यूरेनस' के इतिहास को देखें तो अंग्रेजी तारा-विज्ञानी 'जॉन फ्लेगस्टिड' ने इसे वृष (Taurus) राशि में 1690 ई. में ही देख लिया था। परन्तु 91 वर्षों के पश्चात् 1781 ई. में हर्शेल ने इस की पहचान एक ग्रह के रूप में करवाई तथा खोज उसके नाम पर ही हो गई।

हर्शेल को अपने संगीत के पेशे के साथ-साथ दूरबीन बनाने एवं उस द्वारा तारों को देखने का भी शौक था । आप हैरान होंगे कि अपने लिए 6.5 सै.मी. की परिवर्तित दूरबीन बनाने से पूर्व वह 200 बार दूरबीन बनाने में असफल हुआ था। तब तक वह छोटी-बड़ीकुल 400 दूरबीनें बना चुका था। उसने अपने घर को ही एक 'ढलाई का कार्य करने वाला कारखाना बना लिया था। शौक हो हो तो ऐसा, जिसने विश्व को कुछ खोज कर दिया।

विश्व के सात अजूबों के बारे में आपने सुन ही रखा है। उस मसय के सात अजूबों के पश्चात् हर्शेल द्वारा बनाई गई 40 फुट अर्थात 12.2 मीटर परिवर्तक वाली दूरबीन को विश्व का 'आठवा-अजूबा' भी माना गया।

हर्शेल ने इस का नाम अपने देश के सम्राट 'जार्ज' के नाम पर 'जार्जियन तारा' रखा था। परन्तु हर्शेल के सम्मान स्वरूप कुछ समय तक इसे 'हर्शेल ग्रह' के नाम से ही पुकारा गया। साथियो, ज्योतिष शास्त्र में इसे आज तक भी हर्शेल के नाम से ही जाना जाता हैं। सर्वप्रथम जर्मन तारा विज्ञानी 'जोहनन बोर्ड' ने इस का नाम 'यूरेनस' रखा था। परन्तु सन् 1850 ई. में अगले ग्रह 'नेप्चयून' बारे प्रकाशित एक 'पेम्फलिट' में अंग्रेज तारा विज्ञानी 'जॉन काऊच' एडम्स' ने इसे 'यूरेनस' ही लिखा। बस तब से इसे 'यूरेनस' ही कहा जाने लगा।

जिस समय यूरेनस को खोजा गया हर्शेल के साथ उसकी बहन केरोलिना भी तो थी, परन्तु यह खोज उसके नाम पर क्यों नही हुई ? दोस्तो, यह सच में महिलाओं के अधिकारों की बात है। परन्तु केरोलिना का नाम इस की खोज के साथ नहीं जोड़ा गया। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि विज्ञान के क्षेत्र में उस समय महिलाओं की भागीदारी नहीं के बराबर थीं। एक कारण यह भी था कि अन्य तारा विज्ञानियों के साथ विचार-विमर्श सदैव हर्शेल ही करता था। परन्तु यहां पर मैं केरोलिना की बहादुरी भी बता दूं.....उसने गाना छोड़ दिया तथा अपने भाई की भांति स्वयं दूरबीन लेकर 10 वर्षों में 8 धूमकेतु ढूंढ दिये!!!

वास्तव में जब यूरेनस की खोज हुई, तब तक गणित में 'केल्कुलस' की खोज हो चुकी थी। इस से ग्रहों की कुछेक गणनाओं द्वारा इस की गति की गणना की जा सकती थी। परन्तु यूरेनस जैसे अत्यन्त धीमी गति के साथ परिक्रमण करते हुए ग्रह की गति के बारे में गणना करना अत्यन्त कठिन था। परन्तु जर्मन तारा विज्ञानी 'जोहनन बोडे' ने 1784 ई. में यूरेनस के 'ग्रह-पथ' का पता लगा लिया गया था।

लो दोस्तो, हम यूरेनस के अत्यन्त समीप पहुँचने वाले हैं। यूरेनस हमारी पृथ्वी से पुँज में 15 गुना बड़ा है। इसके वातावरण में मुख्य रूप में हाईड्रोजन , हीलियम, अमोनिया हैं। कुछ अंश मिथेन एवं पानी के ठण्डे कणों से बना हुआ है तथा सौर मध्य रेखा के साथ इसके ग्रह-पथ के झुकाव 23.5 डिग्री है परन्तु यूरेनस का झुकाव है-98 डिग्री। इसे समझना थोड़ा सा कठिन हैं। लो समझो...एक पेन को अपने हाथों में इस प्रकार पकड़ो कि उसका कैप वाला सीधा खड़ा हिस्सा तुम्हारी बांह के साथ 90 डिग्री का कोण बनाए। अब पेन को हाथ में पकड़े किसी शक्तिशाली धक्के अथवा 'ज्वार-तरंगीय बल'

हुए ही कैप वाले हिस्से को अपनी ओर घुमाओ। अब आप सूर्य हैं, तथा पेन यूरेनस का धुरा। चलो पेन को धीरे-धीरे अपनी बाजू के साथ लगा लो। बाजू के साथ लगते समय धुरी ने तय किया 90 डिग्री का कोण और 'यूरेनस' का उत्तरी ध्रुव (कैप) चला गया सूर्य के सामने। परन्तु इस को 8 डिग्री बाजू से और नीचे ले कर आओ....तो बन गया 98 डिग्री का कोण। पहली स्थिति में यह धुरा पश्चिम से पूर्व की ओर परिक्रमण करता था तथा 98 डिग्री के झुकाव के पश्चात् यह घूम तो पश्चिम से पूर्व की ओर ही रहा है। परन्तु पृथ्वी से देखते हुए अब इस की दैनिक गति पूर्व से पश्चिम हो जाएगी। इस प्रकार यूरेनस की गति और भी आश्चर्यजनक है। यह तो अपने ग्रह-पथ पर लगभग पहिये के समान सरक ही रहा है। इस का तापमान -216 डिग्री सेल्सियस हैं यह अत्यन्त ठण्डी गैसों का गोला है । इस पर चला फिरा जा सकता है तथा न ही इतनी ठण्ड में कोई व्यक्ति यहां पर जीवित रह सकता हैं इस प्रकार से एलिन्यस वाली थ्योरी भी काल्पनिक ही है। इसका गुरूत्वाकर्षण 8.87 मी. प्रति सैकिण्ड है तथा अपनी पृथ्वी के 9.8 मी. प्रति सैकिण्ड प्रति सैकिण्ड के लगभग बराबर सी है।

दोस्तो, आपको शनि, ग्रह के आकर्षक छल्ले तो अभी तक भूले नहीं होंगे। परन्तु वो देखो ध्यान से, यूरेनस के इर्द-गिर्द भी छल्ले हैं....1, 2, 3,....कुल 13 छल्ले हैं। ये काले कणदार पदार्थ के बने हुए है। तथा ये छल्ले अत्यन्त मध्यम एवं व्यास में 10 मीटर तक चौड़े है। सर्वाधिक चमकदार छल्ले का नाम 'अप्सीलोन' है। आप में से अब कोई यह अवश्य पूछेगा कि ऐसे छल्ले अस्तित्व में कैसे आए होंगे? दोस्तो, इन छल्लों के घेरों के बीच में रिक्त स्थान एवं इन की अपारदर्शिता से अनुमान लगाया गया है कि ये आयु में अभी अपने यौवन में ही हैं। अर्थात ये छल्ले यूरेनस के साथ नहीं बने, बल्कि बाद में अस्तित्व में आए? इन छल्लों में जितना भी पुंज है, वह कभी एक चन्द्रमा रहा होगा जिसको ने बिखरा दिया होगा।

दोस्तो, हमारी पृथ्वी का एक चाँद है, परन्तु यूरेनस के चाँदों की गिनती करो.....यूरेनस के अब तक खोजे गए चाँदों की संख्या 27 है......27 चन्दा मामे.....प्रत्येक की अपनी तिथि, अपनी संक्रांति, अपनी पूर्णिमा......वाह! यूरेनस के आकाश में खूब दीपमाला होती होगी। परन्तु आपका अगला प्रश्न शायद यह हो कि इतने चन्द्रमाओं के नाम तो मुश्किल से ही रखे गए होंगे? दोस्तो, इन चन्द्रमाओं के नाम शेक्स्पीयर एवं अलग्जैंडर पोप द्वारा लिखी कथाओं के पात्रों के नामों पर रखे गए हैं जैसे कि मरांडा, एरियल, अंब्रील, टाईटेनिया, ओब्रोन इत्यादि।

दोस्तो, बातो-बातों में कहीं इसके दिन-रात के बारे में न भूल जाएं। अनुमान लगाओ कि यूरेनस की दैनिक गति कितनी होगी? इस की दैनिक गति 17 घंटे 24 मिनट के लगभग है अर्थात् 8 घंटे 12 मिनट का दिन एवं इतनी ही लम्बी रात्रि....!!! दोस्तो, रुको, जल्दी-जल्दी में किया गया हिसाब-किताब कई बार गलत भी हो जाता है। लो, ध्यान दो.... क्योंकि यूरेनस अपने ग्रह-पथ पर घिसट रहा है । परिणाम स्वरूप इसके उत्तरी ध्रुव पर इतनी ही लम्बी रात रहती है। परन्तु जो गणना हमने ऊपर की थी वह ग्रह की मध्य रेखा पर लागू होती है जो कि यूरेनस के संबन्ध में सही नहीं हैं। इसका एक वर्ष पृथ्वी पर 84 वर्षों के समान है।तात्पर्य यह है कि पृथ्वी पर 84 वर्षीय वृद्ध की आयु यूरेनस पर केवल एक वर्ष ही होगी। यह अपने ग्रह-पथ पर एक सैकिण्ड में 68 कि.मी. का रास्ता तय कर लेता है। परन्तु हमारे ज्योतिषियों की आंखें बिना दूरबीन के इतनी तीव्र गति के साथ गतिशील यूरेनस का प्रभाव उसके सम्मुख बैठे व्यक्ति पर कैसे माप लेती हैं...समझ से बाहर की बात है। इस का चुंबकीय क्षेत्र पृथ्वी पर अथवा इस के निवासियों पर कितना होता होगा....इसका अनुमान आप स्वयं ही ला लेना। यूरेनस एक राशि में सात वर्ष रहता हैं ज्योतिष के अनुसार या तो मानव के सात वर्ष अत्यन्त 'अच्छे'

रहेंगे अथवा बहुत ही 'बुरे'...यह अनुमान आप स्वंय ही लगा लेना कि यह कितना सत्य है एवं कितना असत्य? परन्तु सन् 1781 से पूर्व इसके प्रभाव के बारे में ज्योतिष चुप था। साथियो, यूरेनस आजकल 'मीन' राशि में है।

दोस्तो, यूरेनस की खोज के पश्चात् सन् 1788 में पता चला कि यूरेनस तो निश्चित किये गए ग्रह-पथ पर नहीं चल रहा? अनेकों तारों विज्ञानियों ने न्यूटन एवं कैप्लर के नियमों के अनुसार ग्रह पथ की पुनः गणना की। परन्तु यूरेनस उस पथ पर नहीं चल रहा था। वैज्ञानिक पेरशान थे। कईयों ने तो न्यूयून एवं कैप्लर के नियमों पर ही संदेह करना शुरू कर दिया था।

ये नियम गलत नहीं थे। इसी प्रकार कुछ वैज्ञानिकों ने सोचा कि वास्तव में यूरेनस को उसके ग्रह-पथ से भटकाने वाला उस से दूर....कोई और भी कारण हो सकता है। यह क्या कारण थे ? हम अपनी यात्रा के आगामी पड़ाव में विचार करेंगे . ..यात्रा जारी है, बस, साथ चलने की हिम्मत एवं साहस रखना। (क्रमशः)

-हिन्दी अनुवाद
बलवंत सिंह लैक्चरार

प्रगतिशील लेखक डॉ. रणजीत की उपलब्ध पुस्तकें

1. भारत के प्रख्यात नास्त्कि-पेपरबैक-
मूल्य -300 रुपये
2. आजादी के परवाने (शहीद स्वतंत्रता संग्रामियों के जीवनवृत्त)-सजिल्द, दो खण्डों में
मूल्य : 800 रूपये
3.प्रतिनिधि कविताएं : रणजीत
मूल्यः सजिल्द-200, पेपर बैक-100
5. प्रगतिशील कविता के मील-पत्थर (संपादित कविताएं) - मूल्य - 100 रूपये
6. धर्म और बर्बरता -तीसरा संस्करण,
मूल्य- 120 रुपये
7. साम्प्रदायिकता का ज़हर (दूसरा संस्करण)
मूल्य-150 रुपये
8. जाति का जंजाल- (संपादित)
मूल्य - 175 रुपये
9. खतरे के कगार तक (कविताएं) सजिल्द,
मूल्य - 80 रुपये
10. हम नास्तिक कैसे हुए- गोरा
मूल्य 50 रुपये

नोट- एक हजार या अधिक मूल्य की पुस्तकें मंगाने पर 20 प्रतिशत् छूट के साथ डाक खर्च भी हमारा ***पुस्तकें मंगवाने के लिये इस नंबर पर सम्पर्क करेंः*** **090193 03518**

पृष्ठ 10 का शेष (राम स्वरूप वर्मा...)

और स्वयं उसे कभी स्वीकार नहीं किया। वर्मा जी ने संविद सरकार में सचिवालय से अंग्रेजी टाइप राइटर्स हटवा दिये और पहली बार हिन्दी में बजट पेश हुआ जो परंपरा अब तक बरकरार हैं । वर्मा जी ने बजट में खण्ड-6 का समावेश किया जिसमें प्रदेश के कर्मचारियों/अधिकारियों का लेखा-जोखा होता हैं इसके पहले सरकारें बिना किसी लेखा-जोखा के अपने कर्मचारियों को वेतन देती थीं। वर्मा जी के चिन्तन में समग्रता थी । उन्होंने क्रांति को परिभाषित करते हुए कहा कि क्रांति 'जीवन के पूर्व निर्धारित मूल्यों का जनहित में पुनर्निधारण करना है।' वे बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर, चार्वाक, कार्ल मार्क्स और गौतम बुद्ध के विचारों से प्रभावित थे पर कहीं कहीं इनसे असहमत भी थे। यही बेबाकी उनकी खासियत थी। आज हमें उन जैसे नेताओं की बेहद जरूरत है क्योंकि पूरा देश एक दिशाहीन राजनीति के गहरे गड्ढे की ओर जा रहा है। उनके विचार हमारा बहुत बड़ा संबल हैं। राजनीति के इस कबीर का निधन 19 अगस्त 1998 के दिन हुआ था।

डा. रणजीत की पुस्तक ''भारत के प्रख्यात नास्तिक'' से साभार

तर्कशील हलचल

तर्कशील सोसायटी हरियाणा का द्विवार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

तर्कशील सोसायटी, हरियाणा की द्विमासिक बैठक व वैज्ञानिक जागरूकता सेमिनार का आयोजन 17 मई, 2015 को रविदास धर्मशाला, तरावड़ी में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के प्रारम्भ में आपसी परिचय के उपरान्त राज्यकार्यकारिणी सदस्य मा.बलजीत भारती ने 'तर्कशील क्या है?' विषय पर अपने विचार रखते हुए स्पष्ट किया कि सही और गलत की पहचान करके सही को स्वीकार करना तर्कशीलता है। राज्य कार्यकारिणी सदस्य डा. परमानंद ने अपने वक्तव्य में होने वाली बीमारियों से बचाव पर बोलते हुए स्वच्छता अपनाने का आह्वान किया । उन्होंने ब्लड प्रेशर वास्तविकता और भ्रांतियां पर भी विचार रखे। डा. राजेश पेगा ने अंधविश्वासों के कारण बढ़ती बीमारियों पर अपनी बातचीत रखी। कार्यकारिणी सदस्य सुरेश रनवा ने अपने जीवन के घटनाक्रम को स्पष्ट करते हुए कहा कि तर्कशील सोसायटी के वैज्ञानिक विचारों ने उनके जीवन पर प्रभाव डाला है। प्रैस सचिव सुभाष तीतरम ने लगातार वैज्ञानिक चिन्तन से जुड़े साहित्य अध्ययन पर बल दिया। 'तर्कशील पथ' पत्रिका के संपादक प्रा. बलवन्त सिंह ने सभा में महिलाओं की अच्छी भागीदारी पर अपनी खुशी जाहिर की एवं महिलाओं में अंधविश्वास के कारण हो रहे शोषण पर चिन्ता व्यक्त की, एवं तर्कशील साहित्य के अध्ययन से अंधविश्वास से मुक्ति पर बल दिया। तर्कशील सोसायटी, हरियाणा के अध्यक्ष गुरमीत सिंह ने विश्व स्तर एवं भारतभर में तर्कशीलता के बढ़ते कदम एवं इन पर हो रहे हमलों का ज़िक्र किया। उन्होंने कहा कि आने वाला समय विज्ञान का है, जो तर्कशीलता का ही पड़ाव है।

'धर्म की उत्पत्ति एवं विकास' विषय पर सेमिनार

तर्कशील सोसायटी की इकाई, कालांवाली जिला सिरसा की ओर से दिनांक 14-6-2015 को राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल, कालांवाली में एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका विषय था 'धर्म की उत्पत्ति व विकास एवं वर्गीय समाज उसकी भूमिका'। इस विचार गोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में का० कशमीर सिंह वैज्ञानिक, दार्शिनिक ने कार्लमार्क्स के दृष्टिकोण से धर्म की उत्पत्ति व उसके विकास तथा समाज में उसकी भूमिका की व्याख्या की। उन्होंने पदार्थ, जीव व चेतना के विकास पर बोलते हुए बताया कि मनुष्य जाति को दो विचारों-आध्यात्मवादी एवं पदार्थवादी फिलॉस्फी से समझा गया है। आध्यात्मवाद के अनुसार इस दुनिया को बदला नहीं जा सकता। जो हो रहा है वह भगवान की मर्जी से हो रहा है। परन्तु वैज्ञानिक अथवा मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अनुसार इस दुनिया (समाज) को पूर्ण रूप से बदला जा सकता है'- तथा वर्तमान पूंजीवाद की व्यवस्था को ध्वस्त कर के समाजवादी व्यवस्था कायम कर के पूरे समाज की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। अर्थात् समाज को इन्सान बदल सकता है। ऐतिहासिक तौर पर सर्वप्रथम धर्म की उत्पत्ति आस्ट्रेलिया महाद्वीप में हुई। भारत में

सिंधू घाटी की सभ्यता के दौरान धर्मिक चिन्हों की पुष्टि होती है। धीरे-धीरे सामाजिक, आर्थिक बदलाव के अनुसार धर्म ने अपना स्वरूप बदला। सारांश यह है कि समाज में पूंजी पैदा करने वाले वर्ग के खिलाफ ही धर्म की भूमिका रही है।

तीन घण्टे के वक्तव्य के परचात् प्रश्न-उत्तर का सिलसिला भी चला। जिसमें मा॰ बूटा सिंह, मा॰ सुरेन्द्रपाल सिंह, प्रि॰गुरमेज सिंह, सुखदेव रतन, जसवन्त सिंह पटवारी, हरदेव अग्रोहिया, मैडम जसवन्त कौर, मनजीत कौर तथा वकील सिंह, पावेल सिंह, मा॰ शमशेर चोरमार, मुल्ख पिपली, ने भाग लिया।

मंच संचालन मा॰ अजायब जलालाना ने किया तथा अन्त सभी साथियों का धन्यवाद इकाई प्रधान मा॰ जगदीश सिंहपुरा ने किया। इस के अतिरिक्त इस विचार गोष्ठी में मा॰ कृष्ण कायत, कुलदीप सिंह, स्वतन्त्र भारती, नरेश महेश्वरी, श्रवण पत्रकार व जगतार सिंह भी शामिल थे।

★★

अर्जक संघ का राष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न

अर्जक संघ का चतुर्थ राष्ट्रीय सम्मेलन गेट पब्लिक लाईब्रेरी एण्ड इन्स्टीच्यूट, गर्दनीबाग, पटना-02, बिहार में 9 और 10 मार्च 2015 को सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया। इस सम्मेलन में राष्ट्रीय समिति के दो वर्षो के कार्यकाल का रिपोर्ट और आय-व्यय का लेखा-जोखा पेश किया गया। करीब 15-20 प्रतिनिधि सदस्यों ने राष्ट्रीय महामंत्री की द्विवार्षिक रिपोर्ट पर बहस में भाग लिया और कई तरह के प्रश्न उठाये। अंत में राष्ट्रीय महामंत्री ने सारे प्रश्नों का उचित जवाब दिया और फिर सदन ने भारी बहुमत से रिपोर्ट को पास किया। दूसरे दिन प्रथम सत्र में चुनाव अधिकारी के देख-रेख मे राष्ट्रीय समिति के लिए सदस्यों का निर्वाचन हुआ। संगठन से संबंधित ये सारी प्रक्रिया प्रतिनिधि सभा के सामने पूरी पारदर्शिता एवं लोकतांत्रिक तरीके से सम्पन्न हुई। चुनाव में राष्ट्रीय समिति के लिए मा.एस.आर. सिह को राष्ट्रीय अध्यक्ष, मा. मनोज कुमार को राष्ट्रीय महामंत्री, एंव मा. एस.एन.पी. प्रभाकर को राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष चुना गया जबकि मा.रधुनाथ सिंह यादव को सांस्कृतिक समिति का राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा मा. ब्रह्मदेव प्रसाद को आर्थिक समिति का राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया।

इस दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के खुले सत्रों मे पुनर्धारित जिन तीन विषयों पर गंभीर चर्चा चली वह विषय इस प्रकार है- **(1)** देश में चल रही व्यवस्था परिवर्तन की लड़ाई मे अर्जक संघ और मिलते-जुलते विचारधारा वाले संगठनो की भूमिका और इनके बीच समन्वय के उपाय। **(2)** देश के नवनिर्माण मे शिक्षा, साहित्य और मीडिया की भूमिका। वर्तमान दौर मे इनकी भूमिका का आंकलन करते हुए बदलाव के उपाय। **(3)** वर्तमान सामाजिक एवं राजनीतिक माहौल मे दलित, पिछड़े, आदिवासी, अल्पसंख्यक, शोषित, अर्जक आदि विभिन्न नामों से पुकारे जाने वाले लोगों की समस्या और उनका सामाधान। इन तीनों ही विषयों पर अर्जक संघ के वक्ताओं के अलवा अन्य मानववादी संगठनों के प्रतिनिधि वक्तागण, लेखक, पत्रकार, राजनीतिक नेता, अधिवक्ता, सम्पादक, सामाजिक कार्यकर्ता एवं सोशल मीडिया से जुड़े लोगों ने मंच से सभा को सम्बोधित किया। सभा को सम्बोधित करने वालों में

मुख्य अतिथि मा.बसावन भगत (पूर्व कारा मंत्री, बिहार सरकार) मा. रामबाबू कन्नौजिया, सम्पादक- अर्जक साप्ताहिक), मा.अरूण कुमार मंडल (सम्पादक- पाल आवाज), मा.बुद्धशरण हंश (सम्पादक- अम्बेदकर मिशन), प्रो.जयराम प्रसाद सिंह (सम्पादक-शोषित, मा.राजवीर सिहं यादव (सम्पादक- यादव शक्ति), मा.डी.एन.एस आनन्द (साइंस फॉर सोसायटी), मा. डॉ.राजीव कुमार (प्रो.हड्डी विभाग, पीएमसीएच), मा.प्रो.तैयब हुसैन (हिन्दी विभाग, भागलपुर), मा. कृष्ण नन्दन यादव (विधायक), मा.लक्ष्मण चौधरी (मानववादी चिंतक), मा.डा. हरिनारायण ठाकुर (प्राचार्य), मा. मुद्रिका सिंह यादव (पूर्व मंत्री), मा. बलविंदर सिंह बरनाला (महासचिव,फिरा), मा. रविभूषण सिन्हा (अधिवक्ता,उच्च न्यायालय), मा. रघुनीराम शास्त्री (अम्बेदकरवादी पत्रकार), मा. जिवनेश्वर रजक (उप सचिव,बिहार सरकार, मा. चन्द्रशेखर(बी.पीएस.एस), मा.रविन्द्र सिहं (विधायक), मा.रामचन्द्र कटियार (मानववादी चिंतक), मा.मालादास (सोशल मीडिया), मा.संजय मौर्या (पत्रकार), मा.ललिता सिंह, मा.उद्धानचन्द राय एवं अन्य। प्रायः सभी वक्ताओं ने समान विचारधारा के संगठनों के बीच समझ एवं समन्वय बनाकर बड़ा आन्दोलन खड़ा करने की बात कही। सभी वक्ताओं ने इस दिशा में अर्जक संघ द्वारा राष्ट्रीय मंच से किये गए इस पहल को सराहा। सम्मेलन में राजनीतिक संरक्षण मे पल-बढ रहे ब्राह्मणवाद पर चिंता व्यक्त की गईं। इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया की भूमिका संदेह के घेरे में रही। देश की शिक्षा व्यवस्था में गिरावट, निजीकरण और दिनों-दिन होती महंगी शिक्षा पर घोर चिंता व्यक्त की गई। देश के मजदूर किसानों की बदहाली को वक्ताओं ने उठाया। वक्ताओं ने कहा की देश मे व्याप्त इस हताशा और निराशा के माहौल मे अर्जक संघ की सोच वाली व्यवस्था से ही देश के बहुजन, शोषित, अर्जकों की सारी समस्याओं का निदान होगा। सम्मेलन में विषमता मूलक सामाजिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्था की जड़ ब्राह्मणवाद के खिलाफ मजबूती के साथ लड़ाई लड़ने एवं समता पर आधारित मानववादी व्यवस्था की स्थापना मे लगे रहने का पुनः संकल्प लिया गया। सम्मेलन मे विभिन्न प्रदेशों से आए कलाकारों ने क्रांतिकारी संगीत और अंधविश्वास का भंडाफोड़ करने वाले जादू से लोगों का खूब मनोरंजन किया। सम्मेलन स्थल पर लगे 8-10 बुक स्टॉल से करीब दो-ढाई लाख की पुस्तक, स्टीकर, कैलेण्डर, पॉकेट डायरी आदि की बिक्री हुई। महामना फूले और अम्बेदकर की जीवन से जुड़ी प्रदर्शनी को देखकर लोगों ने खूब सराहा।

अर्जक संघ के लोगों के साथ-साथ मा.अरूण कुमार मंडल (सम्पादक- पाल आवाज), प्रो.जयराम प्रसाद सिंह (सम्पादक- शोषित), मा.राजवीर सिहं यादव (सम्पादक- यादव शक्ति), मा.डी.एन.एस आनन्द (साइंस फॉर सोसायटी) मा. बलविंदर सिंह बरनाला (महासचिव, फिरा) समेत व्यवस्था परिवर्तन के सारे विद्वान प्रतिनिधि दोनों दिन लगातार कार्यक्रम को बारीकी से देखते रहें। देश के कई राज्यों से विभिन्न मानववादी संगठनों के कई प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन में बतौर वक्ता के तौर पर भाग लिया। ऐसी आशा है कि अर्जक संघ का यह सफल चतुर्थ राष्ट्रीय सम्मेलन अर्जक मिशन के कारवां को देशभर में आगे बढाने मे सहायक साबित होगा।

जय अर्जक! जय भारत!

(मनोजकुमार)

राष्ट्रीय महामंत्री, अर्जक संघ

मो० 09431510239/08969311200

अनमोल-विचार

पुस्तकों को विज्ञान सेअगुवाई लेनी चाहिए न कि विज्ञान को पुस्तकों से ।

- - ***सर फ्रांसिस बेकन***

बाबाओं के काले कारनामे

तांत्रिक द्वारा महिला से दुष्कर्म की कोशिश

लुधियाना, 6 जून -यहां पर एक तांत्रिक द्वारा भूत प्रेत का डर दिखाकर एक महिला को ताबीज बांधने के बहाने उसके साथ दुष्कर्म के प्रयास का मामला सामने आया है। इस दौरान महिला ने शोर मचा दिया और तांत्रिक मौके से फरार हो गया। अपने पति के आने पर महिला ने घटना के बारे में उसे बताया, जिस पर उसने घटना की सूचना पुलिस को दी। थाना स.भगत सिंह नगर की पुलिस ने दोषी तांत्रिक मोहम्मद साहिल उर्फ शहनाज़ के खिलाफ बलात्कार के प्रयास का केस दर्ज करके उसे काबू कर लिया है। पुलिस ने दोषी को अदालत में पेश किया, जहां से उसे जेल में भेज दिया गया है।

जानकारी के अनुसार पीड़िता ने पुलिस को बताया कि उसका पति कोई काम नहीं करता था। वह नौकरी करती थी, परन्तु इससे घर का गुजारा नहीं चल रहा था। इसके अलावा उनके घर कोई संतान भी नहीं थी। पीड़िता के अनुसार किसी व्यक्ति ने उसे दोषी का नंबर दिया था कि वह तांत्रिक है उवं उसकी समस्या का समाधान कर सकता है। इसके पश्चात उसने तांत्रिक को अपने घर मिलाया। मुलज़िम ने पहले अकेले में उसके पति को बताया कि उसकी पत्नी में कोई भूत-प्रेत है, जिसके कारण पूजा पाठ करवाना पड़ेगा। इसके पश्चात मुलज़िम ने महिला को अकेले बातचीत करते हुए बताया कि उसके पति को भूत-प्रेतों ने बांध रखा है एवं उन दोनों को इल्म वाला ताबीज बंधवाना पड़ेगा। पीड़िता के अनुसार मुलज़िम 1 जून को उनके घर में आया और उसके पति को पूजा का सामान दरिया में तारने के बहाने बाहर भेज दिया। पीछे से मुलज़िम ने ताबीज बांधने के बहाने पहले तो उससे अश्लील हरकतें की तथा फिर बलात्कार की कोशिश की, जिस पर उसने शोर मचा दिया और मुलज़िम भाग गया।

पंजाबी टि्ब्यून 05-06-2015

विवाहिता की शिकायत पर डेरे में से बाबा गिरफ्तार

मलौद, 21 जून : कुलदीप कौर पुत्री रोशन लाल निवासी रेलवे कालोनी जितवाल कलां के बयानों पर मलौद पुलिस द्वारा गांव सोहिया में से बाबा केसरी दास को उसके डेरे में से गिरफ्तार किया है। उल्लेखनीय है कि कुलदीप कौर के बयानों पर उसके पति सुरेन्द्र सिंह, सास जसपाल कौर निवासी सोमल खेड़ी एवं बाबा केसरी दास निवासी गांव सोहिया के खिलाफ थाना मलौद में केस दर्ज किया था। कुलदीप कौर ने अपने बयानों में बताया था कि विवाह उपरान्त उसका ससुराल परिवार उससे और दहेज की मांग करता हुआ मारपीट करता था तथा बाबा केसरीदास के साथ नाजायज संबंध बनाने के लिए भी मजबूर करता था, जोकि उस के ससुराल परिवार के घर अक्सर आता-जाता था। इस केस की पैरवी कर रहे थानेदार सतविन्द्र सिंह ने बताया कि शिकायत के पश्चात् लड़की का पति सुरेन्द्र सिंह एवं सास जसपाल कौर फरार है जिनकी खोज जारी है, परन्तु तीसरे कथित दोषी बाबा केसरी दास को गांव सोहिया से उसके डेरे में से गिरफ्तार किया गया है तथा तफ्तीश की जा रही है।

-पंजाबी ट्रिब्यून 22-6-14

भूत निकालने के नाम पर तांत्रिक ने पीटा, जख्मी

अबोहर (फिरोजपुर)-गांव किलियांवाली निवासी एक ढोंगी तांत्रिक ने भूत निकालने के नाम पर राजस्थान के मटीली निवासी एक व्यक्ति को लाठी से बुरी तरह पीट-पीट कर घायल कर दिया। घायल को मटीली के अस्पताल में भर्ती कराया गया है। थाना खुईयां सरवर पुलिस ने घायल के परिजनों के बयानों पर तांत्रिक के खिलाफ मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरू कर दी है। तांत्रिक अपना धूना छोड़ कर फरार बताया जाता है।

राजस्थान के थाना सादुलशहर के अंतर्गत आते गांव खाट सजवार निवासी राधेश्याम कई दिनों से बीमार था। काफी जगह इलाज करवाने पर भी उसे कोई आराम नहीं मिला तो लोगों के कहे अनुसार वह राधेश्याम को पंजाब के गांव किलियांवाली निवासी प्रेम नामक तांत्रिक बाबा के पास लेकर आए। परिजनों के अनुसार इस बाबा ने राधेश्याम पर भूत होने की बात कहकर उसको एक कमरे में बंद कर लिया और डंडे से बुरी तरह पीटा। इस घटना के बाद राधेश्याम का भूत तो बाहर नही आया, लेकिन उसके सारे शरीर में सूजन आ गई। उसकी हालत बिगड़ती देख परिजनों ने उसे मटीली के सारी अस्पताल में भर्ती करवाया और खुईयां सरवर पुलिस को इसकी सूचना दी। पुलिस ने इस ढोंगी तांत्रिक के खिलाफ मामला दर्ज कर उसे काबू करने के प्रयास शुरू कर दिए। जानकारी के अनुसार इस ढोंगी तांत्रिक से गांव के लोग पहले ही परेशान थे **_अमर उजाला 23-3-14_**

अंधविश्वास में 6 लोगों की हत्या

दिल्ली-झारखंड के ग्रामीण इलाके इन दिनों अंधविश्वास की काली छाया के लपेटे में है। इस वजह से बीत एक हफ्ते में गुमला,सिमडेगा और बलामू में छह लोगों को डायन-बिसाही बताकर मार डाला गया। इनमें 4 महिलाएं हैं। सिमडेगा में तो पंचायती फरमान जारी कर 2 महिलाओं को मौत के घाट उतारा गया। सबूत मिटाने के उद्देश्य से इन शवों को गांव वालों ने जंगल की एक गुफा में छुपा दिया इन सभी मामलों की पुलिस जांच कर रही है। सूत्रोनुसार अत्यंत नक्सल प्रभावित और पिछड़े जिले में शुमार सिमडेगा के कोलेबिरा इलाके में 2 महिलाअओं रतनी देवी और विमला देवी की हत्या कर दी गई उन पर मांववालों को जादू-टोना करने का संदेह था। गुमला में भी एक बुजुर्ग दम्पति की गांव वालों ने डायन होने के आरोप में लाठी डंडे से पीट-पीट कर हत्या कर दी।

-सिटी मीडिया 16-5-2015

अंधविश्वास ने ली मां और अजन्मे बच्चे की जान

सिडनी-7 अप्रैलः आस्ट्रेलिया में एक गर्भवती महिला द्वारा धार्मिक कारणों से दूसरे व्यक्ति का खून चढ़वाने से मना करने से उसकी व अजन्मे बच्चे की मौत हो गई। 7 माह की गर्भवती जेहोवाह्स विटनेस की उपासक महिला रक्त कैंसर से पीड़ित पाई गई थी। इलाज के लिए उसे तत्काल खून चढ़ाने की जरूरत थी। लेकिन जेहोवाह्स विटनेस के उपासकों के लिए ऐसा करना निषिद्ध है। महिला का इलाज करने वाले चिकित्सकों ने बताया कि 28 वर्षीय मरीज ने खून चढ़वाने से इन्कार कर दिया। चिकित्सकों का मानना है कि यदि वह खून चढ़वा लेती तो मां और बच्चा दोनों बच जाते।

-दैनिक सवेरा (8-4-2015)

बच्चों का कोना

पनडुब्बी बनाइए

पनडुब्बी ऐसा जलयान है जो सागर की गहराइयों में और सतह पर भी तैरता हैं पनडुब्बी के एयर टेंक में पानी की मात्रा कम-ज्यादा करके पनडुब्बी का घनत्व बदला जाता है। क्यों न आप भी अपनी एक पनडुब्बी बनाएं? आपकी पनडुब्बी भी अलग-अलग गहराइयों में उतरेगी-चढ़ेगी।

जरूरी सामान :

● एक छोटी प्लास्टिक की बोतल, प्लास्टिक टयूब (ग्लूकोस चढ़ाने वाली ट्यूब बेहतर रहेगी) कुछ मझोले आकार के कंकड़ और पानी से भरी एक बाल्टी।

इस तरह से करें :

●बोतल में कुछ कंकड़ रखकर बोतल का मुँह ढक्कन से बंद कर दे। बोतल को पानी में छोड़कर देख लें, वह पानी में डूबनी नहीं चाहिए।

●ढक्कन में छेद बनाकर उसमें ट्यूब फंसा दें। बोतल के तले के पास एक और छेद बना दें आपकी परडुब्बी तैयार हो गई। इसे पानी से भरी बाल्टी में छोड़ दें । छेद से पानी बोतल में आता है और पनडुब्बी डूब जाती है।

●अब टयूब से बोतल में धीरे-धीरे हवा फूंकें। पनडुब्बी ऊपर आने लगती है।

●हवा फूंक कर या खींचकर आप अपनी पनडुब्बी को ऊपर नीचे-गोते लगवा सकते हैं।

कुछ चर्चा :

मछलियों के शरीर में हवा भरी छोटी-छोटी थैलियां रहती हैं, जिन्हें दबाकर या फैलाकर मछलियां पानी में नीचे-ऊपर होती हैं।

-0-

कागज जलेगा नहीं

जरूरी सामानः

● एक सिक्का, कागज़, प्लयार (पेंचिस) और मोमबत्ती।

इस तरह करें:

● सिक्के को कागज़ में कसकर लपेट लें कसकर लपेटने से कागज़ का सिक्के (धातु) से सम्पर्क भली-भांति बना रहेगा

● इस प्लायर (पेंचिस) की मदद से मोमबत्ती की लौ पर पकड़ें।

● देखिए कागज़ जलता है क्या?

● सिक्का काफी गर्म हो जाता है, इसलिए सिक्के को छूने की भूल न करें।

कुछ चर्चा :

प्रायः धातुएं उष्मा की सुचालक रहती हैं। हमारे प्रयोग में, जैसे ही कागज़ गर्म होने लगता है कागज़ से ऊष्मा सिक्के में स्थनांतरित होती जाती है और पूरे सिक्के में फैलती जाती है। फलस्वरूप कागज़ इतना गर्म नहीं होता कि वह जल जाए।

स्वास्थ्य

डायबिटीज से बचाव के लिए खास फूड

डायबिटीज को साइलेंट किलर ऐसे ही नहीं कहा जाता। जेनेटिक हिस्ट्री के अलावा सही खानपान की कमी, एक्सरसाईज न करने, लाइफस्टाईल ठीक न होने और ज्यादा कैलोरी लेने से डायबिटीज का खतरा बना रहता है। शुगर युक्त और फैटी फूड इस बीमारी को बढ़ावा देते हैं। यहां ऐसे कुछ फूड प्रोडक्टस की लिस्ट है, जो डायबिटीज की रोकथाम में मदद करते हैं।

स्ट्राबेरी–सिर्फ टेस्ट में ही नहीं, स्ट्राबेरी सेहत के लिए भी लाजवाब है। फिर उसे रेगुलर न खाने का कोई कारण नहीं है। वैज्ञानिकों के मुताबिक स्ट्राबेरी खाने से एलडीएल कोलेस्ट्रोल एवं रक्त में मौजूद वसा को कम करने वाला एक खास प्रोटीन बॉडी में एक्टीवेट हो जाता है। ये दोनों ही डायबिटीज को बढ़ावा देने वाले प्रमुख कारक हैं। रिसर्च में यह भी पाया गया है कि स्ट्राबेरी ब्लड ग्लूकोज कम करने में भी फायदेमंद है।

हल्दी–रिसर्च से यह बात साफ हो चुकी है कि हल्दी में पाया जाने वाला क्योरक्यूमिन तत्व डायबिटीज को रोकने में मददगार है। इस दिशा में अभी और रिसर्च होना बाकी है, लेकिन रिसर्च के हालिया नतीजों से हल्दी के फायदों को नजरअंदाज नहीं कर सकते।

दही और पनीर–दही और पनीर का सेवन भी डायबिटीज के लिए फायदेमंद है। लेकिन ये दोनों ही उत्पाद तभी फायदेमंद हैं, जब कम वसायुक्त हों। विशेषज्ञों के अनुसार इन डेयरी उत्पादों में पाया जाने वाला हेल्दी बैक्टीरिया इसके लिए जिम्मेवार है।

दालचीनी–ब्लड ग्लूकोज के बढ़ते स्तर को कंट्रोल करने में दालचीनी की भूमिका अहम है। इंसुलिन सेंसेटीविटी में सुधार करने के साथ-साथ दालचीनी ट्रिग्लिसाइड के स्तर और एलडीएल कोलस्ट्रोल को कम करने में मददगार है।

पालक–एक ब्रिटिश अध्ययन के अनुसार पालक का रोजाना इस्तेमाल डायबिटिज के खतरे को 14 प्रतिशत तक कम कर सकता है।

सेब–एंथोस्यानिन नामक तत्व सेब में बहुतायत में पाया जाता है, जो ब्लड शुगर को नियंत्रित करने में अहम भूमिका अदा करता है।

रेडवाइन–इसमें मौजूद रिज्वेराट्रोल नामक तत्व इंसुलिन के रेगुलेशन से ब्लड शुगर कंट्रोल करता है। ज्यादा इस्तेमाल करने की बजाए सीमित मात्रा में इसे लेने से रेडवाइन दवा की तरह असर करती है।

अमर उजाला 23-9-14

फेफड़ों की बीमारी में है लाभदायक लहसुन

लंदनः फेफड़ों की बीमारियों से बचाने में लहसुन काफी मददगार है। हाल ही में एक अध्ययन में खुलासा हुआ है कि सिस्टिक फाइब्रोसिस (फेफड़ों सेसंबंधित वंशानुगत बीमारी) के मरीजों के लिए लहसुन लाभदायक है। यूनिवसिर्टी ऑफ एडिनबर्ग सेंटर फॉर इनफवशस डिजीज़ के शोधकर्ताओं का कहना है कि लहसुन में पाया जाने वाला एलिसिन रसायन फेफड़ों को संक्रमित करने वाले बैक्टीरिया को खत्म करता है। ऐसे में एलिसिन फेफड़ों की संक्रमण बीमारियों में बेहतर उपचार साबित हो सकता है। यह शोध प्लॉस वन जर्नल में प्रकाशित हुआ है।

– ***एजेंसी***

तेज दिमाग के लिए धीरे बोलें

अगर हम तेज बोलते हैं तो स्पीच कोकंट्रोल करने वाला हमारे दिमाग का हिस्सा काम करना बंद कर देता हैं एक ताजा अध्ययन में इस बात का खुलासा हुआ है। दिमाग के इस हिस्से को फेंच फिंजिशियन पियरे पॉल ब्रोका के नाम पर 'ब्रोकास एरिया' कहा जाता हैं यनपनिवर्सिटी ऑफ केलिफोर्निया, वर्कले और जॉन हॉप्किन्स यूनिवर्टिी के वैज्ञानिकों ने अब पता लगाया है कि ब्रोकास एरिया एक तरह से स्विच ऑफ हो जाता है। जब हम ऊंचा बोलते हैं। अध्ययन के दौरान न्यूरो साईंटिस्ट ने दिमाग के लैंग्वेज सेंटर को मुख्य रूप से बातचीत ग्रहण करने और प्रस्तुत करने वाले दो हिस्सों में बांट दिया था। इस आधार पर वैज्ञानिकों का कहना है कि ब्रोकास सेंटर स्पीच प्रोडक्शन का केंद्र न होकर दिमाग के विभिन्न हिस्सों में सूचनाओं के संयोजन का कार्य करता है। इस खोज से स्ट्रक, एपिलेप्सी और ब्रेनइंजरी जैसी परेशानियों से निजात पान में मदद मिल सकती है।

भ्रूण काशिकाओं से स्वस्थ कार्टिलेज किया तैयार

लंदन-आर्थराइटिस की बीमारी से जूझ रहे बुजुर्गों के लिये एक अच्छी खबर हैं वैज्ञानिकों ने भ्रूण स्टंम कोशिकाओं से स्वस्थ कार्टिलेज तैयार करने में सफलता पाई है। इससे ऑर्थराटिस का इलाज ढूंढने की उम्मीद जगी हैं ब्रिटेन के मैनचेस्टर विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने बताया कि स्टेम सेल की मदद से कार्टिलेज को पहुंचे नुकसान की भरपाई नई कोशिकाओं के निर्माण में की जा सकती है। चूहे पर प्रयोग में इस कार्टिलेज ने एक सामान्य कार्टिलेज की तरह ही काम किया। यह शोध स्टेम सेल्स ट्रांसलेशनल मेडिसिन जर्नल में प्रकाशित हुआ। ***-एजेंसी***

मारा जाएगा मलेरिया का परजीवी

मेलबर्न-आस्ट्रेलिया नेशनल यूनिवर्सिटी के विज्ञानियों ने मलेरिया के परजीवी को मारने का नया तरीका खोज कर बड़ी कामयाबी हासिल की है। मलेरिया से दुनियाभर में हर साल लगभग पांच लाख लोगों की मौत हो जाती है। विज्ञानियों का कहना है कि ऐसे अणुओं को खोज निकाला गया है, जो मलेरिया के परजीवी की सतह पर लगे साल्ट पंप को बेकार कर सकते हैं। पंप के बेकार होने से परजीवी में नमक भर जाता है और उसकी मौत हो जाती है। खोज महत्वपूर्ण है क्योंकि मलेरिया परजीवी वर्तमान में मौजूद लगभग सभी दवाओं को बेअसर साबित कर चुका है।

कैंसर की वजह बन सकता है ब्ढ़ता वज़न

मोटापे से कई लोग अक्सर परेशान रहते हैं । अपने साइज को लेकर उन्हें कई बार मजाक का केंद्र भी बनना पड़ता है। मोटापे से कई तरह की बीमारियां घर करने लगती हैं। हाल ही में हुए एक शोध में पता चला है कि किशोरावस्था से लेकर मेनोपॉज (माहवारी बंद होने) के बाद भी महिलाओं का बढ़ता वज़न ब्रैस्ट कैंसर की वजह बन सकता है।

ब्रिटेन की यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ लंदन के वैज्ञानिकों के अनुसार अतिरिक्त वसा से एस्ट्रोजन हार्मोन का स्तर बढ़ जाता है जो आगे चल कर कैंसर का कारण बनता है। इसके अलावा अधिक वज़न वाली महिलाओं के रक्त में इंसुलिन की मात्रा अधिक रहती है जो कोशिकाओं को अनियंत्रित होकर बढ़ने में मदद करती हैं और महिला कैंसर का शिकार हो जाती है।

केस रिपोर्ट

फिर आग का तांडव रुक गया

-बलवंत सिंह, लैक्चरार

गुरमुख सिंह का परिवार छोटा सा परिवार है। परिवार में वह उसकी पत्नी उनका बड़ा लड़का गुरदीप सिंह एवं बहू गुरमीत कौर है। उनका छोटा लड़का हरविन्द्र विदेश में गया हुआ है। पहले वे अपने गांव में रहते थे, परन्तु बाद में उन्होंने अपनी जमीन बेच कर दूसरे गांव में ले ली और खुद शहर मे आकर एक किराए के मकान में रहने लग गए। कुछ वर्ष तक वे किराए के मकान में रहे तथा फिर उन्होने शहर से बाहर की ओर एक नई बस रही कालोनी मे प्लाट लेकर अपना मकान बना लिया और फिर उस नए मकान में आकर रहने लग गए।

अपने नए मकान में रहते हुए उन्हें अभी कुछ महीने बीते थे कि उनके घ्‍र में विचित्र घटनाएं घटित होनी शुरू हो गई। शुरू-शुरू में तो उनके घर में रखे हुए कपड़े कटने लग गए। एक महीने के अंदर उनके लगभग 50 सूट कट गए। कई सूट तो ऐसे भी कट गए, जोकि अभी सिलवाए भी नहीं थे। फिर कुछ समय के पश्चात घर में रखे हुए कपड़ों को आग लगनी शुरू हो गई। ज्यादातर जलने वले अथवा कटने वाले कपड़े गुरमुख सिंह की पत्नी मोहिन्द्र कौर के ही होते थे। पहले तो जिस चारपाई पर मोहिन्द्र कौर सोती थी, उस चारपाई पर रखे हुए बिस्तरों को आग लग गई। उसके पश्चात मोहिन्द्र कौर की पेटी में रखे हुए कपड़ों को आग लग गई, उस पेटी को ताला नहीं लगा हुआ था। पेटी में रखे हुए सभी कपड़े ही जल कर राख हो गए। फिर एक कमरे में रखे हुए लकड़ी के बैडों को आग लग गइ। मोहिन्द्र कौर के तो पहनने वाले सभी कपड़े जल चुके थे। घर के बाकी सदस्यों के पहननेवाले कपड़े तथा अन्य बिस्तर इत्यादि भी अधिकतर जल चुके थे।

घर की ऐसी हालत देखकर पहले तो वे आसपास के बाबाओं के पास इस समस्या के समाधान के लिए गए। सभी बाबाओं ने अपने-अपने ढंग से इस समस्या के समाधान के लिए अपने प्रयत्न किए तथा उनका काफी खर्चा भी करवा दिया, परन्तु ज्यों-ज्यों वे इलाज करते रहे समस्या और भी बढ़ती चली गई। पहले तो केवल कपड़े कटते ही थे, ज्यों-ज्यों बाबा लोग इसे जिन्न, भूत-प्रेत का साया बताते गए, समस्या बढ़ कर कपड़ों में आग लगने तक तथा फिर घर से पैसे गुम होने व आभूषण गुम होने तक पहुंच गई। धीरे-धीरे घर से काफी पैसे व कई आभूषण भी गुम हो गए।

अंत में उनका एक रिश्तेदार जो तर्कशील सोसायटी के जनहित कार्यो से परिचित था, उन्हें लेकर मेरे पास आ गया। उनकी व्यथा सुन कर मैंने अपने एक तर्कशील साथी फूल चंद को साथ लिया तथा समस्या के समाधान हेतु उनके साथ उनके घर पहुंच गए।

उनके घर पहुंच कर हमने उनके घर के सभी सदस्यों से अकेले में बारी-बारी बातचीत की तथा दोषी की शिनाख्त कर ली। मैंने काऊंसलिंग द्वारा उसके मन में अपने घर वालों के प्रति बैठी हुई नफरत के मर्म को समझा, फिर सम्मोहन विधी द्वारा उसके मन में बाबाओं द्वारा बिठाए गए भूत-प्रेतों के डर को दूर किया तथा उनकी समस्या का हमेशा के लिए समाधान कर दिया।

कारण क्या थे-प्रत्येक इन्सान की अपना

घर बनाने व उसमें निवास करने की चाहत होती है। गुरमुख सिंह का परिवार जब अपनी गांव वाली जमीन बेच कर शहर में आकर किराए के मकान में रहने लगा था। किराए के मकान में रहते हुए उन्होंने शहर से बाहर की तरफ एक नई बस रही कालोनी में प्लाट खरीद कर उसमें अपनी नई कोठी बना ली। अपनी कोठी का निर्माण होने पर उन्होंने उसमें अपनी रिहायश कर ली। किराए के मकान में रहने के दौरान उनका अपने आस-पड़ौस के साथ काफी अच्छा व्यवहार बन चुका था। खास करके उनकी बहू गुरमीत कौर की कई सहेलियां बन गई थी। अपनी उन सहेलियों के साथ वह अपना हर दुख-सुख सांझा कर लेती थी। यहां तक कि उनके साथ वह अपनी सास की निंदा-चुगली भी कर लेती थी। इस प्रकार उसका दिल वहां पर भली प्रकार से लगा हुआ था।

अब जब वे अपने नए मकान में आ गए, तो उस कालोनी में अभी थोड़े ही घर बसे थे। गुरमीत को अपना नया घर उजाड़ सा प्रतीत होता था। ऊपर से उसकी सास उसके साथ टोका-टाकी करती रहती थी। पहले घर में तो वक्त मिलने पर वह अपनी सहेलियों के साथ बातचीत में अपना समय हंसी-खुशी बिता लेती थी और अपनी सास द्वारा कही गई कड़वी बातों को भी दरकिनार कर दिया करती थी, परन्तु अब आसपास घर ही कम थे और ऊपर से उसका दिल भी किसी से अभी तक नहीं मिला था। अतः वह अपनी सास द्वारा कही गई सभी बातों का बुरा मनाने लगी तथा छोटी-छोटी बात पर मुंह फैला कर बैठने लग गई। इस प्रकार अब दोनों में नाराजगी बढ़ती चली गई।

अब यदि वह इन बातों को लेकर अपनी सास के साथ झगड़ा करके अपने गुस्से का गुबार मन से निकाल लिया करती, तो उसके अवचेतन मन पर इतना अधिक प्रभाव न पड़ता। परन्तु वह किसी के साथ झगड़ा तो करती नहीं थी, बल्कि अपने सारे क्रोध को अंदर ही अंदर पी जाने का प्रयत्न करती। मन पर पड़े हुए इस दबाव के कारण उसे दौरे से पड़ने शुरू हो गए। इसी अवचेतन हालत में वह कह देती थी कि इस मकान को बेच दो और वापिस उसी किराए वाले मकान में चले चलो। उसकी ऐसी बातें सुन कर, अंधविश्वासी होने के कारण, घर वालों को संदेह हो गया कि बहू पर किसी ओपरी-पराई प्रेतात्मा का साया है। अतः वे उसे एक बाबा की चौकी पर ले गए। उस चौकी पर जाकर, वहां पर बैठी हुई महिलाओं की बातें सुन कर उसे पता चला कि एक महिला जो चौकी पर सबसे अधिक खेल रही है, उसके घर में कपड़े कट जाते हैं एवं आग लग जाती है।

बाबा की चौकी पर सुनी हुई बातें गुरमीत कौर के अवचेतन मन पर अत्यधिक प्रभाव डाल चुकी थी। उसे अवचेतन तौर पर अपनी सास से बदला लेने का नायाब नुस्खा मिल गया था। अतः वह उसके पश्चात घर में आकर जब उसका दाव चलता, वह अपनी सास के कपड़े हाथों से फाड़ देती अथवा कैंची से काट देती रही। जब घर वाले ऐसी घटनाओं से डर कर अन्य बाबाओं एवं तांत्रिकों व मुल्ला-मौलवियों के पास जाने लग गए और उन सभी ने जब यह सभी कुछ भूत-प्रेतों एवं जिन्न-जिन्नाओं का कारनामा करार दे दिया तो ऐसे में गुरमीत कौर का अवचेतन तौर पर और भी अधिक हौसला बढ़ता चला गया। अब वह मौका मिलते ही घर में कभी कहीं, तो कभी कहीं आग लगाने लग गई। इसके साथ ही वह मौका पाकर घर में रखे हुए पैसे भी गुम करने लग गई तथा ऐसी ही दशा में उसने घर से कुछ आभूषण भी गायब कर दिए थे।

हमने जब मामले की गहराई से जांच-पड़ताल की तो सभी घटनाओं में गुरमीत कौर का ही हाथ पाया। मैं जब उनके घर में मोहिन्द्र कौर से पूछ-पड़ताल कर रहा था तो उस समय गुरमीत कौर दूसरे कमरे

में तेजी के साथ गई और वहां रखे हुए कपड़ों को आग लगा कर बाहर आ गई। उसे यह सब करते हुए हमारे साथी फूल चंद ने अपनी आंखों से देख लिया और आकर धीरे से मुझे बता दिया था। अतः अब संदेह की कोई गुंजाईश ही बाकी नहीं रह गई थी।

अतः अंत में हमने गुरमीत कौर से बातचीत करनी आरंभ की। शुरू-शुरू में तो वह बातचीत में कोई सहयोग नहीं दे रही थी। बातों-बातों में उसने केवल इतना बताया कि उसे कई भूत-प्रेत दिखाई देते हैं और फिर उसे दौरा पड़ जाता है। बाद में घर वालों से पता चलता है कि घर में रखे हुए कपड़े फट जाते हैं अथवा आग लग जाती है। उसकी मानसिक दशा को समझते हुए मैंने उसे हिप्नोटाईज किया और इस अवस्था में उसके मन में बैठे हुए भूत-प्रेतों के डर को दूर किया। फिर इसी अवस्था में उसने स्वीकार किया कि उनके घर में होने वाली सभी घटनाएं ऐसी ही हालत में उसके हाथों से ही हुई हैं। घर में कपड़े कटने, फटने एवं आग लगने के साथ-साथ घर में से रूपए-पैसे भी उसी ने गायब किए थे। इसके साथ-साथ उसने ही घर से आभूषण भी गायब किए थे। उन आभूषणों को तुड़वा कर बाद में उसने अपने मायके वालों के नाम पर दोबारा नए बनवा लिए थे।

सम्मोहक निद्रा से उठने के पश्चात वह अपने हाथ जोड़ कर अनुरोध करने लगी कि इस सब के बारे उसके ससुराल वालों को कुछ न बताया जाए। मैंने उसे आश्वासन दिया कि यदि वह आगे से अपने घर में ऐसी हरकत नहीं करेगी, तो हम भी इस बात तो हमेशा उसके घर वालों से छुपा कर रखेंगे। अब लगभग एक वर्ष बीत चुका है, उसके पश्चात उनके घर में ऐसी कोई वारदात नहीं हुई।

नोट : ***यह एक सत्य घटना है, परिस्थितियों को देखते हुए पात्रों के नाम व स्थान बदल दिए गए हैं***

बच्चों के अपहरण के गिरोह की अफवाह शरारतपूर्ण :

-डॉ. दिनेश मिश्र

अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष डा. दिनेश मिश्र ने कहा कि पिछले कुछ दिनों से पूरे छत्तीसगढ़ में बच्चों का अपहरण करने वाले गिरोह की अफवाह बड़ी तेजी से फैल रही है, जिसके कारण ग्रामीण व साथ ही शहरों के नागरिक भी भ्रमित हो रहे हैं तथा अपहरणकर्त्ता के शक में अन्जान व्यक्तियों को मारपीट का शिकार होना पड़ रहा है। यह पूरी तरह से सुनियोजित तरीके से फैलाई गई अफवाह है। आम नागरिकों को किसी भी भ्रम में नहीं आना चाहिए तथा कानून हाथ में नहीं लेना चाहिए।

डा. दिनेश मिश्र ने कहा कि आज छत्तीसगढ़ के प्रत्येक जिले व हर गांव में बच्चों के अपहरण करने वाले गिरोह के सक्रिय होने की अफवाह फैल गई है, जबकि अफवाहों का कोई आधार नहीं होता। कहीं-कहीं यह भी सुनने में आ रहा है कि नए-नए निर्माण कार्यों में बच्चे की बलि दी जाती है, इसलिए बच्चों का अपहरण किया जा रहा है, जिससे ग्रामीण आतंकित व भयभीत हो रहे हैं तथा किसी भी अन्जान व्यक्ति पर हमला कर देते हैं। पिछले कुछ दिनों में वन विभाग के कर्मचारियों, फेरीवाले अन्जान व्यक्तियों पर हमले हुए हैं, जिसमें अनेक निर्दोष घायल हुए हैं। पठारीडीह में तो एक व्यक्ति को इतना पीटा गया कि उसकी मृत्यु हो गई।

डा. दिनेश मिश्र ने कहा कि जहां भी पुल, सड़क, पुलिया आदि नए निर्माण हो रहे हैं। उसमें उनके निर्माण के लिए लोहा, सीमेंट, रेत आदि उपयोग होता है, जो उसे मजबूत व सुरखित बनाता है तथा ऐसे निर्माण कार्यों के लिए नर बलि देनेव उसके लिए बच्चे अपहरण करने की बात सिर्फ एक अफवाह है। किसी भी निजी या सरकारी निर्माण में नर बलि या पशुबलि नहीं दी जाती। लोगों को ऐसी अफवाहों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

डा. मिश्र ने ग्रामीणों से अपील की है कि वे यदि उनके गांव में कोई अन्जान व्यक्ति दिखता है, तो भी उसके साथ मारपीट न करें। उसे पुलिस के हवाले करें न कि कानून अपने हाथ में लें। अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति ग्रामीणों से सम्पर्क कर जागरूक कर रही है।

(डा. दिनेश मिश्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष हैं)

मानव जीवन पर मंडराते खतरे

आर.पी.गांधी
मो. 9315446140

धरती पर इन्सान जो कभी जंगली जानवरों का शिकार हुआ करता था और प्राकृतिक आपदाओं, अनेक महामारियों का भी शिकार हो जाता था , इस कारण आबादी में विशेष वृद्धि नहीं होती थी। लेकिन आज इस वैज्ञानिक युग में मानव ने जहां अनेक समस्याओं का समाधान खोज निकाला है वहीं आज भी वह अनेक खतरों से घिरा हुआहै। कुछ मुख्य खतरे निम्न प्रकार से हैंः-

1. इन दिनों सीमा सुरक्षा के नाम पर अरबों-खरबों की मानव मेहनत को बारूद में ढाला जा रहा हैं किसी भी सिरफिरे राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री या तानाशाह केइशारे पर मानवता को राख के ढेर में बदला जा सकता हैं इसलिए दुनिया के हर व्यक्ति का यह दायित्व बनता है कि वह मैत्री, भाईचारा और शान्ति के लिए आरवाज़ उठाए। अगर हम युद्ध में प्रयोग की जाने वाली मेहनत को मानव कल्याण के लिए खर्च करें तो दुनिया के हर व्यक्ति को सम्मानित जीवन जीने का अवसर प्रदान किया जा सकता है। यह तभी सम्भव होगा जब हम पूरे विश्व को एक इकाई मान लें और भिन्न- देशों की सीमाएं समाप्त कर दी जारएं। आजकल कुछ देशों में गृह-युद्ध के कारण हिंसा का तांडव हो रहा है और अंध-धुन्ध रक्तपात हो रहाहै। इससे निर्दोष लोग मारे जा रहे हैं और मानवता तार-तार हो रही है। इस प्रकार की हिंसा विकृत मानसिकता वाले कुछ लोगों की सोच का ही परिणाम हैं इस विकृत सोच को समारात्मक सोच में बदलना अति आवश्यक है।

2. यातायात के नियमों की अनदेखीः

मानव विकास के साथ-साथ यातायात के साधनों में बेतहाशा वृद्ध के अनुपात में न तो सड़कों को चौड़ा किया गया है और न ही उनके रख-रखाव पर उतना ध्यान दिया गया है। यातायात के नियमों की जानकारी भी चालकों को सही ढंग से नहीं दी जाती। हमारे देश में चालकों को प्रशिक्षण देने के लिए विशेष संस्थाएं न के बराबर हैं। चालकों की न ही कोई विशेष परीक्षा ली जाती है जिसके अभाव में अयोग्य चालक भी यातायात के साधनों का प्रयोग करते रहते हैं और दुर्घटनाओं का कारण बनतें हैं। अतः यदि हम चाहते हैं कि सड़क दुर्घटनाओं से बचा जाए तो सर्वप्रथम हमें सड़कों को उचित स्तर का बनाना होगा ताकि वे बढ़ते यातायात को ठीक से संभाल सकें। इसके साथ-साथ हर चालक को पहले उचित प्रशिक्षण देना होगा ताकि वह यातायात के नियमों को समुचित ढंग से समझ सके और उनका ठीक से पालन कर सके। इसे अतिरिक्त यातायात के नियमों का उचित पालन न करने पर कठोर दण्ड का प्रावधान होना चाहिए ताकि यातायात के नियमों को तोड़ने वाले पर अंकुश लगाया जा सके। यातायात के साधनों का उचित रख-रखाव भी यातायात को सुरक्षित बनाता हैं अतः यदि हम चाहते हैं कि हमारी सड़कें सुरक्षित रहें और सड़क दुर्घटना में कोई जान न जाए अथवा कोई घायल नहो तो हमें सड़क संबधित सभी नियमों का बहुत ही सावधानी से पालन करना चाहिए।

3. **भयानक बीमारियों का खतराः**

मानव शरीर अनेक बीमारियों से ग्रस्त हो जाता है। इन बीमारियों में से कुछ बीमारियों का यदि समय पर उचित ईलाज किया जाए तो उनसे छुटकारा पाया जा सकता है। लेकिन कुछ बीमारियां ऐसी हैं जिनसे शत्-प्रतिशत् छुटकारा पाना मुश्किल हो जाता हैं जैसे शूगर, हृदय रोग, कैंसर, एच.आई. वी. आदि। इन बीमारियों के ग्रस्त हो जाने पर

जीवन खतरे में पड़ जाता हैं अतः इंसान को चाहिए कि वह अपने शरीर को स्वस्थ रखने के लिए बचपन से ही स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहे। संतुलित भोजन ग्रहण करें, उचित व्यायाम करें और पर्याप्त मात्रा में नींद लें। तनाव से बचें और अपने मानसिक स्वास्थ्य का भी शारीरिक स्वास्थ्य की तरह ध्यान दें। शरीर में किसी भी तरह का विकार अथवा बीमारी आने पर योग्य डाक्टर से ईलाज ले। किसी भी बीमारी का पता लगने पर उसके विशेषज्ञ डाक्टरों से ईलाज लिया जाना चाहिए। इस प्रकार स्वास्थ्य के मूल नियमों का पालन करने पर अनेक बीमारियों से बचा जा सकता है। फिर भी सावधानी के तौर पर सरकार की ओर से अस्पतालों की सुविधा प्रदान की जानी चाहिए जहां पर आावश्यक होने पर एक सामान्य जन भी अपना ईलाज आसानी से करा सके। प्रत्येक नागरिक को ईलाज संबंधी सुविधा प्रदान करना सरकार की जिम्मेदारी होनी चाहिए।

4. **धार्मिक संकीरणता और कट्टरताः**

पूरी दुनिया इन दिनों उग्रवाद से पीड़ित है जिसका मुख्य कारण है धार्मिक संकीर्णता और कट्टरता । हमारे अपने देश का विभाजन धर्म के नाम पर हुआ और इसी कट्टरता के कारण दो धर्म के लोग एक-दूसरे के कट्टर दुश्मन बन गए। परिणाम यह हुआ कि बड़े पैमाने पर मानवता का कत्ल हुआ। एक धर्म के लोग दूसरे धर्म के लोगों को बिना किसी आधार मारने लगे और देखते ही देखते कुछ दिनों में लाखों जीवन को मौत के घट उतार दिया गया। ऐसे ही दुखद उदाहरणों से इतिहास के काले पन्ने भरे पड़े हैं जहां इन्सान ने केवल धर्म, सम्प्रदाय अथवा क्षेत्र के नाम पर मानवता का खून बहाया है। इस प्रकार की घटनाएं मानवता पर कलंक हैं। यह सब धर्म की संकीर्णता और कट्टरता से पैदा हुआ विष था जो मानवता को निगल गया । अतः मनुष्य को चाहिए वह धर्म के कट्टर दायरे से बाहर निकले और एक मानवतावादी सोच का स्वामी बने। यही इसका एक मात्र उपाय हैं बचपन से ही बच्चों के कोमल हृदय में मानव भ्रातृत्व का अमृत घोला जाए ताकि बड़े होकर वे एक आदर्श नागरिक बन सकें और मानव कल्याण एवं मानव शान्ति में अपना योगदान दे सकें। हर मानव शान्ति एवं भाईचारे का उपासक बने।

5. **प्रदूषणः** एक जमाना था जब भारत में नदियों को पवित्र माना जाता था। गंगा नदी को तो अधिकतर भारतवासी 'माँ' कहकर पुकारते हैं। यमुना नदी का भी इतिहास में ज़िक्र आता हैं परन्तु आजकल नदियां प्रदूषित हो चुकी हैं। हिन्दू धर्म को मानने वाले गंगा जल को पवित्र मानते हैं और अपने धर्मिक संस्कारों में इसका प्रयोग पवित्रता के लिए किया जाता है। लेकिन अब हालात बदल चुके हैं। और भिन्न-भिन्न शहरों से गुज़रने के कारण इसमं शहरों से निकलने वाले अपशिष्ट पदार्थ तथ उद्योगों से निकलने वाले रसायन डाल दिए जाते हैं। जिनमें इस नदी का जल बहुत प्रदूषित हो जाता है। यही हाल देश में बहने वाली अन्य नदियों का भी है। केवल नदियां ही नहीं अब तो समुद्र का जल भी प्रदूषित हो चला है। समुद्री जहाजों से निकलाने वाले अपशिष्ट पदार्थ व तेल रिसने से समुद्र का जल इतना प्रदूषित हो जाता है कि समुद्र में रहने वाले जीवों के लिए खतरा बन जाता है। आजकल हमारी सरकार इन नदियों व समुद्र जल को प्रदूषण से बचाने के लिए अनेक योजनाएं बना रही है जिन पर करोड़ों रूपये खर्च होने का अनुमान है, पर देखना यह है कि इन परियोजनाओं का परिणाम क्या आता है।

मानव जीवन की प्रथम आवश्यकता ऑक्सीजन है लेकिन आज के औद्योगिक युग में उद्योगों से निकलाने वाले धुएं एवं गैसों से तथा अन्य यातायात के साधनों से निकलने वाली गैसों ने वायुमण्डल की शुध्दता पर विपरीत प्रभाव डाला है। अनेक शहरों और स्थानों की वायु उपरोक्त कारणों से इतनी प्रदूषित हो गई है कि सांस लेने के योग्य नहीं रही है। यही कारण है कि बड़े-बड़े शहरों में

लोगों को श्वास संबन्धी बीमारियां हो गई है। उदाहरण के लिए दिल्ली में किए गए सर्वेक्षण में देखने में आया है कि स्कूल में जाने वाले अधिकतर बच्चे फेफड़ों के संक्रमण से ग्रसित हैं। उनको सांस लेने में परेशानी होती है। यह सब वायु प्रदूषण की अधिकता के कारण ही है। अतः इस ओर सरकार व जनता को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

इसी प्रकार ध्वनि प्रदूषण भी आज के समय की एक गम्भीर समस्या है। उद्योगों, यातायात के साधनों, लाऊड स्पीकरों, जैट विमानों, पटाखों आदि से कई बार भयंकर ध्वनि प्रदूषण होता है। यह प्रदूषण जहां विशेषकर कानों को हानि पहुंचाता है वहीं मानसिक अस्वस्थता का कारण भी बनता हैं। इससे मानसिक विकार पैदा होते है, जिनसे तरह-तरह की मानसिक बीमारियां जन्म लेती हैं। अतः हमें चाहिए कि वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण पर नियंत्रण पाया जाए जिससे इनसे होने वाली हानियों से बचा जा सकते। इसके लिए जहां सरकार को कड़े नियम बनाने की आवश्यकता हें अतः जनता को इस बारे में एक अभियान चला कर भिन्न-भिन्न खुशी अथवा दूसरों अवसरों पर पेड़-पौधे लगाने को प्रोत्साहित किया जा सकता है जिससे प्रदूषण नियंत्रण में सहायता मिलेगी।

6. कुछ आपदाएं प्रकृति की देन हैं जैसे आँधी-तूफान, अति वर्षा, बाढ़ ओला-वृष्टि, बादल फटना, ग्लेशियरस का फिसलना, भूस्खलन, सुनामी लहरें, भूकम्प आदि। इन सब प्राकृतिक आपदाओं से अनेक बार जान-माल की बहुत बड़ी हानि होती है। ये ऐसी और आपदाएं हैं जिनका पूर्व अनुमान लगाना कठिन होता है।

अतः इनसे इस कारण से हानि भी अधिक होती है, विशेष कर भूकम्प मानव जाति के लिए बहुत विनाशकारी साबित होता है। अधिक तीव्रता वाला भूकम्प मिनटों में शहरों और गाँवों को नष्ट कर देता है जिससे जान माल को बहुत हानि होती । अभी हाल में नेपाल में आए भूकम्प ने हज़ारों जीवन को अपनी लपेट में ले लिया और हज़ारों लोग घायल हो गए। लाखों परिवारों को इस भूकम्प ने प्रभावित किया हैं इनमें से कुछ प्राकृतिक आपदाओं से तो कुछ सीमा तक बचाव किया जा सकता है जैसे बाढ़ से बचने के लिए मजबूत तटबन्धों का निर्माण, भूकम्प से बचने के लिए भूकम्प-रोधी मकानों का निर्माण लेकिन कुछ प्रकृतिक आपदाओं से बचना मानव के लिए मुश्किल हो जाता है जैसे अति वर्षा से पर्वतों का खिसकना, ओला-वृष्टि जिससे हमारे फसलें बर्बाद हो जाती हैं। आँधी-तूफान का आनस, इससे भी फलदार पेड़ों और सालों को बहुत हानि होती है। इन आपदाओं पर नियन्त्रण पाना मुश्किल होता है।

आपदा कितनी भी बड़ी क्यों न हो, हिम्मत के साथ उसक मुकाबला किया जा सकता है, परन्तु उसके आगे घुटने टेक देना या आत्महत्या कर लेना कमजोरी के लक्षण हैं। ये मानव समस्या का हल नहीं। एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ाई में अनेक जन सफल हुए लेकिन कुछ एक विफल भी हुए और जान तक गंवा बैठे। फिर भी मानव हार नहीं मानता और वह कई बार प्रकृति को भी चुनौती देने को तैयार हो जाता है। यही भावना मानव को विकास की ओर अग्रसर करती है। विपरीत परिस्थितियों में भी मानव ने हार नहीं मानी। वह जटिल परिस्थितियों से जूझने में अनेक बार अपने जीवन को भी दांव पर लगा देता है। उसे पता होता है कि कुछ कार्यो में खतरा है, फिर भी उसका साहस उसको खतरों से लड़ने की हिम्मत देता है। ऐसे मानव ही विकास पथ के द्वारा खोलते हैं। यद्यपि मानव जीवन में खतरे तो हैं ही, फिर भी मानव को चाहिए कि वह इन खतरों को जितना कम कर सके उतना कम करने का प्रयास करे। खतरों को बिल्कुल खत्म करना सम्भव नहीं है। अतः खतरों से टकराने की हिम्मत पैदा करना भी उतना ही आवश्यक है। इसके लिए उसे खतरों का खिलाड़ी बनना होगा।

तर्क और पाखण्ड आमने-सामने

बच्चों में मानसिक विकार पैदा करने का धंधा

- आजायब जलालाना

गत 16 जून को ओम होटल, चौटाला रोड, मण्डी डबवाली (सिरसा) में 'मिस्टर ब्रेन मास्टर' नाम से संचालित एक संस्था, जिसका संचालन गूगल गर्ल (जिया फुटेला) के पिता विनोद कुमार फुटेला व विक्रम अरोड़ा कर रहे थे और पिछले रविवार से वे एक कार्यक्रम चला रहे थे, जिसमें वे योग विधि द्वारा एकाग्रता से तीसरे नेत्र को विकसित करने का दावा कर रहे थे, जिससे बच्चा आंखों पर पट्टी बांधकर, नाक से सूंघकर पढ़ सकने की क्षमता प्राप्त कर लेने का दावा करते थे। इसके ऐवज में 5 से 15 वर्ष तक की आयु के बच्चों से प्रति बच्चा 12000 रुपये फीस लेते थे। डबवाली से सुनील मिढा व सीमा मिढा भी उसका सहयोग कर रहे थे। तर्कशील सोसायटी कालांवाली को डबवाली से अध्यापक संघ के जागरूक सदस्यों द्वारा इस बाबत सूचित किया गया और हमने डबवाली इकाई से तालमेल बनाकर वहां जाने का निर्णय लिया। मास्टर शमशेर चोरमार और मैं कालांवाली इकाई की ओर से सोसायटी के अन्य सदस्यों सहित वहां पहुंच गए। साथ ही पत्रकारों को सूचना भी दे दी गई थी। होटल के बड़े हाल में इस प्रदर्शन में छोटे बच्चे आंखों पर पट्टी बांधकर वे रंग, तस्वीरें, अक्षर पढ़ रहे थे। हमने वहां का पूरा अवलोकन करके एक रंग उठाकर उनमें से एक की आंखों के सामने किया तो वह नहीं बता सका। हमारे द्वारा दबाव बनाने पर वह संचालक कहने लगा कि ये बच्चे अंडर ट्रेनिंग हैं, हमारे सिरसा वाले बड़े बच्चे बता देंगे। हमने पूछा, 'आप ही इन्हें ट्रेंड करते हो?' उसने कहा, हां। मैंने अपनी बेटी गूगल गर्ल जिया फुटेला को ट्रेंड किया है। फिर क्या था; हमने कहा, अब आप जब इसमें मास्टर हो तो ये काम दोबारा स्वयं करके दिखाओं।' उसने आनाकानी की, जिस पर हमने तर्कशील सोसायटी की तरफ से चुनौती दी और उसी से मैंने अपनी आंखों पर पट्टी बंधवाकर वही ट्रिक करके दिखा दिया, जैसा वे करके दिखा रहे थे। अब लोगों का हजूम जो (100 से 150) लोग होंगे) हमारे पक्ष में होने लगा। हमने उसे आम लोगों को धोखा देने की बात कीऔर तीखे सवाल किए। जिससे वह वहां से खिसक गया। तदोपरांत हमने वहां ट्रेनिंग ले रहे बच्चों से बात की तो हैरानी जनक बातें बाहर आईं। उन्होंने बताया कि विनोद कुमार फुटेला उन्हें बड़े कमरे में फर्श पर बिछाई दरियों पर लेटा लेता था और लाईटें बंद कर देता था। एक लेजर किरण (सीधी रौशनी) पर नज़र टिकाने के लिए कहता । हमें बोलकर कहता कि अब आप मेरे वश में आ रहे हो, अब यौगिक क्रिया द्वारा आपका शरीर एकाग्र हो जायेगा, और उससे तीसरा नेत्र विकसित हो जायेगा। फिर कहता अब आपकी आंखों पर काली पट्टी बांधी जाएगी जिसमें सामने से कुछ नहीं दिखेगा परन्तु आपकी नाक के साथ-साथ दिखने लग जायेगा। ये आपका तीसरा नेत्र होगा। उसके बाद हमें कहता कि यह बात आपने अपने माता-पिता या अन्य किसी को नहीं बताना। अगर किसी को बताया तो आपको बहुत नुकसान उठाना पड़ेगा। इस प्रकार ऐसे बच्चों सम्मोहित कर उन्हें मानसिक तौर पर विकृत किया जाता था। और जब वे वस्तुओं को आंखों पर पट्टी बांध कर देखते तो अपनी नाक के साथ-साथ नीचे की तरफ देख सकते थे।

उसने स्वयं माना कि पंचकुला में वह एक बच्चे से 40000 रुपये तक फीस लेता था। डबवाली में पता करने पर 9 अभिभावक हमारे पास पैसे वापिस लेने के लिए साथ हो गये। हमने उन्हें विश्वास दिलाया और पुलिस थाना पहुंच की। लोगों का आक्रोश देखकर पुलिस कर्मचारी उन्हें थाना ले गए। वहां पर अभिभावकों द्वारा लिखित शिकायत थाना अध्यक्ष को दी गई। बहस के बाद गणमान्य लोगों के बीच सभी 15 लोगों के 180000 रुपये वापिस करने और विनोद फुटेला द्वारा लिखित माफ़ी मांगने पर सहमति बनी।

★★

आईना

मुग़ले आज़म

–बलजीत भारती

कुछ फिल्में अच्छी होती हैं और कुछ बहुत अच्छी। लेकिन कुछ फिल्में महान् होती हैं। इन महान फिल्मों में सबसे ऊपर यदि किसी फिल्म का नाम लिया जा सकता है तो वह है–मुग़ले आज़म। यह फिल्म इसके निर्देशक के. आसिफ का ड्रीम प्रोजेक्ट थी। यह फिल्म 1951 में बनना शुरू हुई और 10 वर्ष बाद 5 अगस्त,1960 के मंबई के 'मराठा मंदिर' में इसका प्रीमियर हुआ। पर अपने दौर की अब तक की सबसे मंहगी फिल्म थी और एक साथ 150 सिनेमाघरों में प्रदर्शित की गई थी जो कि एक रिकार्ड था।

वैसे तो यह एक ब्लैक एंड व्हाइट फिल्म थी लेकिन बीच की एक रील कलर में बनाई गई थी । बाद में सन् 2004 में इसे पूर्णतः रंगीन बनाकर फिर से रिलीज किया गया। इस फिल्म का इतना जुनून था कि लोग टिकट लेने के लिए कई कई दिन पहले से ही मीलों लम्बी लाइनों में लगे थे। उनका खाना–पीना, सोना सब कुछ वहीं पर होता था। आप सोचकर हैरान होंगे कि ऐसा इस फिल्म में क्या है ? मैं फिल्म की कहानी पर नहीं जाऊंगा, बल्कि वो चंद बातें आपसे साझा करूंगा जो इस फिल्म को महान बनाती हैं।

एक दृश्य में बादशाह अकबर औलाद की मन्नत मांगने राजस्थान में अजमेर स्थित सलीम चिश्ती की दरगाह पर जाते हैं। इस दृश्य में पृथ्वीराज कपूर को नंगे पैर रेत पर चलना है। जब पृथ्वीराज कपूर इस पर कुछ असहज हुए तो के.आसिफ भी नंगे पैर उनके पीछे–पीछे चले। गर्म रेत पर चलने से उनके पैरों में छाले पड़ गए, लेकिन इस दृश्य में बादशाह अकबर के चेहरे पर औलाद न होने की तड़प साफ–साफ दिखाई देती है, जिसे के. आसिफ दिखाना चाहते थे।

एक अन्य दृश्य में शहजादा सलीम के घर आने पर मोतियों की बरसात की जाती है। इसके लिए असली मोतियों का इंतजाम किया गया था। शीशमहल के दृश्य में छत पर सैंकड़ों दर्पण लगाए थे जिन्हें घिसने में महीनों लग गए थे। इस फिल्म का सबसे शानदार दृश्य इसी शीशमहल में फिल्माया गया है। मधुबाला गा रही है–'जब प्यार किया तो डरना क्या!' शीशमहल के हर शीशे में उसका अक्स दिखाई दे रहा है और साथ में दिखाई दे रही है बादशाह के चेहरे पर छाई बेबसी– कितना अद्‌भुत दृश्य है।

एक और वाक्या जो इस फिल्म को महान बनाता है, का ज़िक्र न करना बेमानी होगा। अकबर के दरबार में नवरत्नों में एक संगीत सम्राट तानसेन भी थे। पृष्ठभूमि में तानसेन द्वारा दो गीत गाए जाते हैं। अब समस्या यह आई कि इस महान गायक पर फिल्माये गए गीतों को आवाज़ देने वाला भी महान गायक होना चाहिए। इसके लिए के.आसिफ बड़े गुलाम अली खां साहब के पास गए और प्रार्थना की कि वे इन गीतों के लिए अपनी आवाज दें। खां साहब ने कहा कि वो तो फिल्मों के लिए गाते नहीं हैं। बार–बार जिद्‌द करने पर गुलाम अली खां साहब ने मज़ाक में कह दिया कि मैं एक गाने के 25000 रूपये लूंगा। के. आसिफ ने तुरन्त हां कर दी और 10000 रूपये पेशगी भी दे दिए। आपको बता दूं कि उस वक्त मौहम्मद रफी व लता मंगेशकर जैसे गायकों को भी प्रति गाने के 300–400 रूपये ही मिलते थे। सचमुच के. आसिफ ने पैसा पानी की तरह बहाया। जब ये गीत फिल्म में बजते हैं तो लगता है कि तानसेन खुद इन्हें गा रहे हों।

इस फिल्म के हर पहलू पर ज़रूरत से ज्यादा मेहनत की गई है। गीत–संगीत, अभिनय, निर्देशन, कहानी, डायलॉग, सैट, पहनावा सब कुछ बेमिसाल हैं। एक ही फिल्म में प्यार, त्याग, पिता का स्नेह, मां की ममता, मर्यादा, बलिदान, सौंदर्य, कलात्मकता आदि के बखूबी दर्शन होते हैं। इसके सैट देखते ही बनते हैं। उर्दू में बोले गए डायलॉग मन में मिठास घोल जाते हैं। मधुबाला के अनुपम सौंदर्य का नशा दिमाग पर छा जाता है। पृथ्वीराज कपूर को बादशाह अकबर के रोल में देखकर अहसास होता है कि अकबर बादशाह बिल्कुल ऐसे ही होंगे।

निःसंदेह यह एक रॉयल फिल्म है, ऐतिहासिक करिश्मा है, फिल्मी इतिहास का सबसे सुनहरी पन्ना। एक अजीमोशान शाहकार।

ये किस मुकाम पर लाया मेरा जुनूं मुझको
कि जहां से अर्श भी नीचा दिखाई देता है।

गीत

रामेश्वर दास 'गुप्त'

दिन वो बहुत ही महान होगा
आदमी जब बस इन्सान होगा

बंटवारा न होगा जब जातों में अपना
चढ़े ना नाम धर्म के खातों में अपना
दीन–धर्म की ऐसी मेहरबानी न हो,
सौदा हो जाए बातों–बातों में अपना,
तरक्की का फिर यहीं सोपान होगा

राम और खुदा में ना होगी लडाई
इंसां धर्म होगा, हों सब भाई–भाई,
आग जलाए न जब सपने हमारे
धर्म में जगह न हो अपनी –पराई
तभी तो अपना भी उत्थान होगा

धर्म के कारण न जब दुकानें चलेंगी
चालाकों की साजिश न फूलें–फलेंगी,
राम और रहीम गले मिलते रहे तो
घरों में फौलादी ना शमशीरें ढलेंगी,
जीना आदमी का तभी आसान होगा

क्या खेल–खेलें ये मुल्ला–पुजारी
आ जाएगा जब समझ में हमारी
समझने लगेंगे 'रामेश्वर' की बातें
तब जनता रहेगी ना इतनी बेचारी
तू लुट कर ना इतना परेशान होगा।

लेखकों/पाठकों के लिए:–

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. अस्वीकृत रचना की वापसी हेतू पांच रूपये का डाक टिकट लगाकर लिफाफा संलग्न करें।
3. रचना बायीं तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ–साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए ।
4. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
5. पत्रिका में छपी रचनाओं पर प्रतिक्रिया साधारण पोस्ट कार्ड से भी भेजी जा सकती है।
6. लेख, कहानी, कविता, अपनी राय e-mail : tarksheeleditor @gmail.com आदि पर भेजी जा सकती है। ई–मेल भेजते समयँ ळ.4 हिन्दी टाईप का ही उपयोग करें।
7. पत्र व्यवहार करते समय लिफाफे पर पूरे पैसों के टिकट लगाकर ही प्रेषित करें। बैरंग पत्र हो जाने की स्थिति में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
8. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।
9. पत्रिका में छपी किसी भी रचना पर लेखक को मानदेय का प्रावधान नहीं है क्योंकि यह पत्रिका पूर्णतः अव्यवसायिक/अवैतानिक संपादक एवं संपादक मंडल द्वारा अन्धविश्वासों, पाखण्डों, रूढ़ियों के विरूद्ध जागृति लाने हेतु जनहित में प्रकाशित की जाती है।

विशेष अपील

तर्कशील पथ के सभी सदस्यों से अपील है कि वे तर्कशील पत्रिका के कम से कम दो–दो सदस्य–ग्राहक और जोड़ें ताकि समाज में वैज्ञानिक जागरूकता को बढ़ाया जा सके

भूल–सुधार

ईकाई ढाणी डुल्लण दुल्लत, जिला फतेहाबाद द्वारा तर्कशील सोसायटी को भेजी गई आर्थिक सहयोग की राशि 3000/– रुपये है जो कि तर्कशील पथ के मई, 2015 अंक में गलती से 300/– छप गई थी।

Reg. No. HARHIN/2014/60580 वर्ष 2, अंक 4 जुलाई 2015

बढ़ते कदम



पटना (बिहार) में अर्जक संघ के अधिवेशन में फीरा और अर्जक संघ के पदाधिकारीगण



अधिवेशन में उपस्थित अर्जक संघ के प्रतिनीधी

पहल कदमी की राह



पंजाबी फिलम अंधेरे से उजाले की ओर को रिलीज करते प्रसिद्ध मनोरोग विशेषज्ञ डा. बलवंत सिंह सिद्धू और तर्कशील नेतृत्व

प्रतिभा का सम्मान



दस प्रश्न (तर्कशील पंजाबी पत्रिका कालम) की विजेता मनवीत कौर को सम्मानित करते हुए तर्कशील नेतृत्व एवं स्कूल स्टाफ

If undelivered please return to :

Tarksheel
Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera Bye Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

आर. पी. गांधी प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 50, लक्ष्मी नगर, जिला यमुना नगर - 135001 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटर्ज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर - 135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।